नमस्ते जी

ऋषि दयानंद द्वारा प्रचारित वैदिक विचारधारा ने सैकड़ो ह्रदय को क्रन्तिकारी विचारो से भर दिया | जो वेद उस काल में विचारो से भी भुला दिए गए थे | ऋषि दयानंद ने उन ह्रदयों को वेदों के विचारो से ओतप्रोत कर दिया और देश में वेद गंगा बहने लगी | ऋषि के अपने अल्प कार्य काल में समाज की आध्यात्मिक, सामाजिक, और व्यक्तिगत विचार धारा को बदल के रख दिया | ऋषि के बाद भी कही वर्षो तक यह परिपाटी चली पर यह वैचारिक परिवर्तन पुनः उसी विकृति की और लौट रहा है | और इसी विकृति को रोकने के लिए वैदिक विद्वान प्रो० राजेंद्र जी जिज्ञासु के सानिध्य में "पंडित लेखराम वैदिक मिशन" संस्था का जन्म हुआ है | इस संस्था का मुख्य उद्देश्य वेदों को समाज रूपी शरीर के रक्त धमनियों में रक्त के समान स्थापित करना है | यह कार्य ऋषि के जीवन का मुख्य उद्देश्य था और यही इस संस्था का भी मुख्य उद्देश्य है | संस्था के अन्य उद्देश्यों में सम्मिलत है साहित्य का सृजन करना | जो दुर्लभ आर्य साहित्य नष्ट होने की और अग्रसर है उस साहित्य को नष्ट होने से बचाना और उस साहित्य को क्रम बद्ध तरीके से हमारे भाई और बहनों के समक्ष प्रस्तुत करना जिससे उनकी स्वाध्याय में रूचि बढ़े और वे तुलनात्मक अध्यन कर सकें जिससे उनकी स्वधर्म में रूचि बढ़े और अन्य मत मतान्तरो की जानकारी उन्हें प्राप्त हो और वे विधर्मियो द्वारा लगाये जा रहे विभिन्न आक्षेपों का उत्तर दे सकें विधर्मियो से स्वयं भी बचें और अन्यो की भी सहयता करें | संस्था का उद्देश्य है समाज के समक्ष हमारे गौरव शाली इतिहास को प्रस्तुत करना जिससे हमारा रक्त जो ठंडा हो गया है वह पुनः गर्म हो सके और हम हमारे इतिहास पुरुषो का मान सम्मान करें और उनके बताये गये नीतिगत मार्ग पर चलें | संस्था का अन्य उद्देश्य गौ पालन और गौ सेवा को बढ़ावा देना जिससे पशुओ के प्रति प्रेम, दया का भाव बढ़े और इन पशुओ की हत्या बंद हो, समाज में हो रहे परमात्मा के नाम पर पाखण्ड, अन्धविश्वास, अत्याचार को जड़ से नष्ट करना और परमात्मा के शुद्ध वैदिक स्वरुप को समाज के समक्ष रखना, हमारे युवा शक्ति को अनेक भोग, विबिन्न व्यसनों, छल, कपट इत्यादि से बचाना |

इन कार्यो को हम अकेले पूरा करने का सामर्थ्य नहीं रखते पर, यह सारे कार्य है तो बड़े विशाल और व्यापक पर अगर संस्था को आप का साथ मिला तो बड़ी सरलता से पूर्ण किये जा सकते है | हमारा समाजिक ढाचा ऐसा है की हम प्रत्येक कार्य की लिए एक दुसरे पर निर्भर है | आशा करते है की इस कार्य में आप हमारी तन, मन से साहयता करेंगे | संस्था द्वारा चलाई जा रही वेबसाइट www.aryamantavya.in और www.vedickranti.in पर आप संस्था द्वारा स्थापित संकल्पों सम्बन्धी लेख पड़ सकते है और भिन्न-भिन्न वैदिक साहित्य को निशुल्क डाउनलोड कर सकते है | कृपया स्वयं भी जाये और अन्यो को भी सूचित करे यही आप की हवी होंगी इस यज्ञ में जो आप अवश्य करेंगे यही परमात्मा से प्रार्थना करते है |

जिन सज्जनों के पास दुर्लभ आर्य साहित्य है एवं वे उसे संरक्षित करने में संस्था की सहायता करना चाहते हैं वो कृपया निम्न पते पर सूचित करें

ptlekhram@gmail.com

धन्यवाद् !

पंडित लेखराम वैदिक मिशन

आर्य मंतव्य टीम

लेखक—
श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

ईश्वर विचार॥

—(-०*०-)—

प्रथम भाग।

अर्थात् ईश्वर के होने का सबूत॥

सम्पादित

श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

और

पंडित शंकरदत्त शर्मा ने अपने शर्मा मेशीनप्रिंटिंग प्रेस
मुरादाबाद में छापकर प्रकाशित किया।

सन् १९१३

तृतीयबार २०००] [दाम)।

॥ ईश्वर विचार ॥

—(*o*)—o*o—(*o*)—

उस सर्व शक्तिमान् को अत्यन्त धन्यवाद है जिसकी कृपा कटाक्ष से हम लोगों को ऐसा समय प्राप्त हुआ कि हम आन्तरीय विचारों को स्वतन्त्रता से प्रकट कर सके हैं जिसने कृपा करके हमको सत्य असत्य के विचारने की बुद्धि दी आज हमारा विचार सम्पूर्ण संसार के अभीष्ट परमात्मा का विचार करना है हम इसको तीन भागों में विभक्त करते हैं प्रथम ईश्वर के होने में प्रमाण, दूसरे में ईश्वर का स्वरूप, तीसरे में ईश्वरोपासना क्यों करनी चाहिये इसका व्याख्यान किया जायगा ॥

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर विचार

प्रथम भाग

विचार शील महात्माओ ! प्रमाणादि से सत्य की परीक्षा करने वाले आप कृपा करके मेरे इस लेख पर दृष्टि देकर विचार करें यद्यपि मेरा विचार आप लोगोंके सामने बुद्धिमत्ताका न होगा तथापि आप अपनी सद्वृत्ति के अनुसार मेरे दोषों को मिटायेंगे महाशयो ! जब हम संसार में किसी पदार्थ को देखते हैं तो हमें उस में दो प्रकार के पदार्थ प्रतीत होते हैं एक परिणामी दूसरे अपरिणामी जितने साकार पदार्थ हैं वे सब परिणामी और जितने निराकार पदार्थ हैं वे अपरिणामी हैं। परन्तु जब हम इन साकार पदार्थों में प्रथम मनुष्य के शरीर को देखते हैं तो यह शरीर माता पिता के संयोग से उत्पन्न होता है बढ़ता है घटता है अन्त को नष्ट हो जाता है इससे हमें क्या अनुमान होता है जो पैदा हुआ है वह नष्ट होगा जिस में परिणाम है वह पैदा हुआ है जब परिणामी पदार्थों को उत्पत्ति वाला सिद्ध कर लेते हैं तो हम व्यष्टि ---र्थ अर्थात एक व्यक्ति को छोड़ कर समष्टि जगत् को

.ते हैं तो यह हो .णाम प्रतीत होता है

अवयवी के अवयव परिणाम को प्राप्त होते हैं वह अवयवी भी परिणामी होता है क्योंकि सम्पूर्ण अवयवों का नाम अवयवी है जब हम इस प्रकार सूक्ष्म विचार करते हैं तो हमें जगत् परिणामी प्रतीत होने लगता है हम जगत् के परिणामी होने से उसकी उत्पत्तिका अनुमान कर लेते हैं यद्यपि मध्य अवस्था में उसकी उत्पत्ति का बोध अनुमान के बिना नहीं होता तथापि शब्द प्रमाण से जगत् उत्पन्न हुआ और जगत्,संसार,सृष्टि,इसके पर्याय वाचक जितने शब्द दिये जाते हैं सब के अर्थ उत्पत्ति वाले के हैं जब हमने जगत् को उत्पत्ति वाला अनुभव किया तो हमारा विचार वह होता है कि यह उत्पत्ति स्वाभाविक है या नैमित्तिक दूसरे हम जिस पदार्थ की उत्पत्ति जिस पदार्थ से देखते हैं उसका लय भी उसी पदार्थ में होता है इस से कार्यरूप सब पदार्थों में अनित्यता और कारणरुप पदार्थों में नित्यता का बोध होता है जब हम पंच भूतों में अर्थात् पृथ्वी, जल अग्नि वायु और आकाश में सब पदार्थों का लय देखते हैं तो उन्ही पंच पदार्थों से इस जगत् की उत्पत्ति का विचार करते हैं यद्यपि कार्य्य अवस्था इन पदार्थों की अनित्य है परन्तु कारणअवस्था यह नित्य होते हैं जब हम जगत् के उपादान कारण

निमित्त भी है अथवा जगत् पंचभूतों ही से उत्पन्न हुआ वा इन के विना कोई और भी पदार्थ है जब हम पृथ्वी को विचारते हैं तो जड़ प्रतीत होती है जल भी ज्ञानशून्य है अग्नि भी ज्ञान नहीं रखती वायु में भी ज्ञान का अभाव ही प्रतीत होता है आकाश ज्ञान से हीन है इस प्रकार के विचार से हम सम्पूर्ण भूतों को ज्ञान से रहित पाते हैं परन्तु हम संसार में जो सोने के बनें भूषणों में सोने के गुण चांदी में चांदी के गुण पाते हैं इस से हमको बोध होता है कि कारण के गुण अनुकूल कार्य्य में गुण रहते हैं जब भूतों में ज्ञान गुण नहीं तो उसके कार्य्य रूप जगत में भी ज्ञान नहीं हो सकता और जगत् में मनुष्यों को ज्ञान से युक्त देखते हैं तो शीघ्र विचार उत्पन्न होता है कि यह ज्ञान गुण किसका है बहुत से लोग यह कहते हैं कि पृथक् भूतों में तो चैतन्यता नहीं किन्तु संयोग से उत्पन्न होती है परन्तु जो गुण एक एक में न रहे वह संयोग से उत्पन्न नहीं होता जैसे मैदे में मधुरता नहीं जल में मधुरता नहीं तो मैदे और जल के संयोग से मधुरता नहीं उत्पन्न होती चीनी में मधुरता है जल में मिलाने से उत्पन्न हो जाती हैं दूसरे रेल के अंजन में पृथ्वी है जल है अग्नि है वायु है आकाश है परन्तु ज्ञानशक्ति नहीं है मृतक शरीर में पांचों-

ज्ञानशक्तिका आधार कोई दूसरी वस्तु है जब हम इस प्रकार सृष्टि में जड़ चेतन्य को दो स्वरूप करके विचार लेते हैं तो हमको सृष्टि में इनका संयोग और सृष्टि स्वभाव से संयोग है या निमित्त से यह विचार उत्पन्न होता है जब हम बाजार जाते है तो हमको कभी कहीं ईंटें पड़ा पाती ह तो हम जानते हैं कि यहस्वाभाविक गिरी होंगी परन्तु यदि एक एक स्थान में दश२ गिनकर नीचे रक्खी हों तो विचार होगा कि गिन के किसी ने रक्खी हैं इससे यह सिद्ध होता हैं कि जहां पर नियम है वह नैमित्तिक और जो बे नियम है वह स्वाभाविक है जब सृष्टि में नियम को देखते हैं तो इसके हर एक पदार्थ में नियम प्रतीत होता हैं मनुष्य स्त्री के संयोग से लड़का उत्पन्न होता घोड़े घोड़ा के संयोग से घोड़ा, घोड़ी और गधे के संयोग से खच्चर इसीप्रकार सब पदार्थ नियमानुसार प्रतीत होते हैं गरमी में दश घंटे की रात्रि होती सर्दी में १४ घंटे की जिधर देखो नियम बंधरहा है फिर इसे किस यक्ति से स्वाभाविक मानें दूसरे जो स्वाभाविक गुण हैं वे सर्वदा एक रस रहते हैं वे विना किसी निमित्त के बदलते नहीं जैसे जलका स्वभाव शीतस्पर्श वाला है विना अग्नि संयोग के उष्णता न होगी सो वह उष्णता अग्नि की है न कि जल की यदि भूतों का स्वभाव

एक पदार्थ में दो विपरीत गुण तो रह नहीं सकते यदि भूतों में किसी का गुण उत्पत्ति ...में किसी का विनाश तोभी व्यवस्था ठीक न होगी क्योंकि संयोग के समय वियोग बाधक होगा ...योग के समय संयोग जब इस प्रकार से विचार करते हैं तो भूतों के स्वभाव से जगत् की उत्पत्ति नहीं हो सकती इसका निमित्त कारण ज्ञानशक्ति सम्पन्न सर्व शक्तिमान् अवश्य मानना पड़ेगा जब इस प्रकार ईश्वर को मानेंगे तो यह शंका उत्पन्न होगी "लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिर्नतु प्रतिज्ञामात्रेण,, अर्थात् लक्षण और प्रमाणों से वस्तु की सिद्धि होती है ईश्वर में प्रमाण का अभाव है क्योंकि प्रत्यक्षज्ञान तो होता नहीं प्रत्यक्ष के अभाव ...व्याप्ति न होगी व्याप्ति के अभाव में अनुमान भी ...हो सकता निराकार और अनुपम होने ...उपमान भी न होगा बाकी रहा शब्द प्रथम तो आप्तोपदेश से शब्द को प्रमाण माना जाता है आप्त उस ...कहते हैं जो धर्म से धर्मी का लक्ष करके कहे जिसका प्रत्यक्ष नहीं उसमें शब्द भी होगा ॥

उ०-यह है कि यदि प्रमाण के अभाव में ईश्वर की सिद्धि नहीं तो प्रमाण की परीक्षा के समय प्रमाण में भी प्रमाण होना चाहिये यदि कहो प्रमाण में भी प्रमाण है

दोष में पड़जाओगे यदि कहो प्रमाण म . ५ ९।
तो उसकी असिद्धि है तो आपका प्रमाण जो स्वयम् सा-
ध्य कोटि में है वह दूसरों की सिद्धि में कैसे हेतु होगा
यदि मूलेमूलाभावात् अमूलं मूलं इस प्रकार प्रमाण विना
प्रमाण के मान लोगे तो तुम्हारे सिद्धान्त की हानिहोगी
यदि कोई शंका करे कि ईश्वर ने जगत उत्पन्न किया
है तो ईश्वर को किसने उत्पन्न किया है तो उसका उत्तर
यह है कि परिणामी पदार्थ कार्य्य होते हैं उनको कारण
की अपेक्षा होती है उसका ईश्वर परिणामी होता उस
का भी कारण हो परन्तु ईश्वर नित्य है अपरिणामी है
उसका कर्त्ता नहीं हो सकता यदि कोई कहे ईश्वर कहां है
तो उत्तर यही ठीक है कहां पद एकदेशी के लिये होता
है विभु के लिये नहीं वहुत लोग उसको देखना चाहते हैं
परन्तु ज्ञान चक्षु के अभाव से देख नहीं सकते जैसे ति
लों में तेल है परन्तु पीड़ने के विना दृष्टि नहीं पड़ता दधि
में घी है परन्तु मथने के विना नहीं मालूम होता इसी
प्रकार जगत् में आत्मा व्यापक है परन्तु योगाभ्यास के
विना नहीं जान पड़ता जैसे दीपशलाका में आग है परन्तु
घिसने के विना नहीं मालूम देती जैसे गुड़ में मिठाई
है परन्तु खाने के विना प्रतीत नहीं होता इसी प्रकार
जगत में परमात्मा है परन्तु मिथ्या ज्ञान से छिप रहा

रूप को देखना चाहे कौन दिखला सकता है जबतक चक्षु कासु-धार न हो इसी प्रकार जबतक ज्ञान चक्षु न हो क्योंकर परमात्मा को देख सकते हैं यदि कोई बहरा राग सुनना चाहे कौन सुना सकता है जब तक उसके कान ठीक न किये जायें यदि कोई गूंगा मिठाई का स्वाद लेना चाहे कौन दिला सकता है जब तक उसकी जीभ दुरुस्त न हो यदि जिस की नासिका में दोष से गंध ग्रहण करने की शक्ति न हो कौन बिना नासिका के फूल सूंघा सकता है इसी कारण हे पाठको ! जब तक हमारे पास वह वस्तु नहीं जिससे परमात्मा जाना जाता है तो हम को कोई भी उसका दर्शन नहीं करा सकता जब हमारी ग्रहण की शक्ति ठीक होगी तो हम देख सकेंगे। हे पाठको ! जिस धारणावती उग्रबुद्धि से परमात्मा देखा जाता है जब तक वह बुद्धि उत्पन्न न हो तब तक परमात्मा को कोई भी जान नहीं सकता वह बुद्धि वेदादि शास्त्रों के पढने से शुद्ध होती है जैसे अंजन से चक्षु ठीक होकर देखने का काम देती है अब बहुत से महात्मा यह कहेंगे कि तुमने मन से मान लिया कि ईश्वर है क्योंकि दो वस्तुओं के संयोग से जीव उत्पन्न होजाता है जैसे गोबर और दही के मिलने से बिच्छू पैदा होते हैं फिर ईश्वर

उनको ज्ञात होगा कि प्रथम तो दही भी ज्ञानवान् क
मित्त से उत्पन्न हुआ है कि पृथिवी से दही नहीं उत्पन्न
होता दूसरे गौ के गोवर में छोटे जीव रहते हैं वह
से पल जाते हैं जैसे भूमि में घास की जड़ रहती है
वृष्टि से बढ जाती है परन्तु ऊसर में घास नहीं हो
इससे सिद्ध है जो वस्तु होती है वही उत्पन्न होती है
हिले कारण रूप में रहती है फिर कार्य में बदल जा
है जैसे घट के आकार का ज्ञान कुम्हार को है घट बन
की शक्ति मृत्तिका में हैं तब घट उत्पन्न होता है यदि
लाल न हो या मृतिका न हो तो घट नहीं बन
है पाठकों ! विना उपादान और निमित्त कारण के व
वस्तु उत्पन्न नहीं होती इससे आप जगत् का कर्त्ता
श्वर को माने विना विचार को बढा नहीं सकते परमात
आपको धारणावती वुद्धि दे जिससे आप तत्वज्ञान
प्राप्त होकर संसार के दुःख जाल से छूट जायें ॥

ओ३म् शांतिः ३

ार्यसमाज के सुप्रसिद्ध वक्ता तथा सुलेखक श्रीयुत मा-
र आत्माराम जी (एज्यूकेशनल इन्सपेक्टर बड़ौदा स्टेट)
ो अतिप्रसिद्ध रचना है। मास्टर जी ने इस पुस्तक की
चना में अपनी बहुज्ञता और कल्पनाशक्ति अपूर्व चमत्कार
ा दिखलाई है। विवाह सम्बन्ध में चतुरस्र मीमांसा की
ई है। पुस्तक आठ अध्यायों में विभक्त है विवाह का
ल्य तथा गोत्रभेद भिन्न २ देशों में विवाह की रीति
और उद्देश्य क्या हैं, वैदिक विवाह सर्व श्रेष्ठ क्यों है?
र्भाधानके लिये महर्षियों ने अमुक २ तिथियों को प्रश-
त या निंदित क्यों बतलया है। इत्यादि॥ विवाह आ-
र्श अपने विषय की एकही पुस्तक है। प्रत्येक गृहस्थ
ौर नवयुवक और युवतियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़-
ा चाहिये। मूल्य केवल ३२८ पृष्ठ को रायल अठपेजी
पुस्तक का जो कि उमदा टाइप और अच्छे कागज़ पर
छापी है १) और सजिल्द १=)

मिलने का पता – शंकरदत्त शर्म्मा
वैदिक पुस्तकालय, मुरादाबाद।

विशेष सूचना

श्री स्वामी दर्शनानंन्द जी महाराज के ट्रेक्ट जिनका कि मिलना कठिन था हमने वह ट्रेक्ट बड़े परिश्रम से जहां तहां से इकट्ठे करके छपवाये हैं। जिन महाशयों को आवश्यकता हो वे निम्न लिखित पते से मंगावें। सौ १०० के खरादार को १।) रुपया सैकड़ा और ह के खरीदार को १) रुपया सैकड़ा मिलेंगे।

मैनेजर वैदिक पुस्तकालय,
मुरादाबाद

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर विचार

॥ द्वितीय भाग ॥

ट्रैक्ट नम्बर ६

जिसमें ईश्वर के साकार निराकार
का विचार किया गया है।

जिसको पं० कृपाराम शर्म्मा सम्पादक
वैदिक धर्म मुरादाबाद ने रचा

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती ने
शुद्ध की

मैशीन प्रेस सेवका बाजार आगरा में
छपाकर प्रकाशित किया

तृतीय वार ५०००] सन १९१३ (मूल्य)।

ईश्वर विचार ।

प्रिय पाठक वृन्द! ईश्वर विचार के प्रथम भाग में ईश्वर का अस्तित्व तर्क से सिद्ध किया गया है उस पुस्तक में वेद और शास्त्रों के प्रमाण इस हेतु से नहीं दिये कि उसका सम्बंध नास्तिकों से है और नास्तिक किसी पुस्तक को प्रमाणिक नहीं मानते. अब हम ईश्वर विचार का दूसरा भाग आप के संमक्ष भेंट करते हैं जिसमें इस विषय पर कि ईश्वर साकार है वा निराकार विचार किया गया है ।

ईश्वर का लक्षण सच्चिदानन्द है और इस शब्द में तीन पद अर्थात् (१) सत (२) चित (३) आनन्द है तीन काल में रहने वाले को सत कहते हैं और ज्ञान वाले को चित और तीनों काल में दुःख के अत्यन्ता भाव को आनन्द कहते हैं अब सबसे प्रथम हमको विचारणीय यह है कि जो पदार्थ सत है आया वह साकार होगा वा निराकार तात्पर्य यह है कि सत मूर्तिमान है या अमूर्ति मान है यदि

कहा जाथाकि मूर्तिमान है तो कहा जायगा आया वहमूर्ति संयोग से बनी है या तत्वस्वरूपहै अर्थात् सावयवहै या निरावयव यदि कहा जाय सावयव अर्थात् अनेक वस्तुवोंसे मिलकर बनी है तो यह प्रश्न होगा कि भौतिक है या अभौतिक-भा: इसका यह उत्तर हैकि भौतिकहै तो अवश्यमेव वहसत भूतों का कार्य होगा जब कार्य्य हुआतो किसी काल में कारण से उत्पन्न हुआ होगा और अपनी उत्पत्ति से पूर्व कालमें नहीं होगा इससे प्रत्यक्ष सिद्ध हैकि जो उत्पन्नहुआ वह नाश भी अवश्य होगा और नाशान्तर नहीं रहेगा-तात्पर्य यह कि भौतिक मूर्ति होने से आदि और अन्त में न रहा केवल मध्य अवस्थामें हुआ परन्तु सत तीनों कालमें रहने वाले को कहते हैं अतएव जो वस्तु एक कालमें रहे वह सत नहीं हो सकती-यदि कहाजाय अभौतिक मूर्ति है तो होनहीं सकती-क्योंकि अभौतिक मूर्ति में दृष्टान्तका अभाव है और प्रत्यक्ष का विरोधी होने से इसमें अनुमान भी नहीं होसकता क्योंकि अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वक होताहै और शब्द प्रमाण भी नहीं होसकता न है-यदि कहे कि निरावयव

मूर्ति है तो सत प्रमाणू धर्म वाला होगा और प्रमाणू एक देशी है अतएव सतभी एक देशी होगा यहभी असम्भवहै क्योंकि कोई सान्त पदार्थ अनन्त नहीं हो सकता अतएव सतसे सारे जगतके नियम नहीं चल सकते परन्तु परमात्मा सारे जगत का नियन्ताहै इसलिये सत को अमूर्ति मानना पड़ेगा अब रहा चित्त यह कभी मूर्ति वाला होही नहीं सकता क्योंकि मूर्ति मान पदार्थ भौतिक हैं और भौतिक जड पदार्थ हैं अर्थात ज्ञान शून्य चित जो ज्ञान का अधि करण है वह किस प्रकार जड हो सकता है ।

द्वितीय भौतिक पदार्थ अनित्य है यदि चित्त अनित्यहै तो सतके साथ तीन कालमें किस प्रकार रह सकताहै अतएव चित्तभी मूर्ति वाला नहीं हो सकता—अब रहा आनन्द वहभी तीन काल में सत के साथ रहता है अतएव उसको भी मूर्ति वाला नहीं कह सकते ।

पाठक वृन्द—उपरोक्त लेख से सिद्ध होगया कि सच्चिदानन्द साकार नहीं प्रत्युत निराकारहै और ईश्वर सर्व शक्तिमानहै और साकार वस्तुसीमावद्द

होगी और जो सीमावद्ध होगा उसके गुण तथा शक्ति भी वैसीही होगी और जिसकीशक्ति सीमा वद्ध होगी वह सर्व शक्तिमान नहीं हो सकता–इससे ज्ञात हुआ कि निराकारही सर्व शक्तिमान हो सक्ताहै इस का प्रयोजन यह नहीं कि प्रत्येक निराकार सर्व शक्ति मान है किन्तु सर्व शक्तिमानअवश्य निराकारहै वहुतसे महाशय कहेंगे कि जिसका रूपनहीं वहवस्तुहीनहीं? परन्तु स्मरण रहेकि वायु रूप रहित है क्या वह वस्तु नहीं मन, बुद्धि, सुख, दुःख, गरमी, सरदी, काल, दिशा आकाश, यह सारी वस्तुयें आकारसे रहित हैं क्या यह नहीं हैं।

प्रिय पाठक! ईश्वर, अजन्मा अर्थात् जगत का कर्ता है परन्तु साकार पदार्थ स्वयं परमाणु संयोग से वना हुआहै वह किस प्रकार जगत का आदि कारण हो सकताहै–ईश्वर अमृत है परन्तु साकार पदार्थ सावयव होने से नाशवाला होता है अतएव वह अमृत नहीं हो सकता ईश्वर सर्व व्यापक है और अनन्त है। अनन्त दो प्रकार का होता है एक देश योग से दूसरा काल योग से। परन्तु

साकार पदार्थ सावयव और जन्य होने से काल योग से तो सान्त ही है और सीमा वाला होने से देशयोग से भी सान्त होगा इस कारण कोई साकार पदार्थ अनन्त नहीं होसकता और ईश्वर अनन्त है इस कारण साकार नहीं ॥

ईश्वर निर्विकार है परंतु साकार पदार्थ सावयव होने से ६ प्रकार के विकारों अर्थात् जन्म आदि स्थिति परिमाण घटने और नाश होने से बच नहीं सकता अतएव ईश्वर निराकार है ईश्वर सर्वाधार है साकार पदार्थ एक देशी होने से सर्वाधार हो नहीं सकता और दूसरे उस को स्वयं आधार की आवश्यकता होगी। साकार मानने वालोंने स्वयं स्वीकार किया है किसी का मंतव्य हैकि ईश्वर सिंहासन पर विराजमान है और उसी सिंहासन का आधार देवता हैं किसी का मंतव्य हैकि क्षीर सागर में परमात्मा शेष की शय्यापर शयन करते हैं—किसी ने उसका स्थान वैकुंठ मानाहै परिणाम यह हैकि साकार मानने वाले स्वयं उसको आधार की आवश्यकता मान रहे हैं।

महाशय ? जब मनुष्यों में यह अज्ञान आगया कि परमेश्वर साकार है तो उसी समय उसको एक देशी समझकर उसके प्रबंधके वास्ते सहायक ढूंढने आरम्भ किये किसी ने कहा फरिश्तों के द्वारा उसके कार्य्य होते हैं और दुनियां में पैगम्बर का होना तसलीम कर बैठे इतना विचार न हुआ कि पैगम्बर के अर्थ पैगाम लानेवाले के हैं और पैगाम कुछ दूरी से आया करता है क्या कोई बतला सकता है कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच में कितना अन्तर है जिसके कारण पैगम्बरों की आवश्यकता हुई-नहीं २ किंतु पैगम्बरों पर वही फरिश्तों द्वारा प्रकट होना स्वीकार करना पड़ा अर्थात् परमेश्वर बिलकुल असमर्थ सा बना दिया-दूसरी तरफ किसीने साकार मानकर उसका बेटा बना लिया और उसको खुदा के दक्षिण हाथ की ओर जा बिठलाया और यह न सोचा कि दायां बांयां सीमाबद्ध पदार्थ का होता है सीमाबद्ध पदार्थ नाशवान होता है अतएव परमेश्वर भी नाशवान होजायगा और प्रायः लोगों ने उसका सिंहासन उसके गण उसकी स्त्री आदि बातें कल्पना कर

लों उन्होंने वास्तव में ग्रहस्थी मनुष्य बना दिया है और इस प्रकार की चिन्ताओं में ग्रसित करा दिया है कि वास्तविक उसको ईश्वर की दर्जा से गिरा दिया जब यह दशा हुई तो सारे संसार में पाप बिस्तीर्ण होगया मनुष्यलोग ईश्वर से अधिकांश राजा और कुटुम्बियों का भय खाने लगे उन्होंने समझलिया कि ईश्वर किसी स्थानपर होगा महाशयो इस समय जो पाप संसार में विस्तीर्ण हुआ दृष्टि गत हो रहा है यह सब ईश्वरके साकार मान नेसे फैल गया है यदि ईश्वर को निराकार माना जाता तो संसारमें पाप फैल हीं नहीं सकता था क्योंकि यहतो हम दृष्टिगत करते हैं कि जात्र फल प्रदाता शक्ति से नित्यभयातुर होता है जैसे यदि कहीं पुलिस विद्यमानहो वहां कोई चोरी जोरी नहीं करता जब पुलिस को स्वप्न में अथवाहर दृष्टिगत करता है तब पाप करता है कोई मनुष्य अपने माता पिताके सन्मुख व्यभिचार नहीं करता इससे ज्ञात होता है कि यदि मनुष्य को इस बातका निश्चयहो कि परमात्मा प्रत्येक स्थान में विद्यमान है और संसार का अंधेरे से अंधेरा कोण

अथवा पर्वत की अंधेरे से अंधेरी गुफा परमात्मा से शून्य नहीं है तो इस दशा में वह किसी प्रकार और किसी स्थान में भी छिपकर पाप कर्म नहीं कर सकता परन्तु साकार मानने से तो ईश्वर एक देशी होगा और उसको सब स्थानों में विद्यमान किसी प्रकार नहीं मान सकते और ससीम वस्तु से बचकर निकलने के लिये मनुष्य की आत्मा कोई न कोई मार्ग निकाल लेती है जैसे ससीम राजा की ससीम शक्ति से बचने के लिये देश से भागकर अन्य देश में चला जाना प्रथम उपाय है द्वितीय पुलिस को घूस देकर बच जाने का प्रयत्न करना द्वितीय उपाय है अथवा [illegible] से मिथ्या साक्षी दिलाकर और अन्य मनुष्यों के असत्य वचन से लाभ उठाने का यत्न करना तीसरा युक्ति है और वकीलों के द्वारा न्याय कारियों को भ्रम में डालने का यत्न करना चतुर्थ मार्ग है इसी प्रकार अन्य भी अधिक मार्ग जो ससीम शक्ति के दंड की निवृत्यर्थ बर्तेजाते हैं यह सब साकार दशा में हो सकते हैं निराकार और चैतन्य शक्ति को सर्व अन्तर्यामी होने के दशा में

इस प्रकार का कोई यत्न लाभ दायक नहीं हो सकता उस दशा में मनुष्य पाप करके सुख प्राप्ति की आशा नहीं रख सकता और दुःख की आशा रखकर कोई कार्य कियाही नहीं जाता इससे स्पष्ट विदित होता है कि निराकार के मानने में मुक्ति है साकार से नहीं चूंकि मुक्ति ईश्वर ज्ञान के अतिरिक्त हो नहीं सकती और ईश्वर के साकार मानने सेभी मुक्ति हो नहीं सकती अतएव साकार ईश्वर में मुक्तिदाता होना जो ईश्वर का गुण है रह नहीं सकता अतएव ईश्वर निराकार है ।

महाशय गण युक्तियों सेतो आप समझगये होंगे कि ईश्वर साकारनहीं क्योंकि साकारपदार्थ अनित्य और जन्य होते हैं और शक्तिमान और सच्चिदानन्द भी नहीं होसक्ते—अब शास्त्रीय प्रमाणों से सिद्ध किया जाता है कि ईश्वर निराकार है ।

ततःपरं ब्रह्मपरं बृहन्तंयथानिकायंसर्व भूतेषुगूढम् । विश्वस्यैकं परिवेष्टितारमीशंतंज्ञात्वाऽमृताभवन्ति॥७॥ ततोयदुत्तरतरं तदरूपमनामयम् । यएतद्विदुरमृतास्ते भवन्त्यथेतरेदुःखमेवापियान्ति॥१०॥ अपाणिपादो जवनोग्रहीतापश्यत्यचक्षुः सशृणोत्यकर्णः । सवेत्तिवे

धेनचतस्यास्तिवेत्तातमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तम् ॥१८॥

उससे परे बडा ब्रह्म है जो अशरीर होकर सब जीवों में छिपा हुआ है सारे संसार को आच्छादन करनेवाला जो एक परमात्मा ईश्वर है इसके ज्ञान सेही मुक्ति प्राप्त होती है ॥ ७ ॥

अतएव वह सबसे बड़ा है और वह सबसे रहित और अनादि है अर्थात् निराकार है और जो लोग इसको जानते हैं वह लोग अमृत्यु होते हैं और जो इसके ज्ञान से शून्य हैं वह सब संसार में दुःख ही भोगा करते हैं ॥ १० ॥

उस ईश्वर के हस्तपाद नहीं परन्तु वह गमन करता और पदार्थों का धारण करता है और वह चक्षु रहित है परन्तु वह देखता है और श्रोत्र रहित होकर सुनता है वह सब संसार का ज्ञाता है और इसका यथावत जानने वाला कोई नहीं उसी को अग्र पुरुष व्यापक कहते हैं । १८ ॥

एकोवशीसर्वभूतान्तरात्मा एकंरूपंबहुधायः करोतिनमात्मस्थंयेअनुपश्यन्ति धीराः तेषां सुखं शाश्वतन्नेतरेषाम् ।

वह परमात्मा एक है और सारे जगत में व्यापक

और सर्व प्राणियों का अन्तरयामी जिसने प्रकृति से इस नाना प्रकार के जगत को नाना प्रकार के रूपों में किया और जो आत्मा में रहने वाला है जिसको धीर पुरुष प्रकृति के अन्दर व्यापक देखते हैं वही मुक्ति अर्थात् निराविकल्प सुख को प्राप्त करते हैं अन्य नहीं।

नित्योनित्यानांचेतनश्चेतनानांएकोबहुनांयो विदधातिकामान् तमात्मस्थंयेअनुपश्यन्तिधीरास्तेषांशान्तिःशाश्वतीनेतरेषाम् ॥

वह परमात्मा नित्य पदार्थों में नित्य है अर्थात् उसमें स्वरूप से, अथवा ज्ञान से परिणाम नहीं है वह चैतन्य जीवों से भी चैतन्य है अर्थात् जीव अल्पज्ञ हैं और वह सर्वज्ञ है जो एक होकर अनेकों के अर्थ पूरण करता है अर्थात संसार में कर्मों का फल पहुंचाता है उस जीवात्मा में रमण करने वाले को जो धीर पुरुष देखते हैं उन्हीं को शान्ति निरंतर प्राप्त होती है अन्यों को नहीं।

सपर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् कविर्मनीषीपरिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥

वह परमात्मा सबमें व्यापक शीघ्र कारी शरीर से रहित और नाड़ी आदि के बन्धन से शून्य शुद्ध और पाप से शून्य है तीन कालका ज्ञाता अन्तर्यामी और जगत में व्यापक उस परमात्मा ने निरन्तर सुखों की प्राप्ति के लिये यथार्थ ज्ञान प्रत्येक वस्तु का वेदों द्वारा प्रदान किया है।

ईशावास्यमिदꣳ सर्व्वंयत्किं च जगत्यांजगत्।
तेनत्यक्ते नभुञ्जीथा मागृधः कस्यंस्विद्धनम्।

यह सारा जगत और जगत के प्रत्येक पदार्थ सब ईश्वर का निवास स्थान है और ईश्वर ने सब आच्छादन किया हुवा है जो इस परमात्मा को छोड़ते हैं वह जन्म मरण रूपी महा क्लेश को भोगते हैं चूंकि ईश्वर फल प्रदाता सबका अन्तर्यामी प्रत्येक स्थान पर विद्यमान है इस लिये हे जीव तू किसीका धन लेने की इच्छा न कर यदि तू ईश्वर को त्याग अन्यकी वस्तु लेगा तो अवश्य दुःख पावेगा।

महाशयो? जब इन प्रमाणों से भी सिद्ध हो गया कि ईश्वर निराकार और जगत् में व्यापक है इसमें बाज भोले भाले भ्रातर यह प्रश्न करते

हैं कि यदि ईश्वर निराकार है तो उसका ध्यान किसी प्रकार नहीं होसकता मानों उनके विचारानुसार साकार निराकार का ध्यान नहीं कर सकता" और निराकार साकारका, तो उनको यह विचार करना चाहिये कि जीवात्मा साकार है अथवा निराकार? चूंकि जीवात्मा भी निराकार है अतएव निराकार का ध्यान निराकार ही करता है और जो साकार पदार्थ है उनमें से भी निराकार गुणका ही जीवात्मा ग्रहण करता है जैसे फूलको जब देखते हैं तो प्रथम रंग का ज्ञान होता है जो निराकार है द्वितीय गन्ध का ज्ञान होता है वह भी निराकार है तीसरे परिमाण का ज्ञान होता है वह भी निराकार है इसी प्रकार जीवात्मा गुणों के अतिरिक्त किसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त नहीं करता और गुण निराकार है और जो लोग कृष्णादि महात्माओं की मूर्त्ति में भी ध्यान लगाते हैं वह भी निराकार गुणों का ही ध्यान होता है जैसे कि काला रंग आकार और गुण यह सब निराकार पदार्थ है इन्हीं का ज्ञान होता है महाशयो चूंकि मनुष्य का उद्देश्य

संसार में मुक्ति प्राप्त करना है और मुक्ति दृष्टि पदार्थ से हो नहीं सकती जैसा कि महात्मा कपिल जी अपने सांख्य सूत्र में बतलाते हैं ॥

नदृष्टात्तत्सिद्धिर्निवृत्त्यपिपुनरनुवृत्तिदर्शनात् ।

अर्थात् दृष्टि पदार्थों से अत्यन्त दुखनिवृत्ती प्राप्त नहीं होती क्योंकि दृष्टि पदार्थ के संयोग से जो दुख दूर होता है, वह इस पदार्थके वियोग से फिर उत्पन्न होजाता है यह नित्य प्रति का अनुभव प्रत्यक्ष प्रमाण है अतएव उपनिषदों में लिखा है कि देवता लोग परोक्ष अर्थात् जो पदार्थ आंखों से नहीं दृष्टिगत होते अर्थात् जिन को ज्ञान इन्द्रियोंसे न जानने योग्य पदार्थ समझते हैं अर्थात् विद्वान लोग आत्मा जो इन्द्रियों से नहीं जाना जाता उसको प्यार करते हैं और प्रत्यक्ष जो प्राकृत पदार्थ है उनसे घृणा करते हैं क्योंकि प्रकृति दुःख स्वरूप है अतएव इससे मिथ्या ज्ञान और मिथ्या ज्ञानसे राग व द्वेश उत्पन्न होते हैं और राग से वस्तु की प्राप्ति का यत्न उत्पन्न होता है और इस यत्नसे धर्म अधर्म दो प्रकार का कर्म उत्पन्न होता है और मनुष्य पाप और

पुण्य करता है और उस पाप और पुण्य का फल दुख सुख भोगने के अर्थ जन्म मरण धारण किया जाता है जो महा दुःख रूप है महाशयों इससे आपको विदित होगया कि निराकार ईश्वर और साकार प्रकृति है और साकार के संयोग से दुःख और निराकार से सुख लाभ होता है अत एव आप ईश्वर को निराकार मानकर शान्ति प्राप्ति करें ॥

ओ३म्

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

जैनियों का कल्पित और अनवस्था
दोषग्रस्त

ईश्वर जगत्कर्त्ता कैसे होसक्ता है

जिसको स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती
ने दयानन्द वेद प्रचारक मिशन
के लिये लिखकर छपाया

Printed by B. Kashi Prasad at the
Shanti Press Fatehgarh.

प्रथमवार ५००१] [मूल्य)।

नोट—स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती की उर्दू हिन्दी की बनाई हुई तमाम पुस्तकें दयानन्द वेद प्रचार मिशन आर्य समाज के सामने मोती कटरा आगरा से मिल सक्ती हैं।

सूचना:—यदि आर्यसमाजों ने दयानन्दवेदप्रचार मिशन को सहायता दी तो तमाम पुस्तकों का जो समाज के विरुद्ध लिखी गई हैं उत्तर मिल सक्ता है।

कल्पितेश्वर

जैनियों का ईश्वर जगत् कर्त्ता कैसे हो सक्ता है।

सज्जन पुरुषो संसार में दो प्रकार के पदार्थ प्रतीत होते हैं एक स्वाभाविक दूसरे कृत्रिम जैसे एक तो सोना है दूसरे मुलम्मा चांदी और जर्मन की बनावटी चांदी गुण कर्म्म स्वभाव वाला सच्चा राजा और पञ्जाब का नामधारी नाई राजा यदि कोई सोने का काम मुलम्मे से लेना चाहे तो कैसे हो सक्ता है जैसे राजा दुष्टों से श्रेष्ठों की रक्षा करता यह कार्य्य नाई राजा से कैसे चल सक्ता है जैन लोगों का कल्पित और बना हुआ ईश्वर जो स्वयं जगत् में सम्मिलित है वह कैसे जगत् बना सक्ता है जैन लोगों का एक देशी ईश्वर कर्म्मों का फल कैसे दे सक्ता है जैन लोगों ने जो ईश्वर के सम्बन्ध में परस्पर विरुद्ध कल्पना की है जिस से पता लगता है जैन आचार्य्य ईश्वर के स्वरूप से सदा अनभिज्ञ रहे अब भी अने-

भिन्न हैं ॥

श्री जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्य्यालय बम्बई के छोटे पुस्तक से ईश्वर सम्बन्धी जैन-कल्पना का नमूना पेश करके उस पर समीक्षा करते हैं।

न द्वेषी हो न रागी हो सदानन्द वीत रागी हो।
वह सब विषयों का त्यागी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो॥

समीक्षा

जैनियों का ईश्वर ऐसा नहीं परन्तु वह ईश्वर को ऐसा बनाना चाहते हैं यदि जैनियों को ईश्वर का लक्षण विदित होता तो ऐसा न लिखते क्योंकि ईश्वर का लक्षण योग शास्त्र ने यह किया है कि,, क्लेशकर्म्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुष-विशेष ईश्वरः।

भावार्थः- जो किसी काल में क्लेश और कर्म में लिप्त न हुआ हो ऐसे पुरुष विशेष को ईश्वर कहते हैं जब पांचों क्लेशों में राग द्वेष वर्त्तमान हैं जिन से ईश्वर का कभी सम्बन्ध नहीं होता द्वेष उस शय से होता है जिस से कभी दुःख मिला हो, जैसा लिखा

है " दुःखानुशयी द्वेषः " योग दर्शन और राग का लक्षण यह किया है " सुखानुशयी रागः " जब ईश्वर को सुख दुख होते ही नहीं क्योंकि यह मन के धर्म्म हैं ईश्वर का मन नहीं क्योंकि यह मन और इन्द्रियें की आवश्यकता एक देशी जीव को होती है ईश्वर सर्वव्यापक है उस का मन नहीं राग द्वेष और सुख दुःख मन के धर्म्म हैं जहां धर्म्मी नहीं वहां धर्म्म कहां सदानन्द और वीतरागी दो विरोधि गुण हैं क्योंकि सदानन्द उसे कहते हैं जिस का आनन्द तीन काल में बना रहे ।

वीतराग उसे कहते हैं जिस को राग होकर नाश होगया हो जिस को राग के नाश पर आनन्द आया है वह आनन्द सत नहीं कहला सक्ता क्योंकि राग के नाश के पूर्व नहीं था स्थूल वस्तु के गुण सूक्ष्म में नहीं जासक्ते यह नियम है ईश्वर विषयों से सूक्ष्म है फिर ईश्वर में विषय का संग हो नहीं सक्ता त्याग प्राप्त का होता है जब ईश्वर में विषय आ ही नहीं सक्ता तो त्यागी कैसा ?

जैन

न खुद घट घट में जाता हो मगर घट २ का ज्ञाता हो।

समीक्षा

किस प्रमाण से घट २ का ज्ञाता हो यदि कहो प्रत्यक्ष प्रमाण से तो एक देशी सब को प्रत्यक्ष कर नहीं सक्ता यदि कहो अनुमान से तो विना प्रत्यक्ष के व्याप्ति नहीं और विना व्याप्ति के अनुमान हो नहीं सक्ता यदि कहो शब्द प्रमाण से तो ईश्वर से बढ़कर आप्त पुरुष कौन है जिस से ईश्वर को ज्ञान हो जैन लोग ईश्वर जिनेन्द्र जिनवर आदि को एक देशी और सर्वज्ञ मानते हैं जो असम्भव है जो प्रमाण से सिद्ध नहीं हो सक्ता यदि किसी जैन विद्वान् में साहस है तो अपने कल्पित जिनेन्द्र और ईश्वर की सत्ता प्रमाणों से सिद्ध करे इस में न हेतु है न उदाहरण ।

समीक्षा

सत का लक्षण कीजिये जो निर्दोष हो क्या उपदेश देना क्रिया नहीं ऐसा ईश्वर हो यह तो

आप के मन की कल्पना है इस प्रकार के ईश्वर की सत्ता प्रमाणोंसे सिद्ध कीजिये यदि सत्ता सिद्ध होगई तो जैनियों का ईश्वर ऐसा कह सक्ते हैं यदि सिद्ध न हुआ तो मानना पड़ेगा कि जैनियों का ईश्वर कल्पित है॰

जैन

न करता हो न हरता हो नहीं अवतार धरता हो।
मारता हो न मारता हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥

समीक्षा

क्या शक्ति शून्य हो या शक्तिवान् यदि शक्तिशून्य है तो असमर्थ को ईश्वर कहना अविद्या है यदि शक्तिवान् है तो शक्ति निष्फल खोने वाला है जो ज्ञानी कहला नहीं सक्ता क्योंकि जो अपनी शक्ति को निष्फल खोवे वह मूर्ख है ईश्वर के सर्वव्यापक होने से अवतार की आवश्यकता हो नहीं जहां ईश्वर न हो वहां उस का अवतार काम करे जो लोग ईश्वर को सर्वव्यापक मानते हैं वह ईश्वर का अवतार नहीं मानते जो लोग जैनियों की भांति

ईश्वर को एक देशी मानते हैं वही अवतार मानते हैं मरते प्राणधारी हैं जब अनन्त है तो वह स्वयं कैसे मर सक्ता है कोई जीव स्वयं तो शरीर छोड़ना नहीं चाहता दुखी जीव भी इस आशा पर कि कभी सुख होगा जीना चाहते ईश्वर मारे नहीं तो कर्मों के फल से जीव कैसे मरे ।

जैन

ज्ञान के नूर से पुरनूर हो जिसका नहीं सानी ।
सरासर नूर नूरानी जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥

समीक्षा:—

क्या जैनियों में जहां सतभव्य जीव ईश्वर बन सक्ते हैं कोई ऐसा ईश्वर भी है जिस का कोई सानी न हो यदि ऐसा है तो और मुक्त जीवों से उसका भेदक कौनसा गुण है जो दूसरे मुक्त जीवों में नहीं ऐसे ईश्वर की सत्ता प्रमाणों से सिद्ध कीजिए—

जैन

न क्रोधी हो न कामी हो न दुश्मन हो न हामी हो।
यह सारे जग का स्वामी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो॥

समीक्षा

क्रोध असमर्थ में होता है जब सर्वशक्ति सम्पन्न है तो उस में क्रोध कैसे होगा, दुश्मन उसे कहते हैं जो बाधक हो क्या ईश्वर पाप का भी बाधक नहीं हामी साधक को कहते हैं क्या ईश्वर धर्म का भी साधक नहीं यदि सारे जगत् का स्वामी हो तो उसका क्या अधिकार हो क्योंकि स्वामी के दो काम हैं रक्षा और पालन यदि यह दोनों कार्य्य करे तो हामी हो जाय आप चाहते हैं स्वामी तो हो और हामी न हो आपकी यह कल्पना असम्भव है जिसको आपने शब्दार्थ की अनभिज्ञता से लिए मारा हामी शब्द फ़ारसी का है और स्वामी संस्कृत का है अर्थ दोनों का एक सा हो है एकार्थवाची दो शब्द लिखकर एक की सत्ता

मानना दूसरे से इनकार करना अविद्या है ।

जैन

वह जात पाक हो दुनियां के झगड़ों से मुबर्रा हो।
आलमुलग़ैब हो बे ऐब हो ईश्वर हो तो ऐसा हो॥

समीक्षा

ईश्वर जब कि सब से सूक्ष्म है तो उस में अपवित्रता आ कैसे सकती है और दुनियां के झगड़े अहंकार और शरीरधारी एक देशियों के लिये होते हैं जो सर्वव्यापक और अहंकार शून्य होगा उसको दुनियां के झगड़े कैसे लग सकते हैं जिससे कोई वस्तु छिपी हो वह आलिमुलग़ैब हो सकता है जिसका एक देशी होना आवश्यक है ईश्वर के लिये एक देशी होना भी ऐब है अतः बे ऐब कैसे हो सकता है ।

जैन

दयामय शान्ति रस हो परम वैराग्य मुद्रा हो ।
न जाबिर हो न काहिर हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो॥

समीक्षा

इस से ईश्वर का मूर्तिमान् होना पाया जाता है क्योंकि निराकार की मुद्रा तो हो नहीं सकती और जो साकार है वह ईश्वर हो नहीं सकता ईश्वर के आत्मा में शान्ति हो मन में व शरीर में हो यदि कहो आत्मा में तो आत्मा में अशांति किस के नहीं आती यदि कहो मन में तो पहिले ईश्वर का मनसिद्ध कीजिये।

जैन

निरंजन निर्विकारी हो निजानन्द रस विहारी हो।
सदा कल्याणकारी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो॥

समीक्षा

जब जैनियों का ईश्वर वीतराग होने से बनता है तो वह मंद हो ही नहीं सकता जब वह स्वयं सदा नहीं तो सदा कल्याणकारी कैसे हो सकता है जिस की उत्पत्ति साधनों से होती है उस का नाश अवश्य होता है एक किनारे की नदी और एक सीमा

वाला मकान जगत् में है ही नहीं यदि दृष्टांत मिल जावे कि कोई कार्य सदा रह सकता हो तो जैनियों की कल्पना सम्भव हो सकती है।

जैन

न जग जंजाल रचता हो करमफल का न दाता हो।
वह सब बातों का ज्ञाता हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो॥

समीक्षा

ज्ञान का फल कर्म होता है जिस कर्म की सामर्थ्य ही नहीं उस को सब चीज़ोंके ज्ञाता होने से क्या फल दूसरे एक देशी सब चीज़ों को जान कैसे सकता है यह असम्भव कल्पना जैनियों को शोभा देती है कोई बुद्धिमान् तो इस को स्वीकार नहीं कर सकता न कोई जैन प्रमाणों ही से ईश्वर की सत्ता सिद्ध कर सकता है।

जैन

वह सच्चिदानंद रूपी हो ज्ञानमय शिवस्वरूपी हो।
आप कल्याणरूपी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो॥

समीक्षा

इधर तो जैन ईश्वर को बनाते हैं उधर सच्चिदानंद बतलाते हैं यह परस्पर विरोध प्रत्यक्ष है क्योंकि सत् कहते हैं जो तीन काल में एकसा रहे जो बनता है वह बनने से पूर्वकाल में नहीं इस लिये वह सत् के लक्षण में नहीं आ सकता अंतः जैनियों का बना हुआ ईश्वर सत् नहीं जब सत् ही नहीं तो सच्चिदानन्द रूपी कैसे हो सकता है उस का ज्ञान भी उत्पन्न होता है इस लिये ज्ञानमय भी नहीं जिस कारण वह जीव से बना है इस लिये निर्विकार नहीं आनन्दस्वरूप जीव हो ही नहीं सकता जैसा कि वेदान्त दर्शन में युक्तियों से सिद्ध किया है।

नेतरोनुपपत्तेः॥

अर्थः—ब्रह्म से भिन्न जीव कभी आनन्दमय सिद्ध नहीं हो सकता जैनलोग जीव का स्वभाव आनन्द मानते है जो किसी प्रमाण से सिद्ध नहीं हो सकता शिव स्वरूप का जैनमत में क्या लक्षण और कल्याणरूप

जैन सिद्धांत में किस को कहते हैं यह दोनों शब्द संस्कृत के हैं जो इन का अर्थ है वह तो जैनियों को इष्ट नहीं।

जैन

जिस ईश्वर के ध्यान सेती बने ईश्वर कहे न्यामत।
वही ईश्वर हमारा है जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥

जैनियों के एक न्यामत आचार्य्य हैं जिन्होंने यह परस्पर विरुद्ध और बे तुकी ईश्वर की कल्पना की है यदि ईश्वर के ध्यान से ईश्वर बनता है तो वह ईश्वर किसी और ईश्वर के ध्यान से बना होगा अतः जैनियों के ईश्वर की सत्ता अनवस्था दोषग्रस्त हैं जिससे सिद्ध है कि जैनियों का ईश्वर सच्चिदानन्द नहीं यह शब्द कल्पित है केवल दूसरों को धोखे में डालने के वास्ते हैं जिससे कोई इनको अनीश्वरवादी न कहे जैन लोग न तो ईश्वर को मानते हैं और न जानते हैं इसलिये असम्भव कल्पना करके कहते हैं कि हमारा यह ईश्वर है हमारा भारतवर्ष के समस्त जैन विद्वानों को खुला चैलेञ्ज है कि वह कल्पित और

अनवस्था दोषग्रस्त ईश्वर को प्रमाणों से सच्चिदानंद सिद्ध करें जैसा कि उन्हों ने लिखा है वरन अपने को ईश्वरवादी कहना छोड़दें।

जैनियों में जब कोई स्थिर ईश्वर है ही नहीं सब ईश्वर अनवस्था दोषग्रस्त और बने हुये हैं तो वह जगत्कर्त्ता कैसे हो सकते हैं जगत्कर्त्ता नित्य ईश्वर दूसरा है और जैनियों के कल्पित ईश्वर दूसरे हैं उस का प्रयोजन यह है कि जैन जो ईश्वर को जगत्-कर्त्ता नहीं मानते वह अपने कल्पित ईश्वरों को जो मुक्त जीव हैं जगत् कर्त्ता नहीं मानते मुक्त जीव को जगत्कर्त्ता कोई मत वाला नहीं मानता।

ओ३म् शम्-

ओ३म्

वेदों की आवश्यकता

ट्रैक्ट नं० १

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती कृत

जिसको

प्रबन्धकर्त्ता वैदिकधर्मप्रचारक मण्डली

ने

वैदिकयन्त्रालय

अजमेर में

छपवा कर प्रकाशित किया

प्रथमवार ५००० | जुलाई १९०३ | मूल्य)॥

वेदों की आवश्यकता ।

मनुष्य जब संसार के पदार्थों को सूक्ष्मदृष्टि से विचार करके देखता है तब उस को निश्चय हो जाता है कि संसार में जितने रोग हैं उन सब की औषधि है और जितनी औषधि हैं वह किसी न किसी रोग के लिये उपयोगी हैं जब तक मनुष्य इसबात को न जानले कि इस समय इस रोग के कारण औषधि की आवश्यक्ता है तब तक उसकी प्रवृत्ति उस औषधि के सम्पादन करने में नहीं होती और जब तक मनुष्य यह न जानले कि मुझे अमुक रोग है तब तक वह उसकी निवृत्ति के उपायों को नहीं विचारता यद्यपि वह औषधि उसके पासही पड़ी हो तो भी आवश्यक्ता के नजानने से वह उसको ग्रहण नहीं करता इससे विचारशील का काम है कि प्रथम रोग अर्थात् वस्तु की आवश्यकता पश्चात् वस्तु के गुण तदनन्तर उससे रोग की निवृत्ति अच्छे प्रकार से समझाकर वस्तु के देने की चेष्टा करै नहीं तो वस्तु के दान से अभीष्ट फल सिद्धि न होगी इसकारण हम प्रथम मनुष्यों की आवश्यकता को प्रगट करेंगे ।

मनुष्यों का रोग ।

जब हम संसार में देखते हैं कि अन्न संसार के जीवों का प्राणस्वरूप है और प्राचीन विद्वानों ने भी उसको मनुष्यों

का प्राण माना है "अन्नं वै प्राणः" स्मृति वाक्य से तो हम निश्चय ही करते हैं कि अन्न मनुष्यों का प्राण है परन्तु जब कोई मनुष्य कच्चा अन्न खा जाता है तो बहुधा अपचि रोग हो जाता है जब अन्न अधिक खा जाता है तो विशूचिका आदि रोगों से प्राणों का नाशक प्रतीत होने लगता है उस समय उपरोक्त सिद्धान्त से विमुख वृत्ति हो जाती है जब हम सुनते हैं "आज्यं वै बलम्, आज्यं वै आयुः आज्यं वै प्राणः" अर्थात् घृत ही जीवों को बलदायक है। घृतही जीवों की आयु है घृत ही जीवों का प्राण है तो घृत का सेवन आवश्यक प्रतीत होने लगता है परन्तु जब कोई ज्वर पीड़ित मनुष्य घृत का सेवन करता है उस समय घृत उसे बलवान् नहीं बनाता किन्तु विषमज्वर अर्थात् (तपेदिक) करके उसके बल का नाशक, आयु का नाशक और प्राणों का नाशक हो जाता है वा घृत खा कर पानी पीलो तो (काशरोग) अर्थात् खांसी उत्पन्न हो जाती है। इसको देखकर घृत खाने में अश्रद्धा हो जाती है। अब लीजिये विष अर्थात् संखिया जो मनुष्यों को प्राणनाशक प्रतीत होता है जिसको प्राणनाशक समझ कर राज्य ने भी उसका बेचना बंद कर दिया है परन्तु जब वही संखिया वैद्यकशास्त्र की रीति से शुद्ध कर के खाया जाता है तो बड़ेर प्राणनाशक रोगों को नाश करके जीवों को अमृत के तुल्य गुणकारी प्रतीत होने लगता है पाठकगण ! उक्त दृष्टान्तों से निश्चय हो जाता है कि कोई भी पदार्थ इस संसार में जीव के लिये उपकारक नहीं और न हानिकारक है किन्तु पदार्थों

को तत्वज्ञान अर्थात् यथार्थ ज्ञान कर उसके गुण स्वभाव क्रिया को जानकर उस का वरताव करना लाभकारक है और इससे विरुद्ध मिथ्याज्ञान के आश्रय उसका ग्रहण हानिकारक है।

प्रियपाठको! जब हमें किसी अंधकारमय स्थान में जाने का अवसर मिलता है तो भयदायक वस्तु के न होने पर भी चित्त का भय दूर नहीं होता जब प्रकाश में सिंह सर्पादि भयानक जीवों को देखते हैं तो उनकी अवस्था को जानकर हमारा भय वहुत ही न्यून हो जाता है इससे भी निश्चय होता है कि मनुष्य को अज्ञान ही भयकारक है अज्ञान के नाश से मनुष्य का भय भी नाश हो जाता है वहुधा हम देखते हैं कि एक मनुष्य वलिष्ट पशुओं की मण्डली को एक सोटा हाथ में लिये अपने आधीन करके जिधर चाहता है उधर ले जाता है परन्तु वह दो मनुष्यों को उस सोटे से अपने आधीन नहीं कर सका यह सब वातें प्रत्यक्ष जतला रही हैं कि ज्ञान का न होना वड़ी हानि का कारण है मनुष्यों को इसी ने परतंत्र कर रक्खा है यही मनुष्यों के दुःखों का आधार है. पाठकगण! आप यह भी जानते हैं कि जीव अल्पज्ञ है और प्रकृति विभु है तो प्रकृति का तत्त्व जीव को पूर्णतया होना असम्भव है इससे जीव कभी सुखी नहीं हो सकेगा और प्राचीन शास्त्रों ने भी इस वात को प्रतिपादन किया है कि मनुष्य मिथ्याज्ञान से बद्ध होता है जैसा महात्मा महामुनि कपिल जी ने अपने सांख्य शास्त्र में दिखलाया है।

"बंधो विपर्ययात् ।"

अर्थ-विपर्यय अर्थात् विपरीत ज्ञान ही बंध का हेतु अर्थात् कारण है क्योंकि प्रकृति के अविवेक से जब जीव को प्राकृत पदार्थों में यह भ्रम उत्पन्न होजाता है कि यह पदार्थ मेरी आत्मा के अनुकूल अर्थात् सुखकारक है और यह पदार्थ प्रतिकूल अर्थात् दुःखकारक है तो जिन पदार्थों को आत्मा के अनुकूल समझा है उनके ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न होती है और उस पदार्थ के उपादान करने अर्थात् प्राप्त करने में मनुष्य यत्न करता है वह यत्न से उत्पन्न हुआ कर्म धर्माधर्म रूप फल को उत्पन्न करता है और उस फल को भोगने के वास्ते जन्म मरण अर्थात् शरीर के संयोग वियोग को प्राप्त होता रहता है और इस रोग की औषधि तत्वज्ञान के विना दूसरी नहीं जिस प्रकार रज्जु में सर्प की भ्रांति से जो भय उत्पन्न होता है उसकी निवृत्ति का उपाय विना प्रकाश में रज्जु को रज्जु जाने दूसरा नहीं और महर्षि पतञ्जलि ने भी अपने योगशास्त्र में लिखा है।

"अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पंचक्लेशाः"

अविद्या अर्थात् जिससे पदार्थ के तत्वस्वरूप को न जान कर भ्रम से अन्य में अन्य निश्चय करना इत्यादि और भी सब महात्माओं की सम्मति में मिथ्याज्ञान ही मनुष्यों का रोग है जिसके नाश से मनुष्य शांतिसुख को लाभ कर

सकता है और इस रोग की औषधि सिवाय आत्मानात्मविवेचन के दूसरी नहीं क्योंकि जब तक जीव अपने स्वरूप और प्रकृति के स्वरूप और स्वभाव को न जानले और अपने अभीष्ट आनन्द के अधिकरण अर्थात् आश्रय को न समझले तबतक जीव के दुःख की निवृत्ति होना असम्भव है।

प्रियपाठको! हमारे महात्मा योगीश्वरों ने भी इसको पुष्ट किया है।

"ज्ञानात् मुक्तिः।"

अर्थात् मुक्ति नाम त्रिविध दुःखनिवृत्ति ज्ञान ही से होती है और महामुनि गौतम जी ने अपने शास्त्र के आरम्भ में ही सिद्धांत कर दिया है।

"प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनदृष्टांतसिद्धांतावयवतर्कनिर्णयवादजल्पवितण्डाहेत्वाभासच्छलजातिनिग्रहस्थानानांतत्वज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः" न्या० अ० १ पा० १ सू० १ ॥

अर्थ—प्रमाण जिससे वस्तु का यथार्थ ज्ञान होता है। प्रमेय, जिसका ज्ञान प्रमाण से हो। संशय, जहां सामान्य ज्ञान हो परन्तु प्रमाण के अभाव से निश्चित ज्ञान न हो। प्रयोजन, जिस अर्थ की इच्छा को धारण करके कार्य्य में प्रवृत्ति होती है।

दृष्टान्त, जिस में लौकिक और परीक्षकों की बुद्धि समान हो। सिद्धान्त, जो प्रतिपक्षी के साथ वाद करके अन्तिम व्यवस्था ठहरे इत्यादि और सब सोलह पदार्थों के तत्वज्ञान से निःश्रेयस अर्थात् मुक्ति प्राप्त होती है क्योंकि जब प्रमाणादि द्वारा जीव को यह निश्चय होजाता है कि अमुक पदार्थ मेरे आत्मा के अनुकूल अमुक प्रतिकूल है तो सत्य कार्य्यों में प्रवृत्ति होती है जिसके भोगने के लिये जन्म की आवश्यकता नहीं होती इसी प्रकार जब जीव अपने प्रकृति तथा ईश्वर के गुणों का ठीक ठीक निश्चय कर लेता है तब वह हिताहित को ठीक साधन कर लेता है जिस प्रकार आजकल जुगराफिये और नकशों के द्वारा हमको हरएक नगर देश समुद्र झीलादि का यथार्थज्ञान उपकारदृष्टि से हमारी न्यायशील सरकार ने विनाश्रय घर बैठे सिखला दिया है और यह भी प्रगट कर दिया कि अमुक नगर में यह वस्तु उत्पन्न होती वहां के लोगों का यह मत है उन की यह रीति है जब मनुष्य इस प्रकार जान लेता है कि अमुक देशवासियों का यह धर्म्म है ऐसा स्वभाव है ऐसा धन है, ऐसे कारीगर हैं उनका ऐसा चाल चलन है इत्यादि बातों को जान कर उसको अपने अभीष्ट की सिद्धि का ज्ञान जिस स्थल से प्रतीत होता है वह वहीं जाता है अन्यथा व्यर्थ भ्रमण करके अपनी आयु का नाश नहीं करता इसी प्रकार उस परमात्मा की दयालुता से प्रकृति का पूरा नकशा जिसके जानने से प्रकृति के पूरे सिद्धान्त को जानकर अपने आत्मा के अनुकूल वा प्रतिकूल न जानकर

हेय उपादेय रूप वृत्ति को इसमें न फंसा कर अपने अभीष्ट आनन्द के लिये यत्न करता है और यह पूर्ण विवेकी ज्ञान के आश्रय अभीष्ट का प्राप्त करके अतीव सुख को प्राप्त होता।

क्योंकि यह तो सामान्य पुरुष भी नहीं चाहता कि विना प्रयोजन के पक्षपात करके अपने नाम को कलंकित करे तो ईश्वर में यह संदेह ही नहीं हो सकता प्यारे पाठको! संसार में कर्मों के फल के विना कोई भी सुखी दुखी नहीं होता और जब तक कर्मों का विधि निषेध निश्चय न होजाय तब तक उन कर्मों में प्रीति नहीं होती इससे भी ज्ञात होता है कि कर्मों की विधि निषेध का ज्ञान ईश्वर ने जीवों को दिया है।

प्यारे परीक्षकजनो! यह तो आप ठीक रीति से समझते हैं कि जो मनुष्य जिस वस्तु वा कौशल को बनाता है जब तक उसको यथार्थ वरतने की विधि मुख से वा लेख से न बतलादे तब तक उसका यथार्थ बर्ताव किसी को भी नहीं आता और यह भी हम देखते हैं कि हमारे सामने जो घड़ियें अमरीका वा यूरुप देश से आती हैं जब तक उसको कुंजी लगाने का समय वा विधि और सूइयों के घटाने बढ़ाने के नियम तेज और धीमा करने का विचार हमको न विदित होवे तब तक उस घड़ी से हम यथार्थ प्रयोजन सिद्ध नहीं कर सकते और न हम इस वस्तु के बिगड़ने से दोषी ठहराये जा सके हैं हम जगत् में देखते हैं कि जहां हम विना देखे थोड़ी दूर भी चले

वहाँ ठोकर खाई जो जतलाती है कि ईश्वर ने जो तुम्हें आँखें देने से देखकर चलने की आज्ञा दी थी उसको भङ्ग करने का यह फल है।

प्यारे पाठको! इसीप्रकार जब ईश्वर के दिये हुये इन्द्रियों के नियमों को तोड़कर प्रत्यक्ष में दुःख उठाते हैं इससे यह अनुमान सिद्ध है कि वर्त्तमान दुःख भी पूर्व में जो ईश्वर आज्ञा उलंघन की हैं उनका फल है।

महाशयगण! जब यह निश्चय होगया कि दुःख ईश्वर आज्ञा उलंघन का फल है तो यह बात छिपी नहीं रहती कि ईश्वर ने हमें क्या आज्ञा दी है अब ईश्वर आज्ञा को हम उसके दिये नियमों तथा विधि निषेध रूपी वेदों से पाते हैं।

प्यारे पाठको! जब निश्चय हो चुका तो हम उन पुस्तकों की जिनको संसार में ईश्वर आज्ञा मानते हैं परीक्षा करने के लिये उद्योग करते हैं।

प्यारेपाठको! वेदों को छोड़कर बाकी ४ पुस्तकें तौरेत ज़बूर इंजील कुरान को अधिकांश लोग ईश्वर आज्ञा के नाम से पुकारते हैं।

पहिली पुस्तक तौरेत तो मूसा के समय में उतरी विचार यह उत्पन्न होगा कि मूसा से पहिले लोगों को विधि निषेध

का ज्ञान किसप्रकार से होता था और आदम से लेकर मूसा तक ईश्वर आज्ञा संसार में थी वा नहीं और मूसा से पहिले संसार में कौन वात न थी जिसके लिये ईश्वरीय पुस्तक की आवश्यकता थी जिसको तौरेत ने पूरा किया इसका उत्तर यथार्थ देना अति कठिन है।

प्यारे पाठको! यदि दुर्जनतोष न्याय से यह भी मान लें कि तौरेत की आवश्यकता थी तो तौरेत में क्या न्यूनता थी? जिसको पूरा करने के लिये ज़बूर की आवश्यकता हुई और तौरेत के बनाने वाले को उस आवश्यकता का ज्ञान पूर्व था वा नहीं यदि था तो पहिले क्यों न लिखा और आदम से लेकर दाऊद तक मनुष्यों का जीवन अधूरेपन में गया और उनको ईश्वर की यथार्थ आज्ञाओं को न पालन से वंचित रह कर जो दुःख उठाना पड़ा इसका दोष किसपर आवेगा? तौरेत के बनाने वाले पर।

प्यारे पाठको! संसार में दो प्रकार का ज्ञान प्रतीत होता है एक तो सामान्य ज्ञान दूसरा विशेष ज्ञान। सामान्य ज्ञान तो जीव के स्वभाव से ही रहता है क्योंकि जीव अल्पज्ञ है अर्थात् नियमित ज्ञान स्वभाव से समस्त जीवों में रहता है परन्तु विशेष ज्ञान विना किसी निमित्त से नहीं हो सकता। खाना सोना रोना इत्यादिक जो कार्य्य पशु पक्षी सर्पादि सब योनियों में रहता है वह स्वाभाविक है परन्तु हर एक योनि में जो विशेष ज्ञान है वह किसी निमित्त अर्थात् दूसरे के सिखाने से प्राप्त होता है।

मित्रवर्गो! जब हम समस्त जीवों से मनुष्यों की तुलना करते हैं उस समय समस्त जीवों में भोगशक्ति को पाते हैं जैसे-गौ, भैंस अश्वादिक पशु तथा हंसादिक पक्षी वा सर्पादिक तिर्य्यक् जीव, अन्नादि पदार्थों को भोगते हैं परन्तु उनको अन्नादिक पदार्थों की वृद्धि तथा उत्पत्ति करने का ज्ञान नहीं प्रतीत होता। इससे ज्ञात होता है कि जीव स्वभाव से वर्तमान अवस्था का ज्ञान रखता है किन्तु जब हम मनुष्यों में कर्तृत्व शक्ति अर्थात् कर्मों के करने की सामर्थ्य को विचारदृष्टि से विचारते हैं तो यह सामर्थ अन्य जीवों में न पाकर हमें विश्वास होता है कि यह शक्ति किसी निमित्त से उत्पन्न हुई है और जब हम अशिक्षित पुरुषों को देखते हैं तो वे भी कर्तृत्व शक्ति से शून्य ही प्रतीत होते हैं इससे स्पष्ट ज्ञान होता है कि करने की सामर्थ्य प्राप्ति मनुष्यों को शिक्षा से हुई है अब यह विचार उत्पन्न होता है कि मनुष्यों को शिक्षा किससे प्राप्त हुई बहुत लोग तो कहेंगे कि शिक्षा जीवों के परस्पर मेल से उत्पन्न होती है क्योंकि बहुतों की अल्पज्ञता या सामान्य ज्ञान मिल कर बहुज्ञता वा विशेष ज्ञान उत्पन्न होजाता है परन्तु तत्वदृष्टि के विचार से यह मिथ्या प्रतीत होता है जैसे दियासलाई में सामान्य अग्नि है और रगड़ने से विशेषाग्नि प्रगट होती है तो रगड़ना निमित्त ही विशेषाग्नि का उत्पादक प्रतीत होता है और डिब्बी में सौ दियासलाइयों के योग से विशेषाग्नि का उत्पन्न करने वाला निमित्त कारण नहीं जब एक सलाई में विशेषाग्नि प्रगट होजाती है तो वह बहुतसी वस्तुओं को

यह शक्ति दे सकती है इसी प्रकार जब तक जीव को शिक्षा प्राप्त न होगी तबतक उसमें यह सामर्थ्य न होगी।

प्रियपाठको ! कुछ लोग यह कहते हैं कि जीवात्मा नित्य प्रति उन्नति करता है इससे काल पाकर सर्वज्ञ हो जायगा परन्तु उनका यह सिद्धान्त ठीक नहीं क्योंकि जीवात्मा ज्ञान विषय कभी भी विना निमित्त उन्नति नहीं कर सक्ता इस में हेतु यह है कि कोई वस्तु भी उन्नति नहीं करती किंतु अपने उपयोगी अवयवों को प्रकृति से ग्रहण करती है उसको मूढ़ पुरुष उसकी उन्नति मानता है किन्तु गुणों के उचित सहकारी निमित्त को पाकर अधिक हो जाता है परन्तु देश कालादिक तथा प्रकृति यह सब ज्ञान से शून्य है इनसे सर्वज्ञता का मिलना असम्भव है बहुत से भाई यहां पर यह शंका करेंगे कि जीव जहां जायगा वहां के पदार्थों को देख कर अपनी ज्ञान शक्ति को विना किसी निमित्त के बढ़ा सकता है, परन्तु यह शंका भी असंगत ही है क्योंकि सूर्य के निमित्त से चक्षु में प्रत्यक्ष पदार्थों के देखने की शक्ति अधिकांश हो जाती है इससे रूप ज्ञान तो होगया परन्तु विशेष ज्ञान का अभाव ही रहा और यह शक्ति सब जीवों में स्वतः उपस्थित है इसको तुम विशेष ज्ञान नहीं कहसकते क्योंकि संसार के पशु पक्षी रूप ज्ञान को प्राप्त है किन्तु प्रत्यक्ष से अतिरिक्त अनुमानादि जन्य ज्ञान जिससे कार्य्य को देखकर कारण का बोध और लिंग को देखकर लिंगी का बोध होवा तथा नित्य के व्यवहारों

से अनुभव विना शिक्षा के प्राप्त नहीं होता इसलिये अवश्य अनुमान होता है कि यह शिक्षा मनुष्य को कहीं से प्राप्त हुई है।

प्रियमित्रो ! यह तो आप स्वीकार करते हैं कि जबतक आप किसी भृत्य या सन्तान को किसी कार्य्य के करने की आज्ञा न दें और कुकर्मों के करने का निषेधयुक्त उपदेश न करें तबतक उसको किसी कर्म के करने न करने के लिये दोषी नहीं बना सकते और न उसको दण्ड दे सकते हैं यदि आप उसको दण्ड दें तो कोई भी आपको न्यायशील या भला नहीं कहेगा यदि आप किसी न्यायशील मनुष्य को किसी अपराधी को दण्ड देते देखेंगे तो आपको यह दो बातें ध्यान आवेंगी या तो उस अपराधी ने न्यायाधीश की आज्ञा को उल्लंघन किया है या वह न्यायाधीश अन्यायी है पहिली अवस्था में तो उसकी आज्ञा का प्रचार होना आवश्यक है ॥

महाशयगण ! अब आप विचारें कि संसार में जो करोड़ों जीव जो नाना प्रकार के दुःख पारहे हैं इन को देखकर समझदार मनुष्य या तो दुःख को पूर्व कर्म का फल समझेगा या दुःखदाता ईश्वर को अन्यायी जानेगा किन्तु ईश्वर न्यायकारी है उसको अन्यायी कहना केवल मूर्खों का प्रलाप मात्र है हां यह सब मनुष्यों के पापों का फल है पाप ईश्वराज्ञा को उल्लंघन करने का नाम है इससे भी सिद्ध होता है कि ईश्वर ने अवश्य कोई आज्ञा दी है जिसके अनुसार चलकर मनुष्य

इन दुःखों से छूट सकता है जिसके विरुद्ध चलने ही से मनुष्य इन दुःखों से ग्रस्त हुआ है।

प्यारे भाइयो! जब इस प्रकार ईश्वर निर्मित नियम या आज्ञा या सत्यविद्या युक्त पुस्तक की आवश्यकता प्रतीत होती है और ईश्वर के न्यायादि गुणों से भी लक्ष्य होता है कि अवश्य उसने प्रकृति के नियमों को संसार में प्रचार किया है।

प्यारे पाठकों! यदि हम यह मान लें कि संसार में ईश्वर आज्ञा प्रचलित है तो हमें उसका विचार करना पड़ता है कि ईश्वर आज्ञा के लक्षण क्या हैं या ईश्वर ने जो हमें वेदों का ज्ञान दिया है वह कैसा है? पहिला लक्षण हम आवश्यकता के अनुसार यह करते हैं कि "हिताहितसाधनताबोधकत्वं वेदत्वम्" अर्थात् जो हित जीवात्मा के अनुकूल और अहित जीवात्मा के प्रतिकूल साधनों का बोधक अर्थात् बतलानेवाला हो उसे वेद कहते हैं तो यह लक्षण सब ग्रन्थों में अतिव्याप्त होता है अर्थात् सब ग्रन्थ थोड़ी बहुत हित की विधि और अहित का निषेध लिये रहते हैं फिर लक्षण इस प्रकार करते हैं कि "हिताहितसाधनताबोधकानि चापुरुषवाक्यानि इति वेदाः" अर्थात् जो हिताहित का बोधक अपुरुषवाक्य अर्थात् किसी मनुष्य का कहा हुआ वाक्य नहीं उसे वेद कहते हैं अब नास्तिकों के ग्रन्थों और कुरान अंजील तौरेत ज़बूर इन पुस्तकों में अतिव्याप्ति होगी क्योंकि जैन

लोग अपने तीर्थंकरों को ईश्वर मानते हैं और मुसलमान लोग कुरान को ईश्वरीय पुस्तक मानते हैं ईसाई अंजील और यहूदी तौरेत और जबूर को, अब वेदों का लक्षण यह होगा "हिताहितसाधनताबोधकानि चापुरुषवाक्यानि ब्रह्मप्रतिपादकानि सृष्टिक्रमाविरुद्धानि इति वेदाः" इसमें जो अवस्था हिताहित ज्ञान का बोधक पुरुषवाक्य न हो ब्रह्म का प्रतिपादक हो और सृष्टिक्रम विरुद्ध न हो उसे वेद कहेंगे परन्तु वेद शब्दमय है शब्द को प्रमाण नहीं मानाजाता जबतक उसमें यह दोष पाये जावें जैसा महात्मा गौतमजी ने शब्द परीक्षा में लिखा है।

"तदप्रामाण्यमनृतव्याघातपुनरुक्तिदोषेभ्यः"

अर्थ—शब्द अप्रामाण्य है क्योंकि उसमें अनृत नाम झूठा होना व्याघात नाम परस्पर विरुद्ध शब्द कभी सिद्धिदायक नहीं होता इस कारण उसको प्रमाण नहीं माना जाता क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ है वह अनृत वचन कभी नहीं कहता उसका कथन तत्वज्ञान के अनुकूल होता है इस कारण वेदों में यह दोष न होना चाहिये और सर्वज्ञ अपने पूर्व कथन को भूलकर उसके विरुद्ध भी नहीं कहता इस कारण व्याघात दोष भी वेदों में नहीं हो सकता और पुनरुक्ति भी अज्ञानी के कथन में हुआ करती है वेदों को इन दोषों से रहित गौतम आदि महात्मा ऋषियों ने अपने२ शास्त्रों में सिद्ध कर दिया है।

क्रमशः

ट्रैक्ट सोसाइटी वैदिकधर्मप्रचारकमण्डली गुरुकुल बदायूं के नियम ॥

१-यह ट्रैक्ट सोसाइटी वैदिकधर्म्म व देवनागरी प्रचार और गुरुकुल के लाभ के लिये जारी की जाती है।

२-जो महाशय २५) रुपये इस सुसाइटी की सहायतार्थ दान देंगे उनके नाम से एक देवनागरी ट्रैक्ट ५००० छपवाया जायगा जो गरीबों को मुफ्त और आम लोगों को)। में दिया जायगा। और जो मूल्य प्राप्त होगा वह गुरुकुल में खर्च किया जायगा।

३-जो महाशय ५००) रुपये गुरुकुल की सहायतार्थ दान देंगे उनके नाम से १००००० ट्रैक्ट छपवाकर जारी किया जायगा। जो मूल्य प्राप्त होगा उस से एक कमरा बनवाकर उस पर दानीमहाशय के नाम का स्मारक चिन्ह लगाया जायगा।

४-जो महाशय देवनागरी प्रचार के अतिरिक्त वैदिक धर्म के प्रचार के लिये इस सोसाइटी को १०००) रु० ट्रैक्ट छपवाने के लिये दान देंगे उनके नाम से १००० उर्दू ट्रैक्ट छपवाया जायगा जिसकी मूल्य प्राप्ति गुरुकुल में खर्च होगी।

५-जो लोग बांटने के लिये)। वाला १००० ट्रैक्ट मंगायेंगे उनको ८) रु० में १००० ट्रैक्ट और १०० मंगायेंगे उनको १) रु० में दिये जावेंगे।

६-जो किताब बेचने वाले इस सोसाइटी के एजेन्ट होना चाहें उनको फीसदी ४०) रु० दाखिल करना होगा और कमीशन ३०) फीसदी दिया जावेगा।

७-उधार मूल्य पर पुस्तकें किसी को नहीं दीजावेंगी और न यह सुसायटी किसी से उधार लेगी।

मैनेजर ट्रैक्ट सुसायटी गुरुकुल सूर्यकुंड बदायूं

ओ३म्

वेद किसपर प्रकट हुए

अर्थात्

ब्रह्माजी ने वेद रचे वा अग्नि, वायु, आदित्य अंगिरा द्वारा परमात्मा ने प्रकट किये।

ट्रैक्ट नं० ५

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी कृत

जिसको

पं० शंकरदत्त शर्मा ने

अपने शर्मामैशीन प्रिंटिंग प्रेस मुरादाबाद में

छापकर प्रकाशित किया।

द्वितियवार १००० } फरवरी १८१६ { मूल्य)॥

॥ ओ३म् ॥

॥ वेद किस पर प्रकट हुए ॥

प्यारे पाठक ! इस संसार में यह नियम प्रतीत होता है कि हरएक मनुष्य जिस प्रकार के संस्कार रखता है हर एक चीज़के तत्त्व को उसी प्रकारका बताना अपना धर्म समझता है बहुत थोड़े मनुष्य हैं कि जिनको सत्यकी जिज्ञासा हो और झूठसे घृणा करें परन्तु याद रखना चाहिये कि मनुष्य इस में बटोही के समान है और बटोही के वास्ते उचित है कि वह हर क़दम पर अपने पांव की ज़मीन छोड़े अगर वह उसी जगह पर खड़ा रहे, तो कभी अभीष्ट स्थान का मुंह नहीं देख सकता इसलिये जोमनुष्य विना अनुसन्धान किये हठ करनेके आग्रही होगये हैं उनको सत्य असत्य का कुछ विवेक नहीं रहता और वह अपने संस्कार एवं अविद्या के कारण सदा सत्य से विमुख रहा करते हैं ॥

प्यारे दर्शक! आज मुझे मुन्शी इन्द्रमणि जी की बनाई हुई पुस्तक "वेदद्वारप्रकाश" एक सज्जन पुरुषके द्वारा मिली जिसको देखकर मैं चकित होगया कि संसार में ऐसे भी

मनुष्य उपस्थित हैं जो अशुद्धि करके दूसरों को भी अशुद्धि में डालते हैं और अपनी अशुद्धि को सच्ची और दूसरों की सच्ची बातको अशुद्ध करने का उपाय करते हैं, चूंकि ऐसे पुरुषों के लेखों से सर्व साधारणको भ्रममें पड़ने का संदेह है इस वास्ते इसका उत्तर लिखना मुझे आवश्यकीय विदित हुआ ॥

मुन्शी साहब ने पहिले पृष्ठ में लिखा है इसके उपरान्त सत्य के जिज्ञासु और असत्य के जिज्ञासु पुरुषों को ज्ञात हो कि अनादि काल से ऋषि, मुनि, पण्डित और आचार्य्य एक मत होकर यह निश्चय करते चले आये हैं कि वेद हम को ब्रह्माजी के द्वारा मिला।

शोक ! मुन्शी साहब ने आचार्यों का नाम तो लिखा परन्तु प्रमाण कोई भी नहीं दिया। प्यारे मित्रो! आज तक चारों वेदों का भाष्य केवल सायणाचार्य के और किसी ने नहीं किया शोक कि मुन्शीजी ने उसका भाष्य और भूमिका का दर्शन तक नहीं किया और यूंही लिख दिया कि सब आचार्य उस पर सहमत हैं । देखिये सायणाचार्य ऋग्वेद भाष्य की भूमिका में लिखते हैं देखो सायणभाष्य छापा मुम्बई पृष्ठ ३

जीवविशेषैरग्निवाय्वादित्यैर्वेदानामुत्पादितत्वात् ॥

जीव विशेष अग्नि वायु आदित्य को वेदों का प्रका-शक होने से। महाशय सायणाचार्य खुद ही नहीं लिखता ऐतरेय ब्राह्मण का एक हवाला भी पेश करता है।

ऋग्वेद एवाग्नेरजायत यजुर्वेदो वायोःसामवेद आदित्यादैतरेय ब्राह्मण पञ्जकम् ॥२२॥

क्यों महाशय! क्या सायणाचार्य ब्रह्मा पर वेद उतर-ना मानता है या अग्नि वायु आदि ऋषियों पर, मुन्शीजी ने पुस्तकोंका विचार नहीं किया विना पढे लिखे लिखमारा कि सारे आचार्य इसपर एक मत हैं। मुन्शी जी ने एक भी आ-चार्य का नाम जिसने वेदों पर भाष्य किया हो, अपने प्रमाण में नहीं लिखा मुन्शी जी ने जो 'जनीप्रादुर्भावे' इस धातु को लेकर यह बात लिखी कि अग्नि वायु आ-दित्य ने इनका कर्मकाण्डमें प्रचार किया होगा। यह भी पुस्तकों के न देखने का फल है यदि आप आचार्यों की सम्मति को शास्त्रों में पढ़े होते, तो आप को यह झूठा वहम न होता देखो सायणाचार्य लिखते हैं।

ईश्वरस्याग्न्यादिप्रेरकत्वेन निर्मातृत्वं द्रष्टव्यम् ॥

यहां पर मुन्शीजी का आचार्य तो अग्नि आदिका

प्रेरक होने से ईश्वर को वेदका निर्माता ठहराता है और मुन्शी जी उसके विरुद्ध अपनी कपोल कल्पना से ब्रह्मा से अग्नि वायु आदित्य का पढ़ना बतलाते हैं।

प्यारे पाठकगण! आप न्याय करें कि आचार्य की सम्मति के विरुद्ध स्वामीजी हैं या मुन्शीजी! जब सायणाचार्य चारों वेदों का भाष्यकर्त्ता मुन्शी जी की सम्मति को झूंठी बतला रहा है तो समझ लीजिये कि मुन्शीजी का यह कथन कि सब आचार्य उसपर सहमत हैं ठीक नहीं।

मुन्शीजी ने गायत्री उपनिषद् को भी नहीं देखा नहीं तो ज्ञात हो जाता कि ब्रह्मा वेदों से पैदा होता है अर्थात् वेद के पढ़ने से ब्रह्मा बनता है।

गायत्री उपनिषद्—वेदात् ब्रह्मा भवति ॥

जिसका अर्थ यह है कि वेदों से ब्रह्मा होता है न कि ब्रह्मा से वेद। जब कि अग्नि आदि से तो वेदों की उत्पत्ति मानी जाती है और वेदों से ब्रह्मा की, तो इस दशा में आपका लिखना किसी तरह मानने के योग्य ज्ञात नहीं होता।

पृष्ठ ५ मुन्शीजी ने स्वामीजी का लिखा हुआ शतपथ का एक वाक्यं प्रस्तुत किया है।

अग्नेर्ऋग्वेदोऽजायत वायोर्यजुर्वेदः सूर्य्यात् सामवेदः

मुन्शी जी की इसपर ये शंका है कि 'वै' शब्द श्रुति में नहीं और "सूर्यात्" की जगह आदित्यात् है प्यारे मित्रो! 'वै' और 'एव' पर्याय शब्द हैं और ऐतरेय ब्राह्मण की श्रुति में 'एव' शब्द विद्यमान है जिसके अर्थ निश्चय (यकीन) के हैं फिर आपका कहना किसतरह पर ठीक माना जासकता है क्योंकि सिद्धान्त में तो कुछ भी भेद न आया रहा सूर्य और आदित्य ये भी पर्याय शब्द हैं इससे भी कुछ आपका कार्य सिद्ध न हुआ और जो आप कहते हैं 'अंजायत्' शब्द बढ़ाया है वह भी इस श्रुति में विद्यमान है।

और पृष्ठ १०में मुन्शी जी कहते हैं कि स्वामी जी ने जो अग्नि आदि को महर्षि लिखाहै ये ठीक नहीं क्योंकि वेदोंमें इनको देवता कहा गया है कि जिसके प्रमाण में आप ये मन्त्र पेश करते हैं।

अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता०

मुन्शीजी के इस लेख ने तो विदित करदिया कि सचमुच मुन्शीजी की राय को हठने अपना घर बना लिया था, क्योंकि उन्होंने जड़ वस्तु देवताओं के लिये जो वेदों में प्रमाण था बिना प्रसंग के उपस्थित किया। सायणाचार्य अपने भाष्य में तो अग्नि, वायु और आदित्य को जीव

विशेष बतला रहे हैं परन्तु मुन्शी जी उसके विरुद्ध समझ कर कि न तो चन्द्रमा जीव विशेष है न सूर्य जीव विशेष है किन्तु जड़ पदार्थ हैं उनको जीवों के स्थान में बता रहे हैं किन्तु पृष्ठ २५ में तो मुन्शीजी ने यही मन्त्र उद्धृत करके स्पष्ट लिखा है कि ब्रह्मा जी ने अग्नि वायु सूर्य आदि को पैदा किया क्या ही अच्छा होता कि मुन्शीजी इस लेख के पहिले इस श्रुति के अर्थों को गुरु से पढ़ लेते ।

तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूत आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्या ओषधयः ओषधिभ्योऽन्नम् अन्नाद्रेतः रेतस पुरुषः।

प्यारे मित्रो ! चूंकि ब्रह्मा पुरुष है इस लिये वह अग्नि आदि वसु देवताओं के पीछे पैदा हुआ मुन्शी जी को इतना भी ख्याल न आया कि श्रुति के अनुकूल जल अग्नि के बाद पैदा हुआ और आप के ब्रह्मा जी यमजिव पुराणों के कमल से पैदा हुये तब उनको चारों ओर जल ही जल नज़र आया भला आप सोचिये ब्रह्मा से पहिले जल और जल से पहिले अग्नि था या नहीं महाशय मुन्शीजी साहब जब कि शतपथ में अग्नि वायु आदि रूप से वेदोत्पत्ति सिद्ध है और मनुने भी इसको माना है।

अग्नि वायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम् ।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजुः सामलक्षणम् ॥

ऐतरेय ब्राह्मण भी अग्नि वायु से वेदों का प्रादुर्भाव मानता है और गोपथ ब्राह्मण में भी ऐसा लिखा है ।

अग्नेर्ऋग्वेदं वायोर्यजुर्वेदमादित्यात् सामवेदम् ।

अग्नि से ऋग्वेद पैदा हुआ और वायु से यजुर्वेद और आदित्य से सामवेद पैदा हुआ जिससे स्पष्ट शब्दों में पाया जाता है कि अग्नि वायु आदित्य अङ्गिरा ऋषियों पर वेद उतरे । गोपथ ब्राह्मण में जो सिलसिला (क्रम) ब्रह्म परमात्मा से लेकर अग्नि वायु आदित्य अङ्गिरा तक प्रतिपादन किया गया है उसमें कहीं ब्रह्मा का नाम तक नहीं और अङ्गिरा को तो स्पष्ट शब्दों में ऋषि लिखा है जब कि अथर्व का पैदा या प्रकाश करना अङ्गिरा नामक ऋषि द्वारा है तो फिर किस तरह कहा जासकता है कि अग्नि आदिक ऋषि नहीं हैं और वेदों का प्रकाश सिवाय चेतन के हो नहीं सकता और भौतिक अग्नि वायु आदित्य अचेतन हैं हां अग्नि वायु आदित्य अङ्गिरा के लिये देवता शब्द भी आसकता है क्योंकि देवता विद्वान् का नाम है और भौतिक अग्नि वायु और सूर्य को भी दिव्यगुण वाला होने से देवता कह सकते

है गायत्री उपनिषद् से भी यही पाया जाता है कि वेद से ब्रह्मा बनता है यानी वेदाध्ययन से ब्रह्मा कहलाता है तो इस अवस्था में इन सारे पुस्तकों के प्रमाणों के विरुद्ध उपनिषद् का मुकाबला ही क्या है और उस श्रुति का अर्थ ये हो सकता है :—

यो वै ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै

जिसने ब्रह्मा को पूर्व काल में पैदा किया यानी चारों वेद अग्नि आदि के द्वारा उसको पढ़ा कर ब्रह्मा बनाया। अन्यथा वेदों के बिना तो वह ब्रह्मा हो नहीं सकता और पूर्व शब्द सापेक्ष्य है चूंकि श्वेताश्वतर के बनाने वाले से ब्रह्मा पहिले पैदा हुए इसी वास्ते इसके ये अर्थ नहीं कि वो सब से पहिले पैदा हुवे इसके वास्ते कोई मन्त्र प्रमाण नहीं

ब्रह्मा देवानां प्रथमो बभूव।

ब्रह्मा देवतों में पहिले पदा हुआ जिसके प्रथम अर्थ होने के हैं जैसे किसी की योग्यता को देखकर कहा जाता है ये सबसे प्रथम है इसके अर्थ ये होते हैं कि ये सबसे योग्य है ब्रह्मा सम्पूर्ण विद्वानों से अधिक विद्वान् है इस वास्ते कहा गया कि ब्रह्मा देवतों में अव्वल नम्बर पर है या संसार में जिस कदर विद्वान् होंगे ब्रह्मा उन सब का शिखामणि होगा क्योंकि ब्रह्मा चारों वेद का ज्ञाता होता

है बाकी इससे कम होंगे इस वास्ते यह प्रथम मनुष्य का वाचक नहीं किन्तु योग्यता का बतलाने वाला है।

और आपने जो धातु का अर्थ उलटा किया है ये आपकी जबरदस्ती है, धातु के अनेक अर्थ होने से क्या कोई विरुद्ध अर्थ भी निकाल सकता है क्या कहीं दुह धातु दानार्थ आज तक किसी ने प्रयोग की है यदि की है तो उसका उदाहरण दीजिए वरना इस झूंठे दावे से बाज़ आइए यद्यपि व्याकरण में धातु यानी मसदर के अनेक अर्थ होते हैं परन्तु वे परस्पर विरुद्ध नहीं होसकते चूंकि देना और लेना परस्पर विरुद्ध हैं। कौन आदमी है जिसको कहा जावे कि गाय से दूध दुहा गया और अर्थ यह लिए जावें कि गाय को दूध दिया मुन्शी जी ! यहां कुल्लुक भट्ट और स्वामी जी का अर्थ ठीक है और पञ्चमी विभक्ति है। आपने जो शास्त्रज्ञानशून्य होकर लिख मारा ये आपकी भूल है और आपने जो पाराशर सूत्र आदि के प्रमाण दिए हैं वह एक दूसरे के विरुद्ध होने से प्रमाण नहीं और असम्भव भी हैं क्योंकि कहीं आप सूर्य को पृष्ठ २६ पर ब्रह्मा जी का बेटा ठहराते हैं और कहीं पृष्ठ २७ में ब्रह्माजी के बेटे का दौहित्र बतलाते हैं। मुन्शी जी साहब ने जो ये लिखा है

कि अग्नि आदि की उत्पत्ति से पहिले ब्रह्माजीके पास वेद थे तो इसके लिए प्रमाण देना चाहिए नहीं तो आपका कहना कोई प्रमाण नहीं, और जो सांख्य का सूत्र आपने उपस्थित किया है वो ब्रह्मा को सृष्टि का आदि नहीं बतलाता किन्तु उसके ज्ञानवान् होने से तात्पर्य है सूत्र ये है—

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं तत्कृते सृष्टिराविवेकात् ।

जिसका प्रयोजन यह है अर्थात् उच्चकोटि के ज्ञानी चारों वेदों के वक्ता ब्रह्मा से लेकर स्थावर तक जिस कदर सृष्टि है वो सब पुरुष के लिये है रही ये बात कि ब्रह्मा ने ब्रह्म विद्या अथर्वा आदि को पढ़ाई है उसका प्रयोजन यह है कि ब्रह्मविद्या से अभिप्राय उपनिषदों से है वेदों से नहीं क्योंकि ये ब्रह्मादि ने ब्राह्मण ग्रन्थ बनाए और उपनिषद भी ब्राह्मण ग्रन्थों से निकले जैसे बृहदारण्यक उपनिषद शतपथ ब्राह्मण का एक कांड है इसलिए ये ग्रन्थ ब्रह्माजी ने ऋषियों को पढ़ाए मुन्शीजी ने जो प्रस्ताव किया ह वो सरासर ऐतरेय ब्राह्मण के विरुद्ध है और सायणाचार्य्य की भी सम्मति के विपरीत है और गायत्री उपनिषद शतपथ के विरुद्ध होने से निश्चय अशुद्ध है।

और मुन्शी जी जो संज्ञा या नाम आदि का कारण

ब्रह्मा को मानकर ये लिखते हैं कि अग्नि वायु आदित्य आदि नाम ब्रह्मा जी ने रक्खे। ये स्पष्ट प्रसिद्ध है संज्ञा कर्म ब्राह्मण ग्रन्थों में है जैसा कि महर्षि कणाद वैशेषिक शास्त्र में लिखते हैं :....

ब्राह्मणे संज्ञा कर्म०

अर्थात् संज्ञा आदि का प्रचार ब्राह्मण ग्रन्थों में है यदि मुन्शीजी ये कहें कि ब्रह्मा से पहिले अग्नि वायु आदित्य नाम किसने रक्खे हैं तो मैं कहता हूं "ब्रह्मा" यह नाम किस तरह रक्खा गया यह शंका दोनों तर्फ बराबर है

शोक! मुन्शीजी को लिखते समय आग्रह के कारण आगा पीछा स्मरण न रहा एक जगह खुद अग्नि को तपस्वी लिखा और दूसरी जगह उनके ऋषि होने पर शंका की और कहा कि वेदोंमें देवता माने गये हैं ऋषि नहीं ॥

प्यारे पाठकगण। इसी तरह पर आदमी जब तक किसी वस्तु के तत्व को न जाने तब तक उसे यथार्थता से उसका ज्ञान नहीं होता और जब तक ठीक ज्ञान न हो तब तक उस पर अमल नहीं होसकता है और जब तक अमल नहो तबतक आत्माको शान्ति नहीं होती, जब तक आत्मा को शान्ति न हो तब तक मनुष्य हठ और दुराग्रह से बच

नहीं सकता और उसको पुराने संस्कारों के अनुकूल सदैव अविद्या से कष्ट होता है और दूसरे जो अविद्या से स्वार्थता उत्पन्न होजाती है उसकी चिकित्सा भी विद्या है मैंने जहां तक पुस्तकों को देखा तो उनमें अग्नि वायु अङ्गिरा आदित्य पर ही वेदों का उतरना बताया गया है और ये ठीक भी है कि जो ऋषि सृष्टि के आदि में पैदा होते हैं उनको मुक्ति से लौटने के कारण शुद्ध संस्कार और समझने की शक्ति होती है और इन्हीं के आत्मा में परमात्मा वेदोंका उपदेश करते हैं और ब्रह्मातो चारों वेदों के जानने वालेका नाम है वो हर एक यज्ञ में अपनी योग्यतानुसार बनाया जाता है इस वास्ते ब्रह्मा के सदैव बनने से और अग्नि आदि के सृष्टि के आदि में पैदा होने से मालूम होता है कि वेदों का प्रकाश इन्हीं महात्माओं पर हुआ इस वास्ते वेदों के हर एक भाष्यकार ने वेदों का अग्नि वायु आदित्य अङ्गिरा ऋषियों पर उतरना माना है ब्रह्मा पर नहीं ॥

प्यारे पाठकगण ! जब तक हमें प्रामाणिक ग्रन्थों से इस बात का प्रमाण न मिल जावे तो किस तरह कोई बुद्धिमान पुरुष उसको मान सकता है और वेदानुकूल

प्रामाणिक ग्रन्थोंमें ब्रह्मा पर वेदों के उतरने का कहीं गन्ध भी नहीं इस लिये स्वीकार करना पड़ता है कि वेद अग्नि वायु आदित्य अङ्गिरा पर उतरे जब तक विपक्षी लोग कोई पुष्ट प्रमाण उसके खण्डन में न देवें निस्सन्देह प्रत्येक मनुष्य को ये ही मानना पड़ता है ॥

प्यारे पाठकगण! आप उद्योग करें कि संसार में वेदों का प्रचार अधिक हो ताकि वेद के वे सिद्धान्त जो आज साधारण लोगों पर विदित न होने से उपयोगी होने पर भी संसार को लाभ नहीं पहुंचा सक्ते उनसे संसार को लाभ पहुंचाने और लोग वेदोंके अभ्यास से अपनी बुद्धि को सुधार कर अपनी आत्मा की शान्ति को प्राप्त करके संसार की स्वार्थ आदि व्याधियों से बच कर संसार में परोपकार करते हुए अन्त को मुक्ति सुख को प्राप्त करें।

ओ३म शान्तिः ३

देखने योग्य पुस्तकें।

विवाहादर्श–इस में विवाह का मुख्य गौण भेद भिन्न २ देशों की विवाह रीति वैदिक विवाहकी श्रेष्ठता बालविवाह से हानियाँ स्वयम्बर कोर्ट शिप गर्भाधान आदिका सप्रमाण विवेचन है। मूल्य १)

जीवन–इस पुस्तक में मनुष्य जीवन का उद्देश्य भली भाँति दर्शाया है। मूल्य ।।) नीति शतक ।)

दृष्टान्त समुच्चय–इस पुस्तककी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है इस में शिक्षा युक्त १६४ दृष्टान्त हैं जो व्याख्यान के हर एक विषय में दाईं बांहका काम देतेहैं इसकी प्रशंसा सरस्वती अगस्त १६१४में देखो मू०१=) मनुस्मृति भाष्य १)

ध्यान योग प्रकाश–इस में योग और उस की क्रियायें आसन सृष्टि क्रम आदि का अच्छा निरूपण है। मू० १।)

हिन्दू आर्य और नमस्ते का अनुसन्धान–इस पुस्तक को स्वर्गवासी श्री पं०लेखरामजीने बड़े परिश्रमसे लिखा है -)॥

सिक्खों के दश गुरु–धर्मगुरु वीर चक्र चूड़ामणि नानक गुरु गोविन्दसिंह आदि दशगुरुओंका नाम किसने नहीं सुना कौन हिंदू इनका कृतज्ञ नहीं है उनहीं का विलक्षण चरित्र है मूल्य ॥) आना है।

स्वामी विरजानन्द जी प्रज्ञाचक्षु का जीवन चरित्र -)

श्री स्वामी दर्शनानन्द जी के पुस्तक

न्याय दर्शन भाषा भाष्य मूल्य १।) वैशेषिक दर्शन मूल्य १।) सांख्य दर्शन कपिल प्रणीत भाषा भाष्य मूल्य ।।।) उपरोक्त तीनों शास्त्र एक साथ लेने से २।।) में मिलेंगे।

उक्त स्वामी जी के अन्य पुस्तकें।

ईसाई मत परीक्षा)। उन्नीसवीं सदी का सच्चा बलिदान)। धर्मशिक्षा)। मुक्ति और पुनरावृत्ति -)। भोंदू जाट और एक डाक्टर पादरी साहब का मुबाहिसा =) वेद किस पर प्रकट हुवे)॥ वेदों की आवश्यकता)॥ बालशिक्षा)॥ महाअन्धेर रात्रि)। गुरुकुल)। मोहमुद्गर)। भोगवाद)। श्राद्ध व्यवस्था)। कलयुगी आचार्य्य)। अविद्या का प्रथम अंग)। दूसरा अंग)। स्थावर में जीव विचार)। षट्शास्त्रों की उत्पत्ति)। स्वामी दयानन्द का उद्देश्य)। कनकुकवे गुरु बैल की पूंछ)। आत्मिकबल)। आत्मिक शिक्षा)। ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र की व्याख्या)। ईश्वर विचार प्रथम भाग)। द्वितीयभाग)। ईश्वर प्राप्ति प्रथम भाग)। द्वितीय भाग)। तृतीय भाग)। क्या वेदों के पढ़ने का सबको अधिकार नहीं है)। कोपीन पंचक)। रामायण सार)। जैनी पंडितों से प्रश्न)। धाखे बाजी से बचो)। हिन्दुस्तान की तबा ही)। ईसाई विद्वानोंसे प्रश्न मू०)। ईसाई मत में मुक्ति असंभव है मूल्य)। आर्य समाज क्याहै मूल्य)॥ मांस मत खाओ)॥

पुस्तक मिलने का पता

पंडित शंकरदत्तशर्मा वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद

॥ ओ३म् ॥

ट्रेक्ट नम्बर ७

ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र की व्याख्या

जिस को

स्वामी दर्शनानंद सरस्वती जी ने

दयानन्द ट्रेक्ट सोसाइटी के हितार्थ रच कर

महाविद्यालय मैशीन प्रेस

ज्वालापुर हरिद्वार में

प्रकाशित किया

—=+:※:+=—

४००० प्रति] [मूल्य)।

॥ ओ३म् ॥

ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र की

व्याख्या

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ॥ ऋ० १ ॥

प्यारे पाठकगण ! यह वह मंत्र है कि जिसके कारण से वहुत से अल्पज्ञ यूरोपियों ने आर्य्यों को प्रकृती उपासक सिद्ध किया है और बतलाया है कि आर्य्यों के पितर अग्नि वायु इत्यादि भूतों को ईश्वर माना करते थे और उन्हीं से प्रार्थना किया करते थे अर्थात् वरदान मांगा करते थे क्योंकि आजकल भारत वर्ष में वेदों के जाननेवाले और उनका ठीक अर्थ करके उनके गौरव के गौरव को प्रकट करनेवाले महात्मा कम रहगये और द्वितीय वेदों की पुरानी व्याख्या अर्थात् शाखायें जो कि ११३१ के लगभग थीं लोप होगईं इस समय लगभग आठ नौ का पितर मिलता है शेष का नाम तक मुश्किल से ज्ञात होता है दूसरी तरफ जटा, माला, पद गहन कर्म इत्यादि की रीति से भी अर्थ करने की रीति नष्ट होगई और वेदांगों का पढना पढाना भी नष्ट होगया केवल थोडे से

मनुष्य व्याकरण पढते हुए दृष्टिगोचर आते हैं इस के अतिरिक्त यूनीवर्सिटी की खराब शिक्षा ने वेदों के गौरव को बहुत बडा धक्का पहुंचाया बी.ए. तक शिक्षा में वेदांगों का नाम नहीं केवल काव्य इत्यादि की शिक्षा दी जाती है आगे चलकर वेद का सायण भाष्य पढाया जाता है जो उस समय का बना हुआ है जिससे वेद विद्या का प्रचार बहुत कम होगया था, पुनः उस भाष्य को ठीक पढाने वाले नहीं जो पढाने वाले हैं वह प्रायः विरुद्ध मत के और वेद वेदांगों से अनभिज्ञ थे वह विद्यार्थियों (तालीम-याफ्ता नौ जवानों) को इस ढंग से शिक्षा देते हैं कारण उनके अन्तःकरण में जिससे वेदों की प्रतिष्ठा के स्थान में अप्रतिष्ठा स्थिर होजाती है और वह वेदों को इंजील इत्यादि की तरह व्यर्थ कहानियों का समूह समझने लगजाते हैं पढेहुए लोग तो यों वेदों से अलग होगये और विना पढे तो न पढे न उनको महत्व ज्ञात हुआ अर्थात् वर्त्तमान समय में वेदों की अप्रतिष्ठा होने का कारण दो बातें दृष्टि गोचर आरही हैं अतः अब हम श्रम करेंगे कि कम से कम पचास मंत्रों की ठीक २ व्याख्या करके सामान्य मनुष्यों को जतलाना चाहते हैं कि वेदों में व्यर्थ कहानियां नहीं हैं किन्तु कुल विद्यायें मौजूद हैं और उनमें प्रकृती की उपासना का जिक्र है किन्तु प्रकृती के तत्व स्वरूप को बतलाया है और जिन लोगों ने अर्थात् मेक्समूलर वगैरः ने इन बातों को इस तरह बतलाया है कि जिससे वेदों

की अप्रतिष्ठा होती है यह उन के या तो अज्ञान का दोष है या ईसाई धर्म का अनुयायी होने से पक्षपात का कारण है वरन कोई समझदार आदमी जिसको वेदांगों की माहीति ज्ञात हो और साथ ही पक्षपात भी न रखता हो तो कभी वेदों के बारे में ऐसी मति नहीं दे सकता जैसी कि वर्तमान काल में कोई २ अल्पज्ञ यूरोप के वासी देरहे हैं यद्यपि यूरूपवालों ने जिन्होंने वेदों के बनाने इत्यादि की तारीख स्थापित की हैं उस की अशुद्धी भी बतलानी आवश्यक है परन्तु वह किसी दूसरी जगह बतलाई जावेगी।

प्यारे पाठकगण वेदों के दो प्रकार के अर्थ होते हैं एक अध्यात्मिक दूसरे भौतिक अब हम मंत्र के दोनों प्रकार के अर्थ बतलायेंगे यह स्मरण रहे कि ऋग्वेद पदार्थों के स्वरूप अर्थात् लक्षण को वर्णन करता है और ऋचा का अर्थ स्तुति अर्थात् तारीफ के हैं परन्तु किसी २ ने स्तुति से यह संकेत किया है कि किसी की झूंठी बड़ाई बतलाई जावे परन्तु यहां स्तुति से वही संकेत है जो रेखा गणित अर्थात् ज्योतिष की पुस्तकों में रेखा इत्यादि की स्तुति से संकेत है अर्थात् उसकी वही स्तुति कीजावे जो उसको दूसरी वस्तुओं से पृथक करदे जिसको संस्कृत में लक्षण के नाम से प्रगट कियागया है और अंगरेजी में डेफीनेशन कहा जाता है और फारसी में तारीफ कहते हैं।

भ्रातृगण इस मंत्र में जो ऋग्वेद का सबसे पहला मंत्र है ईश्वर जीवों को अग्नि का लक्षण बतलाते हैं क्योंकि अग्नि सब

से उत्तम ओर मनुष्यों के लिये आवश्यक वस्तु है और विना इसके दूसरे भूतों की सिद्धी और उसके गुणों का प्रकाश नहीं होसकता अतः अग्नि की तारीफ सब से पहले बतलानी आवश्यक समझीगई—और दूसरे अध्यात्मिक अर्थ में अग्नि ईश्वर के अर्थ में भी आया है इसलिये भी इसको पहले बतलाना आवश्यक ज्ञात होता है।

आर्य्यगण इस मंत्र में सात पद हैं १ अग्निम् २ ईळे ३ पुरोहितम् ४ यज्ञस्य ५ देवम् ६ ऋत्विजम् ७ होतारं रत्नधातमम् पहले दो पद में तो यह बतलायागया है कि हम अग्नी की तारीफ करते हैं अर्थात् (अग्निम्) अग्नी की (ईळे) स्तुति करता हूं इसके आगे अग्नि की स्तुति है पहला पद यह है पुरोहित अर्थात् अग्नी दूसरों की हितकारक है अब आप देखलीजिये कि यदि अग्नि का बीज सूर्य्य वर्तमान न हो तो मनुष्य किस प्रकार काम करसकता है किस प्रकार शिक्षा पासकते हैं अर्थात् मनुष्य की सब से प्रथम इन्द्री (चक्षु) विना अग्नी के निकम्मी होजाती है अर्थात् विना अग्नी की सहायता के मनुष्य आंख होते हुए भी अंधा है दूसरी तरफ जठराग्नि अपना काम बन्द करदे तो मनुष्य के अन्दर पाचनशक्ती [हाजमा] बिलकुल गिरजावे और साथ ही खून की चाल बन्द होजावे जिससे शरीर का बढना नितान्त बन्द होजावेगा अर्थात् विना अग्नी के मनुष्य जीवित दशा में भी मुर्दा समझा जावेगा और वह किसी काम के योग्य नहीं रहेगा—तीसरे वृक्षों को देख लीजिये

उसमें भी सूर्य की किरणों से आई हुई अग्नी नीचे से जो पानी खींचने का काम करती है यदि बन्द होजावे तो वृक्षों का बढ़ना नितान्त रुकजावेगा गोया वृक्षों के लिये बढ़ाने का सामान नितान्त अग्नी है चोथे यदि वायु गन्दी होजाय तो उसके शुद्ध करने की चिकित्सा हे कि अग्नी जलाओ तत्काल वायु शुद्ध होजावेगी आप लोगों ने अकसर सुना होगा कि जिस मकान में चिराग नहीं जलायाजाता और वह बन्द रहता है तो उसमें भूत इत्यादि आज़ाते हैं लेकिन इसका मतलब यह है कि जिस मकान में बन्द रहने से—सूर्य्य की किरणें न जाने से और चिराग जलने से अग्नी का काम छूटजाता है वहां की वायु नितान्त गन्दी और मनुष्य के लिये हानिकारक होजाती है और उसमकान में जब तक हवन न किया जावे तब तक वह मकान रहने के योग्य नहीं. इसी लिये आर्यों के प्रत्येक काम में हवन का होना मुख्य बतलाया गया है. पांचवें अगर पानी खराब हो तो उसकी चिकित्सा अग्नी पर पकाना है उस की दुर्गन्धि जाती रहती है और अगर कोई मिट्टी की चीजभी गन्दी होजावे तो वह भी अग्नी में जलाने से शुद्ध होसकती अर्थात् प्रत्येक पदार्थ की शुद्धि अग्नि के आधीन है अतः अग्नि को पुरोहित कहागया—

प्यारे पाठकगण संसार में पुरोहित और यजमान शब्द का प्रचार हुआ वह भी इस ही से लिया गया क्यों कि जो

यजमान का हितकरे वह पुरोहित कहलता है क्योंकि प्राचीन समय में ब्राह्मण क्षत्री इत्यादि तीनं वर्णोंको यथार्थ ज्ञान और धर्मोपदेश के द्वारा से उन्नति किया करते थे इस लिये उनको भी पुरोहित कहने लगे, वह सर्वदा यजमान के अज्ञान को ज्ञान से और बुरे कर्मों के संस्कारों को अपने कर्मों के नमूने से दूर रक्खा करते थे इसी प्रकार संस्कारों में अग्नी भूतों के रूपके प्रकाश से और उनकी दुर्गन्धि को अपनी गर्मी और योगिक शक्ती द्वारा नाश करने से वह पुरोहित कहलाती है,

(यज्ञयस्यदेवम्) यज धातु का अर्थ देवपूजा और संगतिकरण दान है, और संगति करण देव पूजा से मतलब है अग्नी संयोग करने में देवता. आप प्रश्न करेंगे कि अग्नी सम्मिलान का देवता कैसे है परन्तु स्मरण रहे कि जिस कदर मोटे पदार्थ मिलाये जायंगे उसी कदर जल्दी अलग हो जायंगे पदार्थों का सब से उत्तम संयोग वह कहला सकता है जो परमाणु करके मिलाया जावे अब आप समझ लीजिये कि परमाणु करना सिवाय अग्नी के किसकी शक्ती में है, घी कहां से आता है पशुओं के दूध से दूध कहां से आता है खुराक से प्रायः मनुष्य इस पर शंका करेंगे, लेकिन हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि जिस गाय को जियादा खली खिलाई जावे उसका दूध जियादा हो जावेगा और जिसको विनोले सियादा खिलाये जांयगे उसके दूध में घी जियादा होगा जब मालूम होगया कि दूध वा घी वनस्पति से पैदा

हुआ है पशु केवल एक यन्त्र है तो वनस्पति से घी निकालते हैं और वनस्पति में कहां से आता है वर्षा से वर्षा बादल से होती है जब तक बादल में घी विराजमान न हो तो उसके उत्पन्न होने का चक्र चल नहीं सकता अब स्थूल घृत तो बादल में जा ही नहीं सकता, वह सूक्ष्म परमाणु होकर जायेगा. अग्नी का काम है वह बादल में घी मिलादे अतः कहाजाता है यद्यपि संसार के और पदार्थ भी इसी प्रकार अग्नी के कारण अपनी आवश्यकता को प्राप्त करते हैं लेकिन वह सूर्य की किरणों से काम लेते हैं, जिसको सामान्य मनुष्य नहीं समझ सकते अतः सृष्टि नियम यह दृष्टान्त रखदिया (रिन्विजम्) अर्थात् ऋतुओं के पैदा करने वाली भी अग्नी है आप जो गर्मी सर्दी वर्षा वसन्त इत्यादि ऋतुओं को मालूम करते हैं उसके पैदा करने वाली भी अग्नी है अर्थात् ये सारी ऋतुयें अग्नी के पुंज सूर्य की गर्दिश से पैदा होते हैं जैसे जब सूर्य हमारे शिरपर होता है तो उसकी किरणें सीधी पडती हैं उस समय पानी के परमाणु सूर्य की आकर्षण शक्ती से अधिक उडते हैं इस लिये मनुष्य को पानी की इच्छा अधिक मालूम होती है यही गर्मी है और संसार में भी पानी के अधिक खींचे जाने से खुश्की छाजाती है और जमीन के नीचे तक सूर्य की किरणें पानी निकालने के लिये जाती है उस समय वह वृक्ष जिनकी जड गहरी है उनको पानी मिलता रहता है वह हरे रहते हैं और जिनकी जड बहुत कम

गहरी हैं वह सूखने लगते हैं या तो बराबर पानी दिया जावे या सूख जोत हैं बस इसी का नाम ग्रीष्म ऋतु है जब पानी की आवसकता अधिक हो अब सूर्य्य दक्षिण की ओर जाने लगा अर्थात् दक्षिणायण होगया अब किरण तिरछी पडने लगी उन की आकरपण शक्ती भी निर्बल हो चली अब वह पानी जो सीधी किरणों से ऊपर चला गया था पृथ्वी की आकरपण शक्ती से नीचे गिरने लगा पहले तो सूर्य्य की ओर जारहा था अब पृथ्वी की ओर आने लगा अब ये वर्षा हो गई यद्यपि सूर्य्य और पृथ्वी सर्वदा प्रत्येक वस्तु को अपनी तर्फ खींचा करते हैं परन्तु सृष्टि नीयम ने ऐसा चक्कर (इस्थिर) कर दिया है कि सूर्य्य गर्मी के दिनों में पृथ्वी से बहुत अधिक आकर्षण शक्ती रखता था अब अपनी किरणों के टेढी होजाने से अल्प शक्तीमान होगया और उसने जो जल पृथ्वी से छीनलिया था अब वह वापिस देना पडा इसके पश्चात् सूर्य्य और भी दक्षिणायण हुआ और किरणें अधिक तिरछी हो गई अब पानी बहुत कम उडने लगा और बडे २ वृक्षों की जडों तक किरणों की शक्ती निर्बल पहुं-चने लगा यह शर्द ऋतु कहलाती है चन्द्रोज बाद सूर्य और भी दक्षिणायण होगया अवतो किरणें बिलकुल कमजोर होगई पानी जम कर बर्फ बनने लगा बडे २ वृक्षों के पत्ते सूख कर गिरने लगे क्योंकि नीचे से तो किरणों की निरबलता के कारण पानी आना बंद होगया और उधर से कुछ न कुछ कम होता

रहा निदान पानी की आय न रही और व्यय बराबर होने से वृक्ष सूख गए इसी का नाम हेमन्त ऋतु है— इसके पश्चात् सूर्य फिर उत्तरायण आना आरम्भ हुवा किरणें बलवान होने लगीं वृक्षों की जडों के नीचे से पानी आने लगा और वृक्षों की नई२ कोंपें और पत्ते निकलने लगे प्रत्येक तर्फ वृक्षों पर नवीन सिरे से जवानी आने लगी चंद्रोज में कुल वृक्ष हरे भरे होगये यह वसन्त ऋतु कहलाती है इस के पश्चात् सूर्य और भी उत्तरायण होगया ऋतु में गर्मी ज्ञात होने लगी बडे वृक्षों में और भी वृद्धी आरम्भ हुई छोटे पौदे जड से थोडे गहराव से सूखने लगे अर्थात् ग्रीष्म ऋतु आगई ॥

प्यारे पाठक गण पूर्वोक्त वृतान्त से अच्छे प्रकार ज्ञात होगया होगा कि ऋतुओं का जन्म या विकार केवल अग्नि के कारण (हैं) (होतारम्) अग्नि होता है-होता कहते हैं हवन करने वाले को बतायोंकि यह संसार एक बडा भारी हवन कुण्ड है और उसमें जितने पदार्थ हैं वे सब हवन की सामग्री हैं और अग्नि इसका हवन करके पदार्थों के परमाण अलग अलग करके उडाता रहता है जिस प्रकार होता जल आदिक शुद्धी के वास्ते पदार्थों के परमाणु करके आकाश में फैलाता है उसी तरह अग्नि संसार की वनस्पती को हवन करती है

प्यारे पाठकगण आप देखते हैं कि अभी एक फूल सुगन्धित

हराभरा मौजूद था थोडीही देर के पश्चात उस का रंग बदलगया सुगन्ध कम होगई सूखजाने से बोझ भी कम होगया परन्तु लोग नहीं समझते कि फूल किस प्रकार शुष्क होगया सुगन्ध किस प्रकार नष्ट होगई ॥

परन्तु समझदार आदमी समझते हैं कि अग्नि ने फूल में से सुगंधि के परमाणु जिनसे वो हरे भरे थे अलग करदिये और वह सुगंधि आकाश में फैलगई और उससे जलादिकों को शुद्धी प्राप्त होगई जब आप सुगंधित वस्तु को देखते या सूंघते हैं तो उस जगह अग्नि उसके परमाणु को अलग करती और वायु उसको आपकी नाक तक पहुंचा देती है तब आपको सुगंध का ज्ञान होता है यहां पर स्पष्ट ज्ञात होगया कि पदार्थों की दशा में परिवर्त्तन पैदा करनेवाली अर्थात् उसको परमाणु बनाकर उडानेवाली अग्नि है।

[रत्न धातमम्] रत्नों को धारण करनेवाली अर्थात् रत्नों को उत्पन्न करने का कारण भी अग्नी है।

प्यारे पाठकगण यह जो आप चांदी सोना हीरालाल नीलम पुखराज इत्यादि बहुत प्रकार के चमकदार रत्न देखते हैं ये सभी अग्नी के कारण से उत्पन्न होते हैं इनके अन्दर जितनी चमक है वह सब अग्नी के कारण से है क्योंकि अग्नी के विना कोई तत्व चमकदार नहीं रहता जहां पर आप चमक देखें उसे अग्नि के कारण से समझें—जब वर्फ पर अग्नि की किरणें पडती

रहती है और वह चिरकाल के पश्चात् किरणों से ढलती नहीं तो वह बिल्लौर बनजाती है और इसी तरह पर अकीक, नीलम पुखराज, हीरा, लाल, इत्यादि होजाते हैं।

प्यारे पाठकगण अब आप समझलीजिये कि इस वेद मंत्र में पांच विद्याओं का बीज रक्खागया था लेकिन अल्प बुद्धि लोगों ने तो उसको समझा नहीं और कहने लगे कि वेद चरवाहों के गीत हैं क्या कोई मनुष्य है जो पांच शब्दों में पांच विद्याओं का उपदेश करले, पहली विद्या यह है कि संसार के पदार्थों की शुद्धी किस तरह होसकती है और संसार के पदार्थ बढते किस तरह हैं और संसार के जीवों का हितकारक कौन है किसके जरिये से आंख काम कर सकती है किसके कारण से खून हरकत करता है किस के कारण से भूख और प्यास लगती है और किसके बिगडने से शरीर की संपूर्ण शक्ति रद्दी होजाती हैं, इन सब बातों का उत्तर था कि अग्नी के कारण से ये सारे काम संसार में होते हैं. दूसरे विद्याके ठीक मिलान करने का कौनसा कारण है, या यज्ञका कौन देवता है जिसके कारण से सारे देवता प्रसन्न होजाते हैं अर्थात् कौन एक सब देवताओं को मनुष्य के लिये सुखकारी बना सकता है उसका उत्तर दिया गया कि देवता अग्नी है अग्नी सब पदार्थों को तुम्हारे लिये सुखकारक बना सकती है, एकतो प्रकाशद्वारा उनका गुण जतलाकर दूसरे गर्मी द्वारा उनको शुद्ध करके तीसरे विद्या-ऋतु क्योंकर पैदा

होती और बदलती हैं किस प्रकार वह जगत् जो अग्नि के प्रकार गर्म है नितान्त ठंडा होजाता है कि जहां रुईदार कपडा ओढे बिना आराम नहीं मिलता जहां पर नितान्त सूखा था, वहां पर जल ही जल होजाता है या एक समय सम्पूर्ण पेड पत्तों से नितान्त खाली होगये वह पुनरपि हरेभरे होकर नये जीवन में आजाते हैं इन ऋतुओं का पैदा होना किस शक्ती से होता है, उत्तर मिला अग्नी से अर्थात् अग्नी के कारण से संपूर्ण विकल्प [तबादला] संसार में होता है अगर अग्नी न होती तो ऋतुओं का बदलना और पदार्थों का संयोग ठीक कभी भी न हो सकता [चौथे विद्या] संसार में कौन ऐसी बात है जो प्रत्येक पदार्थ की दशा को बदल देती है, उत्तर मिला अग्नी है, पांचवें धातु और रत्न जो चमकदार पदार्थ हैं किस शक्ती से पैदा होते हैं, जवाब मिला अग्नी की शक्ती की शक्ती से।

ओ३म् शांतिः शांतिः शांतिः
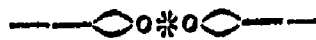
दयानन्द ट्रेक्ट सोसाइटी के सामान्य नियम

१—इस टरेक्ट सोसाइटी का आशय ऋषि-दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार करना और वेद मन्त्रों के शब्दों को सरल भाषा में व्याख्या करके और दर्शनों के प्रत्येक सूत्र पर एक टरेक्ट लिख कर उन के आशय को अच्छी तरह समझा कर आर्य पुरुषों को इस लायक बनाना है कि वह वैदिकधर्म के विरोधी के मुकाबले में स्वयं काम चला सकें बाहर से सहायता की आवश्यकता न रहे ॥

२—यह टरेक्ट सोसाइटी एक वर्ष में १६ पृष्ठ के) वाले ३६० टरेक्ट प्रकाशित किया करेगी जिस में वेद मन्त्रों की व्याख्या एक

टरेक्ट में एक मन्त्र १२५ दर्शनों के सूत्रों की व्याख्या एक टरेक्ट में एक सूत्र १२५ आर्य सिद्धान्तों पर विचार २५ टरेक्ट (मुख़ालिफ़ान) वैदिकधर्म के जवाब मे ७५ आर्यसमाज के सुधार पर १० टरेक्ट ॥

३—जो मनुष्य इस टरेक्ट सोसाइटी के ग्राहक बनकर सहायता देंगे उन को १० दिन के पीछे इकट्ठे १० टरेक्ट)॥ के टिकट में भेजदिये जावेंगे जिस जगह १० ग्राहक होंगे उन को नित्य प्रति रवाना किये जावेंगे जिस ज़िले में १० समाजें १० टरेक्ट रोजाना लेने वाले होंगे या जिस ज़िले में १०० ग्राहक रोजाना टरेक्टके होंगे उस ज़िले को एक उपदेशक टरेक्ट सोसाइटी की ओर से विना वेतन के दिया जायगा ॥

ओ३म्

महा विद्यालय

में गुरुकुल, अनाथालय, उपदेशक पाठशाला, साधू आश्रम, गौशाला, आर्टस्कूल; इत्यादि उपस्थित हैं ॥

ओ३म्

टेरेक्ट नम्बर १९

स्वामी दयानन्द का उद्देश

जिसको

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी की आज्ञानुसार
प्रवन्धकर्त्ता दयानन्द ट्रैक्ट सोसाइटी ने
महाविद्यालय मैशीन प्रेस ज्वालापुर में छपवाया.

मिलने का पता—

दयानन्द ट्रैक्टसोसाइटी
(दफ्तर) स्टेशन केसामने
बाजार हरिद्वार.

४००० प्रति] [मूल्य ३ पाई.

ओ३म्

महा विद्यालय

में गुरुकुल, अनाथालय, उपदेशक पाठशाला, साधूआश्रम, गौशाला, आर्टस्कूल; इत्यादि उपस्थित हैं ॥

ओ३म्

स्वामी दयानन्द

और उन का उद्देश्य

प्रिय वर पाठक ! आप महाशयों ने श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी का नामतो अवश्य सुना होगा उन के निर्मित किये हुवे वेद भाष्य व अन्यान्य पुस्तकों को भी कदाचित देखने का अवसर मिला हो यदि आप आर्य समाज के मेम्बर हैं तब तो आप को उन की व्यवस्था से भली प्रकार भिज्ञता होगी परन्तु इतने परभी क्या आपने श्री स्वामी जी के मुख्य उद्देश्य या सदुपदेशों का प्रयोजन यथोचित समझ लिया है मुझे जहां तक कि इस में २६ वर्ष सामाजिक आयु को व्यतीत कर तजरबा से मालूम हुआ है और उस में सफलता हुई है मैं कहसक्ता हूं कि मुझे अति न्यून संख्या ऐसे मनुष्यों की दृष्टि गोचर होती है जो उस महर्षी के मन्तव्यों को भली भांति समझे हों- बहुत से लोग स्वामी जी को भारत वर्ष का हितैषी मानते हैं कुछेक उन को हिन्दू रिफार्मर ठहराते हैं अनेक महाशय उन

को देशोद्धारक जानते हैं परन्तु मेरी सम्मति से एक महात्मा सन्यासी के विषय में ऐसा कहना मानो उसको उसके धर्म्म से पदोच्युत कर देना है क्यों कि सन्यासी का धर्म सारे संसार का उपकार करना और प्रत्येक को समान दृष्टि से देखना है यदि स्वामी दयानन्द केवल भारत वर्ष के हितैषी थे तो अन्य देशों के वे अवश्य अशुभ चिंतक होंगे जो सर्वथा मिथ्या है यदि हिन्दू रिफार्मर थे तो हिन्दू जाति से प्रीति और अन्य से घृणा होगी परन्तु यह प्रत्यक्ष रूप से अल्प बुद्धि जनो के मन्तव्य हो सक्ते हैं वास्तव में वह महर्षि एक सच्चा सन्यासी था और सारे संसार के प्राणी मात्र को सुख पहुंचाना उसका उद्देश्य था ॥

प्यारे मित्रो ! यह आप को ज्ञात है कि आदि में सारे संसार में वैदिक धर्म का प्रचार था परन्तु क्रमशः समय के एरफेर ने इस वैदिक धर्म को भिन्न २ टुकडो में विभाजित कर दिया इस का प्रमाण यह है कि वैदिक धर्म का सर्वोत्तम नियम अर्थात् यज्ञ अग्निहोत्र को हम प्रत्येक देश तथा धर्म की मूल पुस्तक में पाते हैं और पांच सहस्र वर्ष से प्रथम की कोई एसी सम्प्रदाय प्रतीत नहीं होती—अर्थात् यवन मत १३०० वर्ष से ईसाई मत १९०० वर्ष से, यहूदी ३५०० वर्ष से पारसी मत ४५०० वर्ष से, इस से प्रथम वैदिक धर्म के अतिरिक्त कोई मत नहीं पाया जाता जिस से प्रत्यक्ष विदित है कि यह सारे मत वैदिक धर्म के बिगडने से उत्पन्न होगए— इस के अतिरिक्त जिस समय टर्की में इस श्लोक को देखते

वाल्हिका पल्लवाश्चीना शुलीका यवनाशका
माषगोधूम मरमहृदीशास्त्रवैश्वानरोचिता

अर्थात् महात्मा अत्रि ऋषि ने बलख, ईरान्, चीन, अरब यूनान, और उस के पूर्वी विभागों में भ्रमण किया और वहां पर इन्हों ने अंगूर उर्द और गेहूं के खाने वाले तथा शास्त्र के अनुकूल अग्निहोत्र करने हारे मनुष्य देखे तो इस से प्रत्यक्ष ज्ञात होता है कि वैदिक धर्म उस समय वर्तमान् था और जब महाभारत युद्ध में योग्य विद्वानों के नष्ट होजाने से उस का प्रचार निर्वल होगया और अन्त में प्रचार के न रहने से और धनादि की अधिकता से मनुष्यों में दुराचार फैलनेलगा और राजा लोग निन्दित कर्मों में प्रवृत्त होगए ब्राह्मण जो उस समय जगत गुरू कहलाते थे वैदिक धर्म के प्रचार के न होने तथा आलस्य से अपने कर्तव्यों से प्रथम ही पतित होचुके थे वे भी राजाओं के सेवक होगए और हां में हां मिलाने लगे- उस समय जब लोगों ने राजाओं से कहा कि आप यह क्या अधर्म्म करते हैं?

इसी प्रकार जब सारे देश में उनकी निन्दा होने लगी तब राजाओं ने अपने पुरोहित ब्राह्मणों से मिल कर इस निन्दा से बचने का उपाय किया और संसार में एक ऐसा मत चलाया जिस में सारे कुमार्ग धर्म्म बनगये-इस मत का नाम वाम मार्ग है—और "वाम" का अर्थ "उल्टा" अर्थात् उल्टा

मार्ग फैलाया जिस में अधर्म्म की बातों को धर्म्म बतलाया अर्थात् ईश्वर के स्थान पर प्रकृति को मानना या विषय सुख को धर्म्म बतलाना प्रत्यक्ष रूप से वाम मार्ग का उल्टा मार्ग बतला रहे हैं।

भ्रातृगण ! इस वाममार्ग का मूल तैतरीयशाखा है क्योंकि उसके विषय में जो वृत्तांत महीधर भाष्य में लिखा है उससे प्रत्यक्ष विदित होता है कि उसी समय से वाममार्ग चला अर्थात् एक समय व्यासजी के चेले वैशम्पायन अपने शिष्य याज्ञवल्क्य से किसी बात पर रुष्ट होगये और उससे कहा कि मेरी पढ़ी हुई विद्या को छोड़दे—याज्ञवल्क्य ने उसी समय विद्या का वमन कर दिया-तब वैशम्पायन ने अपने और शिष्यों से कहा कि इसको खालो—उन्होंने तीतर का रूप धारणकर उसको खालिया अतएव यह तैतरीयशाखा बनगई यह वृत्तांत महीधरने अपने यजुर्वेद भाष्य की भूमिका में लिखा है। इस लेख से तैतरीय शाखा की उत्पत्ति ज्ञात होगई और याज्ञवल्क्यऋषी के समय का पता लगगया॥

पाठकवृन्द ! यह गाथा वाममार्ग के प्रारम्भ की है अन्यथ वाममार्गियों में तो बडा सिद्ध वही कहलाता है जो वमन को भक्षण करले और इस गाथा में तीतर बनना इस बातको सिद्ध करता है कि उससमय वाममार्ग का विशेष प्रचार नहीं हुआ था और न इसप्रकार के सिद्ध उत्पन्न हुये थे-और जितने

सूत्र आजकल दृष्टिगत होते हैं जिनमें पशुयज्ञ और मांसादिका विधान है उनमें अधिकतर तैत्तीयशाखा, तैत्तरीयआरण्यक और तैतरी ब्राह्मण के दियेजाते हैं जो वाममार्ग के समय में निर्मित हुवे हैं और इनहीं पुस्तकों में यज्ञमें पशूहिंसा बतलाई है अन्यथा पूर्वकाल में तो यज्ञमें हिंसा करना महापाप है जैसा कि ऋग्वेद के मंत्र में लिखा है ॥

अग्नेयं यज्ञमध्वरं विश्वतः परि भूरसि सइद्देवेषु गच्छति ।

अर्थात् हे ज्ञानस्वरूप अग्निनाम परमात्मन तेरा जो हिंसा रहित यज्ञ सारे संसार में व्याप्ति होरहा है वही यज्ञ इस स्थान से देवताओं को जाता है ।

बहुत महाशयों को इसमें शंका होगी परन्तु वेदों में कम से कम सौ जगह पर यज्ञको हिंसा रहित बतलाया है और इस मन्तव्य की पुष्टि में अनेक उदाहरण पाये जाते हैं अर्थात् जिससमय विश्वामित्र ने यज्ञ किया था उससमय राक्षस लोग उनके यज्ञम मांस विष्टादिडालकर उसको अपवित्र करते थे यदि यज्ञमें हिंसा का निषेध न होता तो विश्वामित्र क्षत्री होने पर भी कभी राजारामचन्द्रजी को सहायतार्थ न बुलाते क्योंकि यज्ञमें क्रोध करना पाप है और हिंसा विदून क्रोध के हो नहीं सकती—इसमें और भी प्रमाण है ॥

प्रियपाठक ! इसको बहुतबडा सबूतयहहैकि पारसियों को जब अग्निहोत्र को उपदेश हुआ था अर्थात् जिससमय व्यास व जरदुश्त का वार्तालाप हुआ था और व्यासजी ने अग्निहोत्र का उपदेश किया उस समय तो केवल सुगंधित, बलवर्धक और आरोग्य रखनेवाले पदार्थों का हवन होता था जैसा कि पारसियों के रिवाज से प्रकट होता है — परन्तु वाममार्ग फैलजाने के पश्चात् जो आर्य्यावर्त से अन्यदेशों में शिक्षा पहुंची वहां यज्ञके स्थान में पशुवधका प्रचार होगया— जिससमय इसप्रकार चारोंओर वेदों के अर्थों का अनर्थ करके वेदके नाम से बहुतसी वाममार्गीय पुस्तकें औरसूत्र बनाये तोसारे संसार में वेदों की निंदा होनेलगी जैसा कि चारवाक ने लिखा है ॥

त्रयोवेदस्यकर्त्तारो: भांडधूर्तनिशाचरा: ॥

अर्थात् तीनो वेदों के बनानवाले भांड़ धूर्त और राक्षस है। जब इस तरह से वेदों की निन्दा होती थी तो एक राजा की लड़की जिसको वैदिकधर्म में अति प्रीति थी शोक से यह कह रही थी।

किंकरोमि क्वगच्छामि को वेदानुद्धृष्यति॥

अर्थात् क्या करूं कहां जाऊं कौन वेदों उद्धार करेगा उस की इसबात को सुनकर कुमारिलभट्टाचार्य्य को इसबात का विचार उत्पन्न हुआ और उत्तर दिया॥

मांचिंत्यवरारोहि भट्टाचार्योस्ति भूतले ॥

अर्थात् ऐ धर्मनुरागणी ! कुछ चिंतामतकर वेदों के उद्धार के लिये भट्टाचार्य मौजूद है और कुमारिलभट्टाचार्य ने मीमांसा वार्तिक बनाकर यज्ञों का नियम ठीक करनेका प्रयत्नकिया परन्तु वह पूरे तौर से कृत कार्य न हुये ॥

जब इसप्रकार वाम मार्ग के अधिकप्रचार ने देश में दुराचार फैला रक्खा था उसी समय कपिल वस्तु केराजा साखो सिंह गौतम को उसके दूर करने के हेतु बहुत भारी विचार पैदा हुआ; उन्होंने राज्य को छोड तप करना आरम्भ किया जब अच्छी तरह ज्ञान होगया तो उन्होंने हिंसक यज्ञों का खंडन करना प्रारम्भ किया और उस समय जब वाम मार्गी ब्रह्मण सब जातियों को सेवक बनाकर अधर्म्म में चला रहे थे उनके वर्णाश्रम का भी खंडन आरम्भ किया, बुद्ध की शिक्षा अधिकतर वैदिक धर्म्मानुकूल थी परन्तु उस समय जो वाममार्ग के अनर्थों से वैदिक धर्म्म होरहा था उससे बिलकुल विरूद्ध थी—उस समय वाम मार्गी ब्रह्मणों नेबौद्धमत के शास्त्रार्थों में वेदों के प्रमाण अर्थात् उसी वाम मार्गी तैतरीय शाखा के प्रमाण देने आरम्भ किये महात्मा बौद्ध देव जो कि संस्कृत के बडे विद्वान तो थे ही नहीं इस कारण स्वयं तो वेदार्थ विचार न सके थे दूसरे उस समय में वेदों के अनुकूल पुस्तकें भी कम प्राप्त होती थीं जिससे उनको भली भांति शिक्षा होती

जब उन्हों ने देखा कि वेदों के जमघटे को साथ लेकर वाम मार्ग को दूर नहीं करसकते और न संसार का उपकार कार सकते हैं तो उसका उपाय उनको यही सूझा कि वेद को मानना छोड़दें और जहां तक हो सके इन हिंसा करने वाले यज्ञों को बंद करने के वास्ते अनेकप्रचार और उनकी जड़ वेदों के न्यून करनेका प्रयत्नकिया अतएव उन्होंने शूद्रों से कार्य आरम्भ किया और थोड़ेही दिनों में सारे भारतवर्ष में हलचल मचगया जब विरोधियों ने देखा कि गौतम वेदों को नहीं मानता तो उन्होंने उससे कहा कि वेद ईश्वर कृत है।

बुद्धदेव ने उत्तर दिया कि हम ऐसे ईश्वर कोभी नहीं मानते जिसने ऐसी पुस्तकें बनाई हों जिसमें हिंसा करने का उपदेश हो अस्तु इस प्रकार महात्मा बुद्धदेव धर्म के एक हिस्से को अपने मन्तव्यानुसार विषयुक्त समझकर उस से पृथक् होगए और शेष भाग का प्रचार करने लगे जब इस प्रकार से ज्ञान का मुख्य भाग अर्थात् जीव, प्रकृति, ईश्वर इन तीनों में से ईश्वर निकल गया और शेष दोतिहाई धर्म अर्थात् जीव और प्रकृति का प्रचार होता रहा॥

प्यारे मित्रो! इस त्रुटि को पूरा करने के वास्ते स्वामी शङ्कराचार्य जी महाराज ब्रह्म की सिद्धि के वास्ते कटिबद्ध हुए और सारे देश में भ्रमण कर बौद्ध मत का खण्डन किया और जहां तक होसका अपना कुल समय ब्रह्म सिद्धि में व्यय किया—क्योंकि उस समय तक मनुष्यों में प्रकृति और जीव

को छोड कर दूसरे किसी स्थान में दिखलाना कठिन था इस लिये उन्हों ने प्रत्येक वस्तु में दिखलाना शुरू किया और षट् पदार्थ अनादि बतलाकर पांच को सान्त बतलाया अभी महात्मा शङ्कराचर्य को अपना पूरा सिद्धान्त दिखलाने का अवसर मिला ही नहीं था देश के दुर्भाग्य से वह भारत का भानु इस असार संसार से चलता हुआ परन्तु जितना काम इस महात्मा ने किया उस से मालूम होता है कि यदि इस ऋषि को दस वर्ष तक अधिक जीवित रहने का अवसर मिलता तो यह भारत का उद्धार करदेते और वैदिक धर्म को जो महाभारत के बाद हानि पहुंची थी उसकी पूर्ति होजाती परन्तु तौभी २२ वर्ष की अवस्था से ३२ वर्ष की अवस्था तक इस ब्रह्म प्रचारक ने सामान्यतया और आर्य्यवर्त्त में विशेषतया ब्रह्म को फैला दिया ॥

भ्रात्रि वर्गो ! महात्मा शङ्कराचार्य के पश्चात् उन के चेले यद्यपि बड़े २ पण्डित हुए जिन्हों ने अद्वैत वाद के सिद्ध करने के लिये सहस्रों नए प्रमाण गढे और सैकड़ों पुस्तकें लिख डाली परन्तु यह वैदिक धर्म्म को उस मूल तत्व से बहुत दूर लेगए अर्थात् उन्हों ने प्रकृति और जीव की अस्तित्व से बिलकुल इन्कार कर दिया और षट् अनादि मान कर पांच को अन्तवाला बतलाने के मन्तव्य को बिलकुल न समझा— महात्मा शङ्कराचार्य का तो यह सिद्धान्त था कि जो वस्तु उत्पन्न होती है वह अनित्य है और जो उत्पत्ति से रहित है वह नित्य है ॥

अतएव यह छः पदार्थ अनादि अर्थात् उत्पत्ति शून्य हैं अतएव नित्य है परन्तु ब्रह्म तो सर्वव्यापक है अर्थात् वह अनन्त है और शेष पांच पदार्थ जीव, ईश्वर, माया, अविद्या, और इनका सम्बन्ध यह पांचो सीमा बद्ध हैं यहां पर जीव के अर्थ बद्ध जीव के हैं और ईश्वर मुक्त जीव को कहते हैं अविद्या जीव का गुण है, माया प्रकृति का नाम है।

हमारे कुछेक मित्र यह कहेंगे कि तुमने यह बात मन गढ़त कही है परन्तु जहां जीव का लक्षण किया है वहां अविद्या में युक्त चेतन को जीव माना है अविद्या के दो अर्थ हो सकते हैं एक तो ज्ञान का अभाव दूसरे विपरीत ज्ञान अगर अविद्या के अर्थ ज्ञान के अभाव के माने तो ठीक नहीं क्यों कि 'चेतन' ज्ञान वाले को कहते हैं और जिस में ज्ञान का अभाव है वह चेतन ही नहीं कहला सकता इस हेतु से अविद्या को अर्थ विपरीत ज्ञान के लिये जाते हैं यहां उलटा ज्ञान बन्धन अर्थात् दुःखोत्पत्ति का कारण है और इसी के नाश से मुक्ति होती है जब मिथ्या ज्ञान का नाश होगया तो उसमें अल्पज्ञता जो जीव का स्वाभाविक गुण है मौजूद है परन्तु मिथ्या ज्ञान बिलकुल अलग होगया अब यह बन्धन से खाली है इसी को शुद्ध सत्य प्रधान उपाधि सहित अर्थात् ईश्वर कहते हैं॥

प्रिय पाठक ! क्यों कि आदि और अन्त दो प्रकार से होते हैं एक तो देश योग से दूसरा काल योग से जो वस्तु काल योग से आदि वाली है वह काल योग से अन्त वाली होगी

क्योंकि नदी एक किनारे की कहीं होती ही नहीं जिस का आदि है उसका अन्त अवश्य है और जो वस्तु देश योग से अनादि है वह देश योग से अनन्त भी होगी परन्तु यह नहीं होसक्ता कि जो वस्तु काल योग से अनादि है वह देश योग से भी अनन्त हो क्योंकि परमाणु काल योग से अनादि है परन्तु देश योग से सान्त हैं यहां महात्मा शङ्कराचार्य का यह प्रयोजन था कि काल योग से छः वस्तुयें अनादि और अनन्त ह परन्तु देश योग से पांच वस्तुयें आदि और अन्त वाली केवल एक ब्रह्म ही अनन्त है ॥

सज्जन महाशयो! महात्मा शङ्कराचार्य के प्रयोजन को न समझ कर लोगों ने ऐसे झगडे उत्पन्न किये कि महात्मा शङ्कर का जो सिद्धान्त वैदिक धर्म को उस कमी को पूरा करने का था जो महात्मा बुद्ध ने संस्कृत न जानने और पण्डितों के वाममारगी होने के कारण अयुक्त समझ काट दिया था परन्तु दुर्भाग्य वश शङ्कराचार्य के चेलो ने बिना समझे या किसी अपने प्रयोजन से वैदिक धर्म्म के उस हिस्से को जिसको बुद्ध ने स्थिर रक्खा था बिलकुल उड़ादिया केवल वह भाग जिस को शङ्कराचार्य बुद्ध मत में मिलाकर उसकी त्रुटि को पूरा करना चाहते थे उसी को रख लिया अर्थात् जीव, प्रकृति जिसको बौद्ध मत वाले मानते थे शङ्कराचार्य इस में ब्रह्म को मिलाकर इस को पूरा वैदिक धर्म्म बनाना चाहते

थे परन्तु उनके चेलों ने प्रकृति और जीव को छड़ा कर केवल ब्रह्म अर्थात् एक तिहाई वैदिक धर्म का प्रचार शुरू किया और शेष पर विशेष ध्यान न दिया अब वैदिक धर्म के दो भाग होगए एक बौद्ध मत दूसरा अद्वैत वाद दोतिहाई भाग तौ बौद्ध मत ने ले लिया और एक भाग शङ्कराचार्य ने चेलों अर्थात् अद्वैत वादियों ने लिया परंतु यह तिहाई भाग विशेषतः प्रकाशक और हितकारी था इस वास्ते यह प्रबल पड़ा और पृथ्वी के प्रत्येक विभाग में फैल गया॥

देखो भाग दूसरा

॥ ओ३म् ॥

ट्रेक्ट नम्बर ६

मोहमुद्गर

जिस को

स्वामी दर्शनानंद सरस्वती जी ने

दयानन्द ट्रेक्ट सोसाइटी के हितार्थ रच कर

महाविद्यालय मैशीन प्रेस

ज्वालापुर हरिद्वार में

प्रकाशित किया

—=+:※:+=—

२००० प्रति] [मूल्य)॥

ओ३म्

* मोहमुद्गर *

मूढ जहीहि धनागम तृष्णां-

कुरु तनुबुद्धिमनः सुवितृष्णां।

यल्लभसे निजकर्मोपात्तं

वित्तं तेन विनोदय चित्तं ॥ १ ॥

हे मूढ़! धनागम की तृष्णा दूर कर। शरीर में बुद्धि में और मनमें उसके प्रति

वितृष्णा भाव प्रदर्शन कर तुमने अपने कर्म फल से जो प्राप्त किया है उससेही चित्तका संतोष कर । १ ।

कातवकान्ताकस्तेपुत्रःसंसा रोऽयमतीवविचित्रः। कस्य त्वंवाकुतआयातः तत्वंचिन्त यतदिदंभ्रातः॥ २ ॥

कौन तुम्हारी स्त्री तुम्हारा पुत्रही कौन है! इस संसार का व्यापार अति विचित्र है॥ तुम किस के और कहां से आये हो ? हे भ्राताः ! इस गूढ़ तत्व की चिन्ता करो॥२॥

माकुरु धनजनयौवनगर्वं
हरति निमेषात्कालः सर्वं ।
मायामयमिदमखिलं हि-
त्वाब्रह्मपदंप्रविशाशुविदित्वा

धन, जन, योवन का गर्व परित्याग करो, काल निमेष में इन सबको हरण करलेता है। माया मय इस सम्पूर्ण जगत को परित्याग पूर्वक परम ब्रह्म पद जान उसमें शीघ्रता सहित प्रवेश करने का यत्न करो ॥ ३ ॥

नलिनीदलगतजलमतितर-
लंतद्वज्जीवनमतिशयचपलं।
क्षणमिहसज्जनसंगतिरेका
भवतिभवार्णवतरणेनौका ४

पद्म पत्र स्थित जल की समान जीवन अत्यन्त चंचल है इस संसार में केवल साधु संग ही अवलम्बनीय है, वही संसार सागर से उत्तीर्ण होने के लिये नौका स्वरूप है ॥ ४ ॥

यावज्जननंतावन्मरणं

त वज्जननोजठरेशयनं ।

इ तिसंसारेस्फुटतरदोषः

कथमिहमानवतवसन्तोषः

जिस समय जन्म ग्रहण करता है, तभी मृत्यु उसके पीछे २ आती है और मृत्यु के पीछे पुनर्वार जननी के जठर में प्रवेश करना होता है । संसार में यही प्रकाशरूप से दोष दिखाई देता है । अतएव हे मानव ? तुम्हारे संतोष का क्या विषय है ॥ ५ ॥

दिनयामिन्यौसायम्प्रातः

शिशिरवसंतौपुनरायातः ।
कालःक्रीडतिगच्छत्यायुः
तदपिनमुञ्चत्याशापाशः ६

दिन जाते हैं, रात्रि आती है । संध्या प्रात होती है, प्रातःकाल फिर उपस्थित होता है । शिशिर और बसन्त इत्यादि ऋतु बारम्बार आती जाती हैं कालक्रीड करता है । जीव की परमायु दिन दिन व्यतीत होती है, तथापि आशा रूपी फांस नहीं छूटती ॥ ६ ॥

अंगंगलितंपलितंमुण्डं

दन्तविहीनंजातंतुण्डं ।
करधृतकंपितशोभितदण्डं
तदपिनमुञ्चत्याशाभाण्डं ७

शरीर गलित होता है शिरोदेश अव नत होगया है, मुख मण्डल दन्त विहीन हुआ जाता है, हस्त धृत यष्ठि (हाथ में धारण की हुई लकड़ी) हाथकी अवसन्नता प्रयुक्त कंपित और शोभित होती है तो भी आशाभाण्ड परित्यक्त नहीं होता ७

सुरवरमन्दिर: कृतलवास:

शय्याभूतलमजिनंवासः।
सर्वपरिग्रहभोगत्यागः
कस्यसुखंनकरोतिविरागः ८

देव मन्दिर के भीतर अथवा वृक्ष के नीचे वास, भूमितल में वास वा मृगचर्म पहरने से सर्व प्रकार परिग्रह और भोग सुख परित्यक्त होता है अर्थात् छूटजाता है, इस प्रकार का वैराग्य किसको सुख-कारी नहीं होता ? ॥ ८ ॥

शत्रौमित्रेपुत्रेबन्धौमाकुरुयत्नं
विग्रहसंधौ।भवसमचित्तःस-

त्वं वाञ्छस्यचिराद् यदि
विष्णुत्वं ॥ ९ ॥

शत्रु और मित्र, पुत्र अथवा बांधव, इन सबके ही प्रति समान यत्न करे। किसी के प्रति न्यूनाधिक न करे। विग्रह अथवा सन्धि दोनों में ही समान यत्न करे। यदि अचिर विष्णु पदकी वांछा करते हो, तो सर्वत्र समभाव से देखो ९

अष्टकुलाचलसप्तसमुद्राः
ब्रह्मपुरन्दरदिनकररुद्राः।

नत्वंनाहंनायंलोकः
तदपिकिमर्थंक्रियतेशोकः॥

पर्वत श्रेणी के प्रधान प्रधान आठ कुलाचल और सात समुद्र और ब्रह्मा, देवराज, इन्द्र, सूर्य, रुद्र देव इत्यादि यह सब तुम अथवा मैं, इन सबमें कुछ भी इस लोक के लिये नहीं है अतएव किस लिये शोक करते हो॥ १०॥

त्वयिमयिचान्यत्रैकोविष्णुः
व्यर्थंकुप्यसि मय्यसहिष्णुः
सर्वंपश्यात्मन्यात्मानं सर्वत्रो

त्सृज भेदज्ञानं ॥ ११ ॥

तुममें मुझमें और अन्यत्र सम्पूर्ण वस्तु में ही केवल एक मात्र विष्णु ही विराजमान हैं । अतएव मेरे प्रति असंतुष्ट होकर किसलिये कोप करते हो ? अपनी आत्मा को अन्य आत्मा से स्वतंत्र मत समझो, वरन सर्व भूतकी आत्मा तुम में दिखाई देती है, सर्वत्र ही भेदज्ञान परित्याग करना चाहिये ॥ ११ ॥

बालस्तावत्क्रीडासक्तस्तरुण स्तावत्तरुणीरक्तः । वृद्धस्ताव-च्चिन्तामग्नः परमेब्रह्मणिको

पिनलग्नः ॥ १२ ॥

बाल्यावस्था पर्यन्त क्रीडा (खेल) में ही आसक्त होकर दिन व्यतीत करते हैं, तरुण अवस्था के समय स्त्री में अनुरक्त रहते हैं, वृद्ध अवस्था के समय चिन्ता में ही मग्न होकर दिन व्यतीत होते हैं, अतएव कोई भी किसी समय में परब्रह्म में मन स्थिर नहीं करसकता १२

अर्थमनर्थं भावयनित्यंनास्ति ततः सुखलेशः सत्यं । पुत्रादपिधनभाजांभीतिः सर्वत्रैषाकथितानीतिः ॥ १३ ॥

प्रतिदिन केवल वृथा अर्थ चिन्ता करते हो, उसमें सुख का लेश मात्र भी नहीं है। क्योंकि धनवानों को पुत्र से होते भी उनको भीति (डराहुआ) देखा जाता है यह नियम सर्व स्थल में कथित है।

यावद्वित्तोपार्ज्जनशक्तः तावन्निजपरिवारोरक्तः। तदनु च स्या जर्ज्जरदेहे, वार्त्तांकोऽपि न पृच्छति गेहे॥ १४॥

जबतक तुममें धन उपार्जन करने की सामर्थ है, तबतक ही तुम्हारा परिवार तुममें अनुरक्त रहेगा। फिर जब तुम्हारा

शरीर वृद्धावस्था से जर्जरीभूत होगा और धन उपार्जन की सामर्थ न रहेगी, तब तुम्हारी कोई बात तक भी न पूछेगा ॥ १४ ॥

कामं क्रोधं लोभं मोहं त्यक्त्वात्मानं पश्यति कोऽहं, आत्मज्ञान विहीना मूढाः स्ते पच्यन्ते नरके निगूढाः ॥ १५ ॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि परित्याग करके 'मैं कौन हूँ' आत्मा को इस भाव से अनुसंधान करो। इस प्रकार के आत्मज्ञान से हीन मूढ लोग ही नरकगामी होते हैं ॥ १५ ॥

षोडशश्लोकाभिरशेषः शि-
ष्याणांकथितोऽभ्युपदेशः येषां
नैषकरोतिविवेकं तेषांकः कर्त्तां
मातिरेकं ॥१६॥

षोडश (सोलह) श्लोक पज्झटिका छन्द में लिखेगये हैं इस छन्द के क्रमसे अशेष शिष्यगणों को जो उपदेश दिया गया है, इससे भी जिनको उपदेश नहो अथवा विवेक उदय नहो, उनको ज्ञान उत्पन्न होने के लिये अन्य क्या उपाय होगा! समझ में नहीं आता ॥ १६ ॥

॥ ओ३म् शम् ॥

ट्रेक्ट नम्बर १७

स्थावर में जीव विचार

जिस को

स्वामी दर्शनानंद सरस्वती जी ने

दयानन्द ट्रेक्ट सोसाइटी के हितार्थ

महाविद्यालय मैशीन प्रेस

ज्वालापुर हरिद्वार में

छपवाया

—=+:*:+=—

४००० [प्रति [मूल्य)।

ओ३म्

महा विद्यालय

में गुरुकुल, अनाथालय, उपदेशक पाठशाला, साधूआश्रम, गौशाला, आर्य स्कूल; इत्यादि उपस्थित हैं ॥

ओ३म्

स्थावर में जीव विचार

प्रथम भाग

प्रिय पाठक वर ! आज कल इस उपर्युक्त विषय पर बड़े २ नाना प्रकार के प्रश्न और शङ्कायें उठती हैं कि वृक्षों में जीव है या नहीं ? परन्तु सत्य के अन्वेषक और निष्पक्ष विद्वानों ने इस बात को निर्णय कर लिया है कि वृक्षों में जीव नहीं है ! तथा पृच्छकों को भी महती शान्ति से निर्णय करा दिया कि "वृक्षों में जीव नहीं है"। यद्यपि अभाव वादियों पर प्रमाणादि का भार नहीं होता किन्तु भाव का सिद्ध न होना ही उन का प्रमाण है। इस से हमें प्रमाणों की कुछ आवश्यकता तो नहीं देखो आ० स० । परन्तु सत्य निर्णयार्थ यह प्रकरण है।

वाचक वृन्द ! हमारा यह पक्ष वा हठ नहीं है कि विना ही प्रमाण के किसी वात को मान लिया जावे किन्तु भली प्रकार से निर्णय कर के मानना चाहिये । इसी लिये हम इस वात

को यहां से आरम्भ करके आगामी सम्पूर्ण तर्कों का प्रत्याख्यान करते हुए [जो इस विषय के विरुद्ध हैं] सत्य के जिज्ञासुओं के हितार्थ इस विषय को सिद्ध करेंगे।

पाठकों को यहभी अवगत हो कि शरीर में दो प्रकार के जीव रहते हैं। प्रथम अनुशायी [जो उस शरीर को अपना नहीं समझते और एक ही शरीर में बहुत रहा करते हैं] और दूसरे अभिमानी [जो उस शरीर को अपना समझते और उस शरीर में व्यापक व एक होता है] इस लिये ऊपर के विषय से अभिमानी का निषेध समझना चाहिये॥

इसी विषय में भीमसेन जी का ब्रा० स० पत्र में लेख है। प्रथम हम उसी की समालोचना करते हैं। क्यों कि आजकल पं० भीमसेन जी ही स० ध० सभा के पण्डिताधिराज अवतारवत माननीय हैं - और उन का ब्रा० स० पत्र भी स्वतः प्रमाणवत समझा जाता है इस लिये उन के ही परास्तत्व में धर्मसभा के सब पण्डितों का परास्त होना समझना चाहिये

ब्राह्मण सर्वस्व में एक स्थान में भीमसेन जी स्वीकार करते हैं कि "वृक्षों में जीव न मानना सायंस के विरुद्ध है," [और आगे] वृक्षों में जीव स्वामी दयानन्द जीभी मनते थे

प्रथम पक्ष में तौ यह प्रश्न है कि क्या आप सायंस को जान कर उस के विरुद्ध कहते हैं या न जान कर? यदि कहो न जान कर तौ बिना जाने किसी के विरुद्ध कहना कोई

विद्वान् ठीक नहीं कह सकता। कदाचित कोई भवादृश पण्डित स्वीकार करले तौ दूसरी बात है, अस्तु।

यदि कहो जान कर, तौ अंग्रेजी सायंस को जान कर या संस्कृत सायंस को ? अब बतलाए कि किस पुरुष से आपने अङ्गरेजी सायंस को सीखा और वह सर्वथा ठीक है या नहीं यदि कहो संस्कृत सायंस को जान कर, तौ संस्कृत सायंस [पदार्थ विज्ञान] महर्षि कणाद विरचित वैशेषिक है और कणाद ऋषि वृक्षों में जीव नहीं मानते, जिसकी साक्षी महर्षि स्वामी शङ्कराचार्य्य स्वयं वृक्षों में जीव मानते हुएभी निष्पक्षता से लिखते हैं। देखो छान्दोग्य उपनिषद्---

अस्य यदेकाᳫ शाखांजीवो जहात्यथ सा शुष्यति द्वितीयां जहात्यथ सा शुष्यति तृतीयां जहात्यथ सा शु. इत्यादि ॥

इसी के भाष्य में स्वामी शङ्कराचार्य जी [स्वयम् वृक्षों में जीव मानते हुए भी] अपनी सम्मति को ऋषियों से मिलाकर झूठमूठ कुछ नहीं लिखते, किन्तु स्पष्ट कहते हैं कि

बौद्ध कणाद मतमचेतनाः स्थावरा इति

अर्थात् बौद्ध और कणाद ऋषि के मत में स्थावर अर्थात् वृक्षों में जीव नहीं है।

अब या तो पं० जी इस से अर्थ ही पलट दें जिस से सनातनी भाइयों को सन्तोष हो। नहीं तो कहदें कि प्रक्षिप्त [मिलावटी] है, परन्तु भीमसेन जी कब लिखेंगे क्यों कि उन्हों ने तो ब्रा० स० में ये काम आर्यसमाजी और नास्तिकों के बतलाए हैं। सो हमें आशा है कि भी० से० जी ऐसा तो नहीं करेंगे, नहीं इसनों पर हरताल ही लगा दें। अथवा भाष्यकार जी को कहदें कि वे समझे नहीं थे। यदि आप कुछभी न करें तो क्यों न मानलेते कि "वृक्षों में जीव नहीं है॥

कदाचित आप इस लिये डरते हो कि हमें मनुष्य क्षणिक बुद्धि न कहदें कि कभी कुछ मानते हैं और कभी कुछ, तो दूसरी बात है।

ब्रा० स० भा० १ अं० ३ पृ० १०२ में लिखा है कि जब काशी के पं० यह [मनुस्मृति सारी प्रमाण है] मानते हैं तो फिर हम नहीं जानते कि वहां के पण्डितों से अधिकतर संस्कृत [केवल व्याकरण] के अन्य कौन विद्वान् हैं।

उ०-विचारशील पाठकजन! यद्यपि व्याकरण संस्कृत विद्या में बहुत उपयोगी है परन्तु जो मनुष्य केवल व्याकरण पढ़ कर दर्शनादि कुछ न पढ़ कर अपने को कृतकृत्य समझ लेते हैं यह उन की भूल है। और हां यह तो बतलाए कि आप जब आर्यसमाजी थे तब क्या आप संस्कृत (अष्टाध्याय्यादि) भी नहीं जानते थे? यदि आप संस्कृत के विद्वान् थे तो फिर

आपने भी तो मनु के श्लोकों को प्रक्षिप्त * माना था अथवा आपने कुछ भी नहीं पढा था अब धर्म सभा में आकर ही द्वादशाक्षरी आरम्भ की है। कृपया गुरु का ही नाम बतला दीजिये जिससे आपने एक ही बार पलटा खाया और नेत्र खुलवा कहदीजिये कि हम जब आर्य्यसमाजी थे तब सर्वथा अविद्वान् थे। और इसी लिये आर्य्यसमाज के गंभीर सिद्धान्त समझ में नहीं आते थे। स्वामी दयानन्द जी के विषय में हम क्या लिखेंगे कि वे संस्कृत के कितने विद्वान् थे। कृपया काशी के शास्त्रार्थ को ही पढ लीजिये और अपने निष्पक्ष सनातनी भाइयों से ही पूछ लीजिये। या अपने उपनिषदादि के भाष्य पर ही सन्तोष किजिये जहां स्पष्ट लिखा है कि "श्री स्वामी दयानन्द जी के शिष्य भीमसेन जी" यदि आप कहें कि भूल से लिखदिया तो आप का यह कथन भूल रहित नहा होसक्ता क्योंकि भूल का न होना ऐकान्तिक नहीं रहा।

आगे आपने जो लिखा है कि "मनुस्मृति के इन श्लोकों को तो स्वामी जी ने भी माना है" क्योंकि उन्होंने सत्यार्थप्र० में लिखा है जैसा कि 'याति स्थावरतां नरः०' सत्यार्थप्र० पृ० २५२ तथा 'स्थावराः कृमिकीटाश्च०' स० पृ० २५५ में देखनाचाहिये। जबकि स्वामिजी ने भी इन श्लोकों को अप्रमाण नहीं माना तब सिद्ध हुवा कि वृक्षों में जीव है क्योंकि यदि स्वामी जी वृक्षों में जीव नहीं मानते तो अवश्य प्रक्षिप्त कहते।

* प्रमाणार्थ देखो मनुस्मृति के भाष्य का उपोद्घात

उ०—प्रथम तो किसी ग्रन्थकार के पुस्तक में किन्हीं श्लोकों का लिखा होना इस बातका प्रमाण नहीं कि ग्रन्थकार उन्हें मानता है। यदि कहो कहीं प्रक्षिप्त नहीं लिखा इसलिये प्रमाण है ठीक नहीं क्योंकि सम्भव है कि किसी सिद्धान्त के ... में उन श्लोकों को अंशमात्र प्रमाण दिखलाने का सम्पूरण श्लोक लिखगये हों और उनका कुछ अंश अप्रमाण भी हो परन्तु इतने से वह ग्रन्थकार का मन्तव्य नहीं समझा जाता।

पाठकवर्ग! यहां हम उक्त बात (लेख) की पुष्टि में उदाहरणवत् यह दिखलाना उचित समझते हैं कि स्वामीजी ने किसी अंश में प्रमाण दिखलाने का सम्पूर्ण श्लोक भी मनुस्मृती का लिखा है। और वह यह है:—

सत्यार्थप्र० पृ० २९ से इस विषका वर्णन है कि आधुनिक कल्पित भूतप्रेत कोई नहीं होते किन्तु जो होचुके वे भूत तथा मृतक को प्रेत कहते हैं। इसी विषय में स्वामीजी मनु का यह श्लोक सम्पूर्ण अर्थ सहित लिखते हैं—

"गुरोः "प्रेतस्य" शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरन्। प्रेतहारैः समं तत्र दशरात्रेण शुद्ध्यति।

इसका सारा अर्थ भी स्वमीजीने लिखा है परन्तु स्वामी जी का प्रयोजन केवल इससे है कि "मनु के अनुसार भी "प्रेत,, मृतक को कहते हैं, आधुनिक कल्पित प्रेत को नहीं।,, और सारे श्लोक को स्वामी जी नहीं मानते। और नहीं यहां यह लिखा है कि यह श्लोक प्रक्षिप्त है। इससे ये स्वमीजी का मन्तव्य नहीं हो सकता।

पाठकवर्ग! यह तो स्पष्ट है कि किसी अंश में प्रमाण दिखलाने के लिये सम्पूर्ण श्लोक भी अर्थसहित स्वामीजी लिखदेते हैं और प्रक्षिप्त कहने की उपेक्षा करते हैं। इसी प्रकार मनु के श्लोक भी (जैसे यहां "प्रेत,, के अर्थ की पुष्टि की है वैसे ही) इस बात के पुष्टि करने के लिये कि "पाप पुण्य के नानाविध होने से जन्मादि भी नानाविध होते हैं,, सम्पूर्ण श्लोके लिखेगये हैं। परन्तु इतने से वे सर्वंश में प्रमाण नहीं होते।

प्र० इसका क्यां प्रमाण है कि स्वामी ने जो सत्यार्थ० आदि में मनुस्मृती के वाक्य लिखे हैं उन सब को स्वामी ने सर्वांश में प्रमाण नहीं मानते?

उ०—इस बात का दृढ़ तथा स्पष्ट प्रमानहै क्योंकि यजुर्वेदभाष्य के प्रथमाङ्क के आदि में ही स्वामीजी स्वयं विज्ञापन देते हैं उसका प्रयोजन यह है कि (सत्यार्थप्र० आदि ग्रन्थों में जो बहुत से श्लोक "मनुस्मृति,, तथा अन्यान्य ग्रन्थों के लिखे हैं उनका मैं सर्वंश में सब को मैं प्रमाण नहीं मानता किन्तु वेदानु-

कूळ को साक्षीवत् प्रमाण मानता हूं और वेद विरुद्ध का नहीं) यदि कोई कहै कि सब श्लोक क्यों लिखे हैं ? इसका उत्तर भी स्वामीजी वहीं देते हैं कि [उन२ ग्रन्थों के मतों को जानने के लिये लिखे हैं] इससे स्पष्ट है कि स्वामीजी सब श्लोकों को (सत्याप्र० में लिखे होने पर भी) प्रमाण नहीं मानते । फिर ये कैसे कह सकते हैं कि "स्वामीजी ने जो प्रमाण मनुस्मृति के लिखे वे सब स्वामीजी ने माने हैं और इसीलिये मनु के अनुसार स्वामीजी वृक्षों में जीव मानते हैं,, क्योंकि यदि मनु के सारे श्लोक प्रमाण होते तो विज्ञापन की क्या आवश्यका था ?

प्र०— प्रियवर! अभी तो यह सिद्ध करना बहुत दुःसाध्य है कि स्वामीजी वृक्षो में नहीं मानते थे " क्योंकि प्रेतको पुण्यर्थं जो मनु का श्लोक लिखा है उस श्लोक में " जो दश रात्रों के पश्चत् शुद्ध होता है,, इतना वाक्य है वह तो तुम्हारे कहने से प्रक्षिप्त भी सिद्ध होजायगा तौ इसलिये कि स्वमी जो ऐसी बातों को नहीं मानते इसलिये यह प्रक्षिप्त है । परन्तु जहां वृक्षो में जीव का बोध होता है वहां के श्लोक भी तभी अप्रमाण समझे जायेंगे जब तुम यह कहीं लिखा दिखलादो कि स्वमी जी ने वृक्षो मे जीव का निषेध किया है और वेदाविरुद्ध है ॥

उत्तर—विचारशील जनो ! जैसे हम प्रेतार्थ पुष्टि के लिये स्वामीजी का लिखा हुवा श्लोक सर्वांश में प्रमाण नहीं मानते क्यों

कि ऐसी बातों को स्वमी जी नहीं मानते थे। इसी प्रकार हम मनु के श्लोकों को भी सर्वांश में प्रमाण नहीं मानते। क्योंकि वहां मनुस्मृति के अनुसार पाप पुण्य की बहुत प्रक.र कीगति दिखलाने के लिये मनुस्मृति के प्रकारवश सब श्लोक लिखे गये उन में से जो श्लोक मनुस्मृति के इस विषय को सिद्ध करते हैं कि " स्थावर में जीव है ,, उन को स्वमी जी कभी प्रमाण नहीं मानते थे।

अब हम इस बात को दिखळाते हैं कि स्वमजि़ी ने स्थावर मे जीव का निषेध कहां किया है? क्योंकि जैसे भूत प्रेतादि को स्वमी जी का अमन्तव्य समझ कर मनु के श्लोक को उसी विषय में प्रमाण मानना चाहिये न कि सर्वांश में - क्योंकि सर्वांश स्वमी जी के सिद्धान्त के विरुद्ध हैं। इसी प्रकार मनु के श्लोक वहां भी सर्वांश मे प्रमाण नहीं क्योंकि स्वामी जी स्थावर में जीव नहीं मानते नउन्होंने अपने" स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाशादि" में कहीं लिखा है प्रत्युत जिस सत्यार्थप्रकाश में मनु के श्लोक उद्धृत हैं उसी सत्यार्थ प्र० में तो आदि में ही इस का निषेध किया है—देखो स० प्र० १ समुल्लास पृ० २५ पं० २४ ईश्वर नाम व्याख्या प्रकरण में स्वामी जी लिखते हैं कि—

सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।

इस यजुर्वेद के वचन से जो " जगत् " नाम प्राणी चेतन और [जङ्गम] अर्थात् जो चलते फिरते हैं । "तस्थुषः" अप्राणी अर्थात् स्थावर [जड़पदार्थ] ।

अब यहां स्थावर का अर्थ जड अर्थात् जीव रहित स्पष्ट है और दूसरे यहां वेद के मन्त्रार्थाऽनुसार स्वामी जी ने वृक्षों में जीव का निषेध किया है। अब सोचिये कि एक दृढ़ विज्ञापन के होते हुए और मनु को सर्वांश में अप्रमाण होते हुए, स्वामी जी का स्थावर [वृक्ष] को जड़ (जीव रहित) मन्तव्य होते हुए, किसी ऐसी वैसी रद्दी पुस्तक का अर्थ नहीं किन्तु वेद मन्त्र का अर्थ यह करते हुए कि स्थावर (जड़) अर्थात् जीव रहित है, और मनु के दो श्लोकों को जो स्वामी जी ने लिखे हैं उन को वेद विरुद्ध होते हुए यह कह देना कि स्वामी जी वृक्षों में जीव मानते थे, कितने शोक की बात है।

प्रिय भ्रातृवर्ग ! स्वामी जी तो वेदों को स्वतः प्रमाण मानते थे और अन्य ग्रन्थों को परतः प्रमाण अर्थात् वेद से भिन्न ग्रन्थों में यदि एक भी शब्द वेद से विरुद्ध दीख पढ़े वह अप्रमाण समझा जाता था--परन्तु अन्य ग्रन्थों (मनुस्मृत्यादि) के विरुद्ध भी यदि वेद में हो तो वह प्रमाण है । भला जब वेद मन्त्रार्थ में स्वामी जी ने स्थावर का अर्थ जड़ (जीव-रहित) बतलाया है (जैसा कि पूर्व लेख से स्पष्ट है) तब उस मन्त्र के विरुद्ध चाहे कितने ही ग्रन्थों के श्लोक क्यों

न हों वे सब स्वामी जी के अमाननीय हैं जैसा कि मनु जी स्वयम् लिखते हैं।

या वेदबाह्याः स्मृतयो याश्चकाश्च कुदृष्टयः सर्वास्ता निष्फलः प्रेत्य तमोनिष्ठा हि ताः स्मृताः। मनुः॥

इस को स्वामी जी ने भी स० प्र० में लिखा है। इस का प्रयोजन यह है कि जो स्मृति वेदानुकूल न हों वे सब निष्फल (अप्रमाण) हैं अब स्वामी जी को 'वृक्षों में जीव मानने वाला, कहने वाले भा॰ सोचें कि वेद मन्त्र के विरुद्ध समझते हुए (जैसा कि हमने ऊपर स० प्र० से उद्धृत करालिखा है) उस (वेद) के विरुद्ध केवल दो श्लोक मनुस्मृति के स्वामीजी कैसे मान सकते हैं? क्योंकि स्वामीजी तो वेदाभिन्न को परतः प्रमाण और वेद विरुद्ध को अप्रमाण मानते हैं इसी लिये स्वामी जी ने उक्त विज्ञापन दिया था जिससे मनुष्यों को भ्रम न हो। यदि इतने पर भी आप नहीं मानते तो बतलाइये कि यह पक्षपात नहीं तो क्या है?

विचारशील पाठक जन! जो मनुष्य यह हठ रखते हैं कि मनुस्मृति सारी प्रमाण है उन के लिये यह १ श्लोक उदाहरणवत् लिखते हैं॥

और अपने भाइयों से पूछते है कि तुम इस श्लोक को मानते तथा तदनुसार आचरण करते हो वा नहीं जैसा कि मनु ने लिखा है तथा हि—

यज्ञार्थं ब्राह्मणैर्वध्या प्रशस्ता मृगपक्षिणः । भृत्यानाञ्चैव वृत्त्यर्थमगस्त्योह्याचरत्पुरा ॥

इसका अर्थ यह है कि " ब्राह्मणों को यज्ञ के लिये उत्तमोत्तम मृग अर्थात् पशुमात्र एवं पक्षी भी मारने चाहिये —(कदाचित् हमारे हिन्दू भाई कहदें कि " वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति ,, अर्थ—वेदविधि से की हुइ हिंसा " हिंसा ,, नहीं कहलाती तो) यहीं तक इति श्री नहीं है किन्तु यह भी तो कहा कि ' भृत्या० ,,अथात् अपने भृत्यवर्ग (नोकरों) के (वृत्ति) रोजगार के लिये भी उत्तमोत्तम पशु तथा पक्षी मारने चाहियें

अब क्या कोई आर्यसन्तान आप के सिद्धान्त के अनुसार मनुस्मृति को सर्वांश में प्रमाण मानकर मनु केइन श्लोक को मानेगा ! क्या इस के अनुसार वह आचरण करेगा अर्थात् यज्ञ के लिये, एवम् (दरिद्रवत् अन्न न देसकने केकारण पशुपक्षी मारकर) अपने नौकरों के रोज़गार के लिये यह कर्म करके धर्मात्मा कहलायगा ?

अथवा क्या प० भी० से० जी ने अपनी पार्टी में कोई ऐसे ब्राह्मण तयार किय हैं जिन्हो ने पशु पक्षी ओं को मारना ही अपना धर्म समझा हो, जब कि मनु ने लिखा है –

"अहिंसा परमो धर्मः,,

अर्थात् हिंसा न करना परमधर्म है।

भाई लोगो! थोड़ा सोचो आप को इससे भी बढ़ कर (मनु तथा अन्यान्य ग्रन्थों) घृणित बातें मिलेंगी, जब तक आप उन्हें प्रक्षिप्त और अप्रमाण न मानें तबतक निर्वाह नहीं होगा, यदि प्रक्षिप्त होने का अधिक प्रमाण देखना हो तो महाभारत में देखो।

प्रश्न—स्वमी जी ने स०प्र० मंजो स्थावर का अर्थ जड किया है उस से नहीं सिद्ध हो सक्ता कि स्वामी जी ने वृक्षों में जीव नहीं माना क्योंकि वृक्ष, योनि अर्थात् शरीर है और शरीर जड़ होता ही है इसी को सोच कर कि स्थावर शरीर जड़ होते हैं स्वामी जी ने स्थावर को जड लिखा है परन्तु इससे यह अभिप्राय निकलता है कि शरीर जड और जीव चेतन होता है किन्तु यह प्रयोजन नहीं कि स्थावर में जीव नहीं होता और दूसरे वहां स्थावर शब्द है वृक्ष शब्द नहीं कदाचित् स्थावर शब्द से अन्य ही अभिप्राय हो। इस लिये; जब तक दृढ प्रमाण और युक्ति न दी जीयेगा तब तक स्वामी जी का वृक्षों में जीव न मानना सिद्ध नहीं होगा॥

उ०—आप जो कहते हैं कि स्वामी जी ने स्थावर शरीर को जड़ समझ कर स्थावर को जड़ लिखा है, परन्तु जीव रहित नहीं लिखा सो ठीक नहीं किन्तु स्वामी जी जड़ का अर्थ ही जीव के सम्बन्ध से रहित करते है।

देखो ऋ० भूमिका पृ० ८९—

जडम् = जीवसम्बन्धरहितम् ।

अर्थात् जड़ उसे कहते हैं जो जीव के सम्बन्ध से रहित हो, जीव का सम्बन्ध (ताल्लुक) न हो। अब स० प्र० के वाक्य का यह अर्थ हुआ कि "स्थावर अर्थात् वृक्ष वनस्पति आदि में जीव नहीं हैं क्यों कि उन से जीव का कुछ सम्बन्ध नहीं है,, यही स्वामी जी का अभिप्राय है नहीं तो जीव और शरीर की भांति स्थावर और जीव का सम्बन्ध अवश्य होता परन्तु स्वामी जी और स्थावर का सम्बन्ध नहीं मानते किन्तु जड लिखते हैं इस से स्थावर में जीव माना स्वामी जी का इष्ट नहीं किन्तु अनिष्ट है। (क्रमशः)

(४) स्वामी शंकराचार्य का जीवन चरित्र—कुमारिल-भट्ट और मण्डन मिश्र का जीवन चरित्र भी साथ है मूल्य ॥)

(५) निरुक्त—हिन्दी भाष्य सहित, वेद का अर्थ जानने के लिये निरुक्त एक कुंजी है। उसका हिन्दी भाष्य बड़ा खोल कर लिखा गया है। इस पर प्रसन्न होकर गवर्नमिंट ने पं०—राजाराम जी को २००) इनाम दिया है, ऐसे गम्भीर और बृहत् पुस्तक का मूल्य भी सस्ता है केवल ४)

(६) मनुस्मृति—इस पर भी गवर्नमिन्ट से १००)रु० इनाम मिला है। मूल संस्कृत, सरल हिंदी भाष्य, पुरानी सात संस्कृत टीकाओं के भेद, और उस २ विषय पर याज्ञवल्क्य आदि स्मृतियों के हवाले, यह सब इस में दिया है इस के पहले की मनुस्मृति एक भी नहीं छपी-मूल्य ३)

(७) बालव्याकरण—इस पर भी २००) इनाम मिला है और टैकस्ट बुक कमेटी ने मिडल स्कूलों में कोर्स रखा है ।=)॥

(८) श्रीमद्भगवद्गीता—इस पर भी पण्डित जी को गवर्नमिन्ट से ३००) इनाम मिला है, मूल श्लोक के नीचे पद पद का अलग २ अर्थ, फिर अन्वयार्थ और सविस्तर भाष्य दिया है, मूल्य २)

(९) गीता हमें क्या सिखलाती है ।)

(१) ११ उपनिषदें—परमात्मा के साक्षात् दर्शन

पाये हुए ऋषियों का अनुभव इन उपनिषदों में पढ़ो, भाषा बहुत सरस सरल और सुस्पष्ट है।

१ ईश उपनिषद्	=)	७–तैत्तिरीय उपनिषद्	।=)
२ केन उपनिषद्	=)	८–ऐतरेय उपनिषद्	≡)
३ कठ उपनिषद्	।/)	९–छान्दोग्य उपनिषद्	२)
४ प्रश्न उपनिषद्	।)	१०–बृहदारण्यकउपनिषद्	१॥=)
५,६–मुण्डक और माण्डूक्य	।–)	११–श्वेताश्वतर उपनिषद्	।)॥
		१२–इकट्ठी लेने में	४॥)

(वेदों के उपदेश)–वेदोपदेश पहला भाग भगवान् की महिमा मन्त्रों से ॥) स्वाध्याय—नित्य पाठ के लिये वेद के उपदेश॥।) आर्य पञ्चमहा यज्ञपद्धति पांच महायज्ञों के सारे मन्त्रों के पूरे २ अर्थ और उन पर विचार ।)॥

(दर्शन शास्त्र)–वेदान्त दर्शन–दो भागों में–पहला भाग १॥=) दूसरा भाग १॥=) योग दर्शन बड़ा खोल कर समझाया हुआ ॥) नव दर्शन संग्रह–चार्वाक, बौद्ध, जैन न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, और वेदान्त इन नौ दर्शनों के सिद्धान्तों का पूरा वर्णन १)

सांख्य शास्त्र–के तीन प्राचीन ग्रन्थ ॥=)

पारस्कर गृह्यसूत्र–संस्कारों की पद्धतियां, मन्त्रों के अर्थ और हवाले सबकुछ इसमें है हरएक गृहस्थ के पास रहने योग्य १॥)

पता:—मैनेजर आर्ष ग्रन्थावलि–लाहौर

॥ ओ३म् ॥

* बकरा विनय *

जिसको

अयोध्याप्रसाद अध्यापक संस्कृत
पाठशाला शाहजहाँपुर यू० पी०
ने रचा ।

और

भगवान आ० धर्मप्रचारक ने गुप्त बांटने
को छपवाकर प्रकाशित किया ।

और पं० शङ्करदत्त शर्मा ने अपने
धर्मदिवाकर प्रेस मुरादाबाद में छापा ।

सृष्टि सं० १९७२९४९०१२
वि० सं० १९६८ दयानन्दी सं० २८
प्रथमवार] [५००० प्रति

ओ३म्

बकरा विनय

दोहा—परम पिता जगदीश को, बार २ शिर नाय ।
बकराविनय बनावहीं, भली भांति बनिआय १॥
बात चीत बकरा नहीं, यदपि करै प्रियभाय ।
अलङ्कार के रूप से, तदपि रचैं हम गाय ।२।
जान बचै सब पशुन की, होवे धर्म प्रचार ।
सब के उर दाया बसे हत्या कर्म बिसार ॥ ३ ॥
नहीं प्रयोजन और कछु, सज्जन सुनिये मोर ।
जग हितकारी समझकर, रचैंग्रन्थकरिजोर ४॥

बकरा दीन दुखी बलहीना, बिनतीकरै यही निजजीना ।
सुनहु सुजन यह मोर पुकारा, दीनबंधु सब भांतिउदारा ।
सकल सृष्टिका सिरजन हारा, जो सर्वज्ञ अखण्ड अपारा ।
उस ही ने हम तुमको भाई, कर्मवश्य यह देह धराई ।
भयो जनक इसकारण सोई, तब मम बाप अन्य नहिंकोई ।
इससे आपुसमें सबभाई, भयो भेद ना कछू दिखाई ।
हिलमिल प्रेम परस्पर राखें, वेदशास्त्र अस वाणी भाखें ।

दृते दृꣳहमामित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भू-

तानि सर्मा क्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

हे भुवनेश विश्वपति राया, हमपै अस कीजै प्रभुदाया ।
सर्व जीव हमको जगमाहीं, मित्रदृष्टि देखें नितपाहीं ।
ताही विधि हमहूं सबकाहीं, मित्रदृष्टि देखें मनमाहीं ।

दोहा-वेद वचन सब के लिये, हैं हितकारी बात ।
शुद्ध महोत्तम निष्कपट, यह उपदेश लखात ।१।
हम तुम सब केरे लिये, जस आज्ञा भगवान् ।
वेदों में बतला दई, तिसको करैं प्रमान । २ ।
सब जीवन पै दयाकरि, ब्रह्म भजो चितलाय ।
निज दुखसम परदुख लखौ, बुराकर्म बिसराय ।३।

मछरी सुअर हरिण अरुगाई, इनहम सबकाकरीबराई ।
जोतुमसारिमारिनिलखावो, नरतनमांहिंकलङ्कलगावो ।
जपतपयज्ञ ध्यान सुखकारी, त्यागि कसाईपन चितधारी ।
रैनदिवस मम औरनगाता, काटिखात मननाहिंअघाता ।
हा ! अन्धेर कैसे यह छाई, कोई टेर सुने नहिं भाई ।
दीन दुःखी नित पाती खावैं, काहूको हमनाहिं सतावैं ।
दाना घास नहीं हम चाहैं, जङ्गल चारा से निवांहैं ।
किस हू के कांटा लग जावे, हा हा दैया तुरत मचावे ।

तुम्हरे लड़कोंको कोई खाई, हंसी मांहि एकधौलछुआई।
तो तुम मारन उसके काजा, लाठी ले दौड़ो महाराजा।
जैसे तव शिशु तुमको प्यारे, वैसे हम निजमातु दुलारे।
फिर कैसे तुमहीं निर्दाया, देवी नाम काटिमोंाहखाया।
है जगदम्बा सबकी माता, पक्षपात उसको नहिं भाता।
जो तुम्हरे पुत्रन तजि देई, हमरे प्राण नित्य प्रति लेई।
सवैया-कर्मसे रोगी होतसवै अरु दुर्जनलोगमदारखताहीं
मानतहैं मुरगी कुकरर अरु शूकर मूरख नाहिं लजाहीं।
पापसवार अभीचिर होत तभी हमिदेवीकी भेंटचढाहीं।
डाइनि देवीहुवै सबही निज बाल कुटुम्बनको नित खाहीं।
वास्तव में देवीनहिंखाई, तुम्हरीजीभ जभी चटकाई।
तबहीं तुम लेकर तरवारा, हमरे ऊपर करो प्रहारा।
हा दिलीप यदुनाथ कन्हैया, कहां गये हमरे रखवैया।
हा रघुअज अरु रामभुआला, कहांगये तजि हमैंनिराला
जो तुम अब होतेमहिमाहीं, तो ममदुःख सुनते क्षणमाहीं
दोहा—मैंमें कर चिल्लावते, कोई सुनें नहिं टेर।
जिन काहूसे दुःख कहैं, सो लेवे मुख फेर ॥
अजब एक अरु सुनोकहानी, जो हिंसककहते मनमानी।
बकरा यदि खायेनहिंजावें, तो बढ़कर यह कहांसमावें।
किसीकामके हैं यह नाहीं, इससे मारि रांधिहमखाहीं।

भक्षणमांस बहुतहि नीका, इसके बिन सब भोजनफीका।
सिंह समान पराक्रम होता, जो बकरा के खावे पोता।
नींग खाय छटूडी भीतर की, बुद्धि बढ़े भी हो बहु तरकी।
ग्रन्थ मनुस्मृतिमें वह भाई, मद्य मांस भोजन दिखराई।
जो कलियाखाना नहिं सच्चा, तो यह ग्रन्थ होवैसबकच्चा।
बकरा कहै सुनो परिध्याना, जो आगे हम करें बयाना।
कोई नर २ मारि न खाई, वे जग में कस रहैं समाई॥
जो तुम कहौ मरतपशु जाई, तो हम क्या अमरौतीखाई।
तुम्हरी आयुवर्ष शतकेरी, चौदह तक मानो सिय मेरी॥
बद्रीनाथ तरफ़ जो जावो, तो मम कामदेखि सुनधावो॥
बोझलाद गिरपै चढ़ जावैं, निज स्वामीको सुख पहुचावैं
अङ्करेजन बग्घी बनवाई, छोटी तिस में मोहि मजाई॥
तिसमें निजबालक बैठावें, तिनको ले हम हवाखिलावें॥
दोहा—जब तुम पैदा होत हो, तब मम जननी क्षीर।
प्रथमहि पीकर होवते, जग में मानुष वीर॥
दूध दही घृत और मलाई, पेड़ा बर्फी आदि मिठाई॥
दोहा—मात पिता बाबा चचा, जब बूढ़े होजांय।
किसी काम के ना रहैं, मुफ्त अन्न यह खांय॥
खांसे और खखारहीं, थूक बिगारें गेह।
मारि रांधि खावो वन्हैं, न्याय सत्य सब येह॥

मरे बाद क्यों डारन जावो, घरमें रांधि प्रीतिसे खावो
हैं अस जीव जगत बहुतेरे, जे नहिं किसी काम के तेरे
भिड़ुका गैंसा और गिंजाई, बीछी सांप महा दुखदाई
इन्हें मारि क्यों ना भखिजाते, निर्बल सीधे जीवन खाते
किशमिश पिस्ता गरी छुहारा, एला दाख बदाम करारा।
इनको त्याग कही कस भाई, हमसों मांस चखो बहुताई।
लोहू मांस गोश्त घृणकारी, सब ममगीतरकेर निकारी।
खाय हाय उत्तम बतलाते, हूब मरब नहिं नेक लजाते।
जिमि जूता बेहत दुशाला, सिरमें लगे न होवे स्याला।
तिमि कलिया भक्षणके काला, जानेमहि घृत पड़े मसाला
बिनघी यादिक याहिपकावो, तो तुम उत्तमनाहिं बतावो
केवल आगी मांहि जलावो, बहु बदबूह पाय शर्मावो॥
जब सब गेह बाप मरजाई, मुर्दा फूंकि ताहि तब आई॥
तेरह दिन अशुद्ध तुम जानो, मुर्दा को नापाक बखानों॥
फिर पशु मुर्दा से भरि पेटा, शुद्धाचार दियो कस मेटा॥
दोहा—चौका शुद्ध लगाय के, बर्तन शुद्ध मंजाय।
चूल्हे पर मुर्दा जरै, यह कैसी दिखराय॥
रांधि परोसत थार में, ईश्वर भोग लगाय।
खाय जात छण मात्र में, निज कुल धर्म नसाय॥
मूत्र पात्र मोता हुवें, इस के खाये यार।

बुद्धि भ्रष्ट होजात है कीजै नेक विचार ॥
हड्डी भीतर रेंट को, जो प्रिय तुम भखि जात।
तिसहू ते तव मत सकल, शीघ्र नष्ट होजात ॥
सोरठा—नहिं मनुजीने भाय, ग्रन्थ आपने में लिखो ।
मारि २ भखिजाय, निर्बल दीन दुःखी पशू ॥
वाम मार्गिन दियो मिलाई, ग्रन्थ मनुस्मृतिमें बहु भाई ।
हिंसा अरु कलियाकाखाना, मनु रोका सो करें बखाना॥
श्लोक—वर्षे वर्षेश्वमेधेन योयजेत शतं समाः ।
मांसाँ नियम खादेद्यस्तयोपुण्य फलं समम्॥ १॥
सदायजति यज्ञेन सदा दानानि यच्छति ।
सतपस्वी सदा विप्रो यश्च मांसं विवर्जयेत ॥२॥
सर्व कर्मस्वहिंसाहि धर्मात्मा मनुरब्रवीत् ।
कामकाराद् विहिंसंति बहिर्वेद्यां पशुन्नराः ॥३॥
यो हिंसकानि भूतानिहि नसत्यात्म सुखेच्छया।
सजीवश्च मृतश्चैत्र न क्वचित सुख मेधते ॥४॥
नाकृत्वा प्राणिनां हिंसाँ मास मुत्पद्यते क्वचित् ।
नच प्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मात् मांसं विवर्जयेत्॥५॥
न भक्षयति यो मासं विधिं हित्वा पिशाचवत् ।
स लोकेप्रियतां याति व्याधिभिश्च न पीड्यते॥६॥
मांस भक्षयिता मुत्र यस्य मांसं मिहाद्म्यहम् ।

एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः ॥७॥

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी ।

संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः ॥८॥

अश्वमेध मख जे शतसाला, करैं भावैं कलियामनमाला ॥
जैन करे अरु मांस न खावैं ते नर तुल्य पुण्य को पावैं ॥
दान यज्ञ तप करै सुजाना, नहीं खाय [illegible] ॥
जो तपस्वी द्विज श्रेष्ठ बखानो, मुनि [illegible] ॥
जो निज सुख इच्छा के कारण, अवध्य जीव पशु लागैं मारण ।
जीते अरु मरणके बादा, नाहिं सुख पावैं अस मनुवादा ॥
दृढ़ अहिंसा मनु ऋषि गाई, सर्व काम में श्रेष्ठ बताई ॥
जो निज उदर भरनके काजा, मारें पशु [illegible] ॥
मिले न मांस बिना पशु मारी, नहीं खान इनको कहुं भारी ॥
जीव मारि नहिं स्वर्ग जावै, इससे मांस कभी नहीं खावै ॥

दो०—खाल रुवै जो रोज, जिसका गोश्त निकारकर ।
प्राण बाद कर खोज, सो उसका मुनि खावहीं ॥

छन्द—जो देय सम्मति खाय मारे और जीव निकालहीं
मारे बिना अपराध जो अरु जीन मास खरीदहीं ॥
बेचैं पकावैं जौन परसे जौन भोग लगावहीं ।
चाण्डाल आठप्रकार के इनको मुनीश बतावहीं ॥

श्रावण आ० ध० प्रथमा सं० १९६८ वि०

ओ३म् शम्

* ओ३म् *

ईसाई विद्वानों से प्रश्न ।

लेखक—

श्री १०८ स्वामी दर्शनानन्दजी सरस्वती

जिसको

पं० शङ्करदत्त शर्मा ने अपने लिये
अपने शर्म्मा मेशीन प्रिन्टिंग प्रेस मुरादाबाद में
छापकर प्रकाशित किया।

द्वितीयवार १०००] [मूल्य)॥ सैकड़ा २)

ईसाई विद्वानों से प्रश्न !

प्रश्न (१) तौरैत के नाज़िल (प्रकाशित) होने से प्रथम कौनसी विद्या का नियम न था कि जिसके बताने के लिये तौरैत नाज़िल (प्रकाशित) हुइ तौरैत में दयालु परमात्मा क्या लिखना भूल गया था जिसको बताने के वास्ते ज़बूर नाज़िल हुई, और ज़बूर में क्या कमी थी कि जिसको इञ्जील द्वारा पूरा किया।

प्रश्न (२) जब कि बाइबिल के अनुसार खुदाओं की एक जाति सिद्ध होती है कोई एक ईश्वर नहीं-देखो पौलूस रसूल का खत इब्रानियों को, बाब १ आयत ८ ऐ खुदा चूं कि तूने नेकी से प्यार और बदीसे द्वेष रक्खा इसलिये ऐ खुदा तुझ को तेरे खुदाने तेरे शरीकों की निस्बत खुशीके तेलसे अधिक मन्सूह (अभिषेक) किया ऐसे ही उत्पत्ति की पुस्तक से भी विदित होता

(ज़ाहिर) होता है। तो किस ख़ुदाने संसारको उत्पन्न किया ?

प्रश्न (३) जब कि बाइबिल के अनुसार ख़ुदाने सूरज को चौथे दिन उत्पन्न किया और यह निश्चय सिद्धान्त है कि सूरज से दिनका सम्बंध है। जब सूर्य पृथ्वी के गोलार्ध के सामने होता है तो उस गोलार्द्ध पर दिन और जिस गोलार्द्ध के सामने न हो उस पर रात होती है तो सूर्य से पहिले तीन दिन क्योंकर शुमार हुए?

प्रश्न ४) उत्पत्ति की पुस्तक (बाइबिल) में लिखा है कि ख़ुदा की रूह (आत्मा) पानीपर तैरती थी क्या रूह कोई प्राकृतिक (माद्दी) वस्तु है या अप्राकृतिक (ग़ैर-माद्दी) यदि प्राकृतिक वस्तु है तो किस प्रकृति से बनी है ? और अप्राकृतिक है तो किस प्रकार तैर सकती है ?

प्रश्न (५) ईश्वर एक देशी (महदूद) है या सर्व देशी (ला महदूद) है यदि महदूद है तो सर्व शक्तिमान किस तरह हो सकता है (क्योंकि वह जिस किसी स्थान में रहेगा वहां के अलावे और जगह के हाल को न जान सकेगा न काम कर सकेगा) यदि लामहदूद है तो सारी बाइबिल रद होजाती है क्यों कि लामहदूद का दावा

बायां हाथ नहीं होसकता जब दायां हाथ नहीं है तो ईसूमसीह दायें हाथ किस तरह बैठ सकता है बाइबिल में लिखा है कि ईसूमसीह स्वर्ग में ईश्वर के दायें हाथ पर बैठेगा।

प्रश्न (६) युहन्ना के प्रकाशित वाक्यों में लिखा है कि ख़ुदा की सात रूह हैं और उत्पत्ति की पुस्तक में एक रूह का पानी पर तैरना लिखा है अब दोनों में कौनसी बात सत्य है यदि सात रूह हैं तो उत्पत्ति के समय एक रूह तो पानी पर तैरती थी शेष छः कहां थीं?

प्रश्न (७) इल्हामी ईश्वरीय पुस्तक का लक्षण (तारीफ़) क्या है ? इलहामी किताब की किस कसौटी से सचाई जानी जाती है ?

प्रश्न (८) ईसूमसीह ने जो तमाम पैग़म्बरों को बुरा कहा कि ' जितने मेरे आगे आये सब चोर और डाकू थे' (योहनकी इन्जील पर्व १० आयत ८) जो अपने से पहिले सब पैग़म्बरोंको चोर और डाकू बतावे और जो अपने को सबसे अच्छा कहै, आप किस कसौटी से उस की बात को सच्चा साबित कर सकते हैं ?

प्रश्न (६) मसीह ईश्वर का शरीर सम्बन्धी बेटा है या आत्मा सम्बंधी और वह अव्वल से बेटा है या मरियम के पेट से पैदा होने के बाद बेटा हुआ।

प्र०(१०) 'मसीह बिना बाप केवल माता से ही उत्पन्न हुआ' इसमें प्रत्यक्ष (जो आंखोंसे दीखे) प्रमाण तो है ही नहीं अनुमान (अन्दाज़ा) जैसे बादलों के होने से वर्षा का हो नहीं सकता क्योंकि इसके वास्ते कोई मिसाल (दृष्टान्त) नहीं कि जहां इकली माता से औलाद पैदा हुई हो और बिला दलील और मिसालके कोई अनुमान सही नहीं हो सकता, लिहाज़ा किसी प्रमाण से आप इस दावे को साबित कर सकते हैं ?

प्र० (११) ईसाई मतमें मुक्ति को अनन्त (अब्दी) कहा है और अनन्त वह पदार्थ होता है जो अनादि (अज़ली) हो क्योंकि वाजिबुल वजूद (नित्यपदार्थ) का आदि तथा अन्त दोनों नहीं होते लिहाज़ा मुक्ति की तो आदि है इस वास्ते वह वाजिबुल वजूद हो नहीं सकती नाहीं वह मुम-किनुल वजूद (अनित्य पदार्थ) हो सकती है क्योंकि मुम-किनुल वजूद के आदि तथा अन्त दोनों होते हैं। और

आप मुक्ति का अन्त नहीं मानने पर ईसाई मतकी निजात नामुमकिन (असम्भव है) आप दुनियां को नामुमकिन के गढ़े में क्यों गिराते हैं ?

प्र० (१२)नसबनामा (वंशावली ईसायसीहसे साबितहै कि इब्राहीम के ४१ वीं पुश्त में मसीहको तसलीम किया जाता है जब तक मसीह यूसुफ के वीर्य से पैदा न हो तो इब्राहीम की औलाद में किस तरह होसकता है जो आप का बेटा नहीं वह दादे का पोता किस तरह होसकता है ?

प्र० (१३) ईसाई मतानुसार गुनाह (पाप)का कारण क्या है पाप शरीर में रहता है या आत्मा में ?

प्र० (१४) रूह को आप मुरक्किब (संयोगज जो मिलके बने) मानते हैं या मुफरद(असंयोगज जो किसीसे मिलके न बनी हो) यदि मुरक्किब है तो किन अवयवों से बनी है यदि मुफ़रद है तो किस तरह पैदा हो सकती है किसी मुफरिद की पैदायश साबित करें ?

प्र० (१५) आप सिवा ईश्वर के दूसरी वस्तुको नित्य नहीं मानते तो रूह माद्दे के पैदा होने से पहिले खुदा किसका मालिक और किसजगह मुहीत (व्यापक था)

प्रश्न (१६) यदि ईसूमसीह ईश्वर या ईश्वर का पुत्र था तो उसे ईश्वरीय कर्मों का ज्ञान क्यों नहीं था जैसा कि मत्ती की इञ्जील पर्व२४ आ०३६ "उस दिन (प्रलय का दिन) और उस घड़ी (प्रलय की घड़ी) के विषय में न कोई मनुष्य जानता है न स्वर्ग के दूत परन्तु केवल मेरा पिता" यहां मसीह अपने को नहीं किन्तु ईश्वर को जो सब का पिता है जाननेवाला मानता है ?

प्रश्न (१७) यदि ईसू के पास शान्ति (तस्कीन) थी तो उसे अपने शिष्यों के लिये दूसरे शान्तिदाता के मांगने की आवश्यकता क्यों पड़ी जैसा कि योहना की इञ्जील पर्व १४ आयत १६ "और मैं पिता से मागूंगा और वह तुम्हें दूसरा शान्तिदाता देगा" यदि मसीह पर शान्ति न थी तो क्यों व्यर्थ संसार को उस पर विश्वास दिलाते हो ?

प्रश्न (१८) यदि मसीह सबके लिये मुक्ति देने आया था तो क्यों उसने वार २ अपने को केवल इस्नाईल की भेड़ों का चरवाहा बताया ?

प्रश्न (१९) क्या शराब बनाकर पिलाना ईश्वरकी करामात है यदि नहीं तो मसीह ने ऐसा क्यों किया ?इति

"वैदिक पुस्तकालय" मुरादाबाद के पुस्तकोंका

सूचीपत्र ।

श्री स्वामी दर्शनानन्दजी कृत पुस्तकें ।

स्वामी जी का तीन दर्शनों (शास्त्रों) पर भाष्य न्याय-दर्शन--भाषा भाष्य मू० १॥) वैशेषिकदर्शन-मू० १॥) सांख्य १]

उक्त स्वामी जी की पुस्तकें ।

ईसाईमत परीक्षा]॥ ओंकृजाट और एक डाक्टर पादरी साहब का मुबाहिसा =] वेद किस पर प्रकट हुए]॥ वेदों की आवश्यकता]॥ मुक्ति और पुनरावृत्ति -]॥ ईश्वर विचार प्रथम भाग]॥ द्वि०]॥ ईश्वर भक्ति प्रथम भाग]॥ नवयुवको उठो]॥ क्या वेदों के पढ़ने का अधिकार सबको नहीं]॥ धर्म--शिक्षा]॥ उन्नीसवीं सदी का सच्चा बलिदान]॥ बालशिक्षा -] महाअन्धेर रात्री]॥ दोहसुह्र]॥ मोनवाद]॥ श्राद्ध व्यवस्था]॥ अविद्या का प्रथम अङ्क]॥ दूसरा अङ्क]॥ स्थावर में जीव विचार]॥ षट्शास्त्रों की उत्पत्ति]॥ स्वामी दयानन्द का उद्देश्य]॥ कनफुकवे गुरू दैल की पूंछ]॥ आत्मिक बल]॥ आस्तिक शिक्षा]॥ ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र की व्याख्या]॥ प्रश्नोत्तरी]॥ कौपीन पञ्चक]॥ रामायणसार)॥ जैनी पण्डितों से प्रश्न ,॥ ईश्वर जगत् कर्ता है)॥ हिन्दुओं की छाती पर जहरीली छुरी -) बकरा विनय]। शिवलिङ्ग पूजा विधान ।। जैन धर्म ,॥ व्याख्यान मुक्तावली ॥।) कुरान की छानबीन ।) तत्वेत्ताऋषी की कथा ।]

पं० शङ्करदत्त शास्त्री

वैदिक पुस्तकालय, मुरादाबाद ।

॥ ओ३म् ॥

ईसाईमत परीक्षा

अर्थात्

मसीहीमज़हब के नियमों पर विचार दृष्टि

प्रथम भाग।

लेखक

श्री १०८ स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती

जिसको

पं० शङ्करदत्त शर्म्मा ने अपने लिये

अपने शर्म्मा मैशीन प्रिंटिंग प्रेस मुरादाबाद में

छापकर प्रकाशित किया।

द्वितीयवार १५००]   मूल्य)॥

धर्मार्थ बांटने वालों को १२) रु० हजार।

* ओ३म् *

ईसाईमतपरीक्षा ।
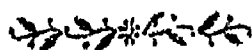
पाठकगण ! मजहबकी श्रेष्ठता उसके नियमों की उत्तमता से ज्ञात हो सकती है, परन्तु मज़हब के माने रीति और मार्ग के हैं, इसलिये जो लोग उद्देश्यों को नहीं जानते उनको शुद्ध अशुद्ध मार्ग का ज्ञान हो ही नहीं सकता और जबतक सत्यासत्य (सच और झूंठ) का ज्ञान न हो तब तक चलने का विचार करना बड़ी भारी मूर्खता है।

जिन लोगों को ईश्वर ने आँखें नहीं दी हैं वे भी लाठी के द्वारा मार्ग को टटोल २ कर चलते हैं जिससे ज्ञान होता है कि मनुष्य की बनावट ही में तमीज़ का माद्दा है और तमीज़ की आवश्यकता केवल शुभाशुभ (नेकबद या हानि लाभ जानने के लिये है किन्तु मनुष्यों की श्रेष्ठता पशुओं से इसी तमीज़ के कारण मानी गई है। यदि तमीज़ कोई बुरी वस्तु है तो उससे

कारण से मनुष्य को पशु से बहुत बुरा होना चाहिए नाकि श्रेष्ठ परन्तु बहुत गज़हब तमीज़ (विवेक) के मारग लेता शत्रु [जानी दुशमन] है।

वे तमीज़—विवेक के कारण से मनुष्य को दोषी समझते हैं, इसलिए तमीज़ उनमें श्रेष्ठता के बदले बुराई पैदा करती है हमारे बहुत से मित्र कहेंगे, कि संसार में ऐसा कोई मज़हब नहीं जो ज्ञान को बुरा जानता हो वरन प्रत्येक मज़हब इस बात पर एक है कि मनुष्य ज्ञान के कारण ही पशुओं से उत्तम है परन्तु ऐसा कहने वाले लोग भूल पर हैं क्योंकि सबसे पहले ईसाई मज़हब हो मौजूद है जो ज्ञान को पाप (दोष) समझता है यों तो प्रत्येक ईसाई कहता है कि ईश्वर की बातों में "अक्ल को दख़ल नहीं" लेकिन ईसाई धर्म की किताबें और ईसाइयों का ख़ुदा इससे भी बढ़कर तमीज़ (ज्ञान) का वैरी है वह नहीं चाहता कि मनुष्यों में तमीज़ पैदा हो बल्कि जिस समय उसने आदम को उत्पन्न किया उसी समय नेक व बदकी तमीज़ का फल खाने से रोका भला जब ख़ुदा ने ख़ुद तमीज़ को ऐसा बुरा समझा तभी तो

फल खाना आदम के लिए मना किया यहां यह प्रश्न पैदा होता है कि खुदा को यह तो ज्ञात ही था कि आदम इस पेड़ का फल अवश्य खायेगा (यहां तक तौरेत से पाया जाता है। परन्तु ज्ञात होता है कि उसे बिलकुल नहीं मालूम था कि आदम उस वृक्ष का फल खायेगा। क्योंकि उसने सवाल किया (देखो उत्पत्ति की पुस्तक पर्व ३ आयत ९ से ११ तक) तब परमेश्वर ईश्वर ने आदम को पुकारा और उससे कहा कि तू कहां है ? और वह बोला कि मैंने वारी में तेरा शब्द सुना और डरा क्योंकि मैं नंगा हूं इस कारण मैंने आपको छिपाया और उसने कहा कि किसने जताया कि तू नंगा है क्या तूने उस वृक्ष का फल खाया जिसका फल खाना तुझ को वरजा था ऊपर कही आयत से स्पष्ट ज्ञात होता है कि ईसाइयों का खुदा इतना कमइल्म-[अल्पज्ञ] है कि उसे बिला खोज किए काम के पीछे तक खबर ही नहीं होती जब इतना अल्पज्ञ है तभी तो नेक व बदकी तमीज़ के फल खाने से मना करता है ! बहुत से कहेंगे कि अभी तक कोई प्रमाण नहीं दिया कि खुदा ने ज्ञान का फल खाने को मना किया था इसका प्रमाण देखो उत्पत्ति

पुस्तक पर्व २ आयत १५ । १६ । १७ और परमेश्वर ईश्वर ने पहले आदम को अदन के बाग़ में रक्खा कि उसकी बाग़बानी और निगहबानी करे और खुदावन्द खुदा ने आदम को आज्ञा देकर कहा कि—

तू बाग़ के हर वृक्ष का फल खाया कर लेकिन नेक व बद की पहिचान के वृक्ष से न खाना जो खाया तो तू मर जायगा । यह है ईसाइयों के खुदा की आज्ञा ! भला जब खुदा ने तो नेक व बद की तमीज से आदम को अलग रक्खा लेकिन सांपने कृपा करके आदम को तमीज़ करादी ! जिससे हमारे भाई ईसाई भी दावे से श्रेष्ठ संसार [अशरफ़ुलमखलूकात] में उत्तम होने मे अपना भाग समझने लगे—वरना उनके खुदा को तो आदमी का वेतमीज़ ही रखना स्वीकार था ।

परन्तु*बाइबिली सांप ने इन्सान को तमीज़दार बना दिया वह नहीं चाहता था कि मनुष्य तमीज़ पैदा करके उत्तम बनजावे । बल्कि आदमी को ज्ञान प्राप्त करने से ईसाइयों के खुदा को इस बात का डर हो कि कदा-

* क्या बाइबिली सांप बातचीत भी किया करता था ?

चित् मनुष्य अमृत के पेड़ के फल खाले और हमारे बराबर होजावें बहुत से लोग हैरान होंगे कि खुदा और खौफ़ से क्या मतलब ? लेकिन हां जनाब ! ईसाइयों का खुदा इसी प्रकार का है इसके प्रमाण में देखो किताब उत्पत्ति [पर्व ३ आयत २२-२३] और खुदावन्द खुदा ने कहा कि देखो मनुष्य नेक व बद की पहचान में हम में से एक की मानिन्द हो गया अब ऐसा न हो कि अपना हाथ बढ़ावे और अमृत के वृक्ष से भी कुछ लेवे खावे और सदा जीता रहे इस लिए खुदावन्द खुदा ने उसको बाग़अदन से निकाल दिया।

इससे भी बढ़कर और क्या भय का सबूत दरकार है खुदा को डर क्यों २ हो क्योंकि एक और सबका मालिक तो परमेश्वर है नहीं जो सबपर प्रभाव अधिकार रखता है और न वह अनन्त ही है बल्कि ईसाई मज़हब में खुदाओं की एक क़ौम या जमाअत है जैसा कि ऊपर की आयतों में खुदा के अपने वाक्य से मालूम होता है।

क्योंकि वह कहता है कि मनुष्य नेक व बदकी तमीज़ में हममें से यानी खुदाई क़ौम में से एक की मानिन्द

होगया यानी नेक व बदकी तमीज़ में तो खुदाके बराबर हो गया सिर्फ अमृत के फल खाने का फर्क रहा ईसाई मज़हबमें खुदाओंको क़ौम होनेका एक और भी सबूत लेलीजिये पौलूसका खत इबरानियों को (पर्व १ आयत ९) ए खुदा ! तूने नेकोंसे मुहब्बत और बदोंसे दुश्मनी रक्खी इस वास्ते ए ईश्वर ! तेरे खुदाने तुझे तेरे शरीकोंका निस्बत खुशी के तेलसे अधिक अभिषेक किया क्या अब भी कोई ईसाई इनकार कर सकता है कि ईसाइयों का खुदा अकेला ही मालिक नहीं है बल्कि उसका खुदा और उसके शरीक साझी भी मौजूद हैं ?

भला ! जिनके खुदाका खुदा और शरीक (साझी) भी हों ! ! ! अब हम पूछते हैं कि वह किस खुदाके पाससे मुक्ति मानेंगे ?

पादरी गुलामसमसीह साहब और दूसरे पादरियों को जो खुदाके पाससे मुक्ति मानते हैं सोचना चाहिये कि किस खुदाके पाससे मुक्ति होगी क्योंकि ईसाइयोंके मज़हबमें तो खुदाओं का एक कुटुम्ब है जो खुदाके अपने वाक्यसे प्रगट हो रहा है और ईसाइयोंके खुदाका परिमित और शरीरधारी होना भी उनकी

किताबोंसे ही साबित होता है क्योंकि ईसाइयों का खुदा भी आदमीकी सूरतका और मनुष्यकी मानिन्द है इसके सबूतमें देखो किताब उत्पत्ति (पर्व १ आयत २६ तब खुदाने कहा कि हम मनुष्यको अपनी सूरत और अपनी मानिन्द बनावें इस आयतसे मालूम होता है कि ईसाइयों के खुदाकी शक्ल आदमीके अनुसार है और वह आदमी की तरह अल्पज्ञ और अल्प शक्ति वाला है इसके सिवाय खुदाके परिमित होनेका और भी सबूत है देखो किताब, उत्पत्तिकी पर्व ३ आयत ८ और उन्होंने खुदा और खुदाकी आवाज–जो ठण्डे वक्त बागमें फिरता था सुनी उसने और उसकी स्त्री ने आपको खुदावन्द खुदाके सामनेसे बागके पेड़ोंमें छिपाया अब बुद्धिमान् समझ सकते हैं कि ईसाइयोंका खुदा मनुष्य है या और कोई।

भला कैसे शोककी बात है कि जिस मज़हबका खुदा बागोंकी सैर करता फिरे–जिसको हसद व कीना ईर्षा द्वेष) हो जो तमीज यानी नेक बदकी पहिचान आदमी को देना न चाहे और जिसको डर हो कि अगर मनुष्य ने अमृतके पेड़का फल खाया तो हममेंसे एकके बराबर

हो जायगा जिनके खुदाको पैदायशके लिखते समय ये भी विचार न हो कि वह चौथे दिवस सूर्य और चांदको पैदा करे, भला दिन और रातका फर्क सूर्य और चांद के कारण है और ये चौथे दिन पैदा हुए तो ईसाई साहबान बतलावें कि पहले तीन दिन किस तरह हुए जो ज़ुबान (जीभ) से तो खुदाको सर्वशक्तिमान् कहें लेकिन अमलन ये साबित करें कि उसे काम करनेके पहले किसी विषयका ज्ञान भी नहीं होता क्या ऊपरकी आयतको पढ़कर कोई भी बुद्धिमान् पुरुष यह कह सकता है कि ईसाइयोंका खुदा सर्वशक्तिमान् और दयालु है ?

ईसाइयों को जो नेक व बदकी तमीज़ है वह खुदा की दया से प्राप्त नहीं हुई ॥

बल्कि सांपकी कृपाका फल है जो तमीज और मज़हब वालोंके पुरुषाओंको पशुओंसे श्रेष्ठ बनाने वाली साबित हुई वही तमीज ईसाइयोंके पूर्वज आदमको दोषका तमगा पहनाने वाली हुई जब ईसाई लोग ईश्वरको शरीरधारी और परिमित मानते हैं तो हम पूछते हैं कि ज़मीन और आसमानके पैदा करनेसे पहले आपका शरीर धारी खुदा जो आदमीकी शकल का है

कहां पर मौजूद था क्योंकि उस वक्त कोई जगह तो थी ही नहीं और शरीरधारी चीज बगैर जगहके रह नहीं सकती अब जब तक ईसाई लोग अपने शरीरधारी खुदाके मकानको ये न बतलावें कि वह कहां था तब तक उनके मज़हबी कायदे बालूकी भीतसे भी अधिक कमजोर रहेंगे और जिस तख्त पर अब उनका खुदा और उसका बेटा मय अपने शरीकों के बैठा है उस तख्तकी उत्पत्तिका जिक्र उत्पत्तिकी पुस्तकमें तो दिखाई नहीं देता कदाचित वे कदीम अनादि हो।

ईसाई लोग सिवाय खुदाके किसीको भी कदीम (अनादि) नहीं मानते अगर यह भी प्रश्न पैदा होता है कि एक खुदाके सिवाय बाक़ी खुदाओंको कौम क़दीम है और हर एक खुदा अनादि है तो उनमें आपस में कुछ फ़र्क था या नहीं और यह भी प्रश्न पैदा होता है कि खुदाने ज़मीन व आसमानको पैदा किया था क्योंकि अगर एक खुदा होता तो हरएक आदमी मानलेता कि एक ही पैदा करने वाला है चूंकि यहां खुदाओंकी कौम है तो यह सवाल जायज़ है कि उसने ज़मीन व आस-

मान बनाया और उस समय बाकी खुदा उनकी मदद करते रहे या नहीं और उस खुदाई कौममें सर्वशक्तिमान् खुदा कौनसा है क्योंकि अब तक मनुष्य मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि ईसाई मजहबमें कर्मों से मुक्ति हो ही नहीं सकती जिसका इकरार पादरी गुलाम मसीह साहब मास्टर स्कूल मैनपुरी ने अपनी किताब (रद्दत-नासुख) में किया है वह खुदाके फज़लसे मुक्ति मानते हैं और परमात्माओंकी एक कौम मालूम होती है। अब उसमें से किस खुदाके फज़लसे मुक्ति होगी और मुक्तिमें कौन पास होगा और आत्माका तकाज्ञा किस खुदाके पास पहुंचता है जब तक ईसाई साहबान इन सवालों का जवाब न दें तब तक उनके सारे दावे व्यर्थ मालूम होते हैं।

(१ हेतु) कोई परिमित चीज़ अपरिमित शक्तिरख नहीं सकती (२ हेतु) कोई साकार चीज बिना आधार यानी जगह के रह नहीं सकती (३ हेतु) सर्वशक्तिमान् परमात्माओं की जमाअत कुण्ड हो नहीं सकती (४ हेतु) सब विद्याओंका जानने वाला ईश्वर किसी काम में भूल नहीं कर सकता।

सर्वशक्तिमान् ईश्वरको कहीं यह डर हो नहीं सकता कि कोई उसकी उत्पन्न की हुई तमीज और अमृत का फल खाने से उसके बराबर हो जावेगा और आदमी की शकल वाला ईश्वर इस संसार को पैदा नहीं कर सकता क्योंकि परिमित चीज की शक्ति परिमित होने से उससे अपरिमित कामों का होना असम्भव (नामुमकिन) है हमारे बहुत से मित्र कह देंगे कि जब ऐसी दशा ईसाई मजहब की है तो बुद्धिमान लोग उसे कैसे मान गए? पाठकगण! यह तो आपको ऊपर की आयतों से स्पष्ट पता लग गया होगा कि ईसाई मजहब तो अकल व तमीज (बुद्धि व विवेक ज्ञान) को तो गुनाह का कारण बतला कर पहले ही अलग करा देता है जब बुद्धि दूर हो गई तो फिर तहकीकात कौन कर सकता है क्योंकि किताब पैदायश के लेखानुसार बुद्धि शैतान की दी हुई और मनुष्य को अपराधी बनाने वाली है केवल बुद्धिहीन पशु ही मजहब में अच्छे हैं और मसीह ने इंजील में भी इस बातको बतलाया है क्योंकि वह कुल्ल अपने चेलों को भेड़ें और अपने को गड़रिया

बतला रहा है भला जो गड़रिये की भेंड़ें हों यह तहकी-
कात क्या कर सकती हैं ? चाहें कोई ईसाई कैसा ही
बुद्धिमान हो वह जब तक भेड़ बनकर मसीह मज़हब की
बातों को न माने तब तक उसको मसीह मजहब पर
ईमान कामिल (पूर्ण विश्वास) नहीं हो सकता जो
मनुष्य इनकी भेड़ों को बुद्धि सिखावे उसे वह शैतान का
बहकाया हुआ कह देते हैं स्वयं भेड़ बन जाने से तमीज़
नहीं रही ईसाइयों का परमेश्वर तो मनुष्य को बेतमीज़
रखना चाहता था परन्तु सांप की कृपा से न रख सका
लेकिन उसके बेटे मसीह ने अपने बाप का काम पूरा
कर दिया अर्थात् मनुष्यों से अक्ल दूर करवा कर
उनको भेड़ बना दिया और आप गड़रिया बन गया
और करोड़ों आदमी उस गड़रिया कुक्की परवीमें लग
गये जहां ईसाई मजहबने अकलके दखलको मजहबसे
दूर किया वहां हज़ारों गलत बातोंको कबूल करना पड़ा
क्योंकि अक्ल ही एक ऐसा औज़ार है कि जिसके
कारण मनुष्य गलतियोंसे बचकर सीधी राह पर जा
सकता है ईसाई लोगोंका यह विश्वास कितना कमज़ोर
है कि वह आत्माको पैदा हुआ मानकर हमेशा अनन्त
मानते हैं परन्तु संसार में पैदा हुई चीजें कभी अनन्त

नहीं कहलाती क्योंकि एक किनारे वाली नदी नहीं होती लेकिन उनके मजहबकी निराली फिलासफी ही निराली है कि परमेश्वर को परिमित मानकर सर्व शक्तिमान मानना और आत्माको पैदा हुआ मानकर अनन्त बतलाना अगर कोई इनसे पूछे कि क्या कभी अनित्य भी अनन्त हो सकता है अनन्त होने के लिये अनादि होना लाजिमी है जो नित्य की तारीफ है आप उन बातों को जिनको गुजरने के बाद लोगों ने तहकीकात करके लिखा अपौरुष वाक्य बताते हैं।

इतिहास तवारीखको अपौरुष वाक्य ईश्वरीय ज्ञान बताने वाले भी हजरत हैं और आपके दिमाग में वह लेख जिनमें आपस में विरोध हो जिनके विषय बुद्धि के विरुद्ध हों कानूनकुदरत के खिलाफ हों अब अपौरुष वाक्य हैं तो कौनसी गलती है जिसके होने से आपका मजहब बरी हो सकता है? हमें अफसोस होता है कि जब इस मजहब के चलने वाले कहते हैं कि हम क्यों तहकीकात करें हमें अपने मजहब में शक हो तो हम बहस करें-अगले नम्बरों में हम मसीही मजहब की तमाम इल्मी कमजोरियों को सिलसिले वार पेश करेंगे और जिस तरह हमारे मसीह दोस्तों ने रामकृष्ण परीक्षा

मे उनके चाल व चलन की तहकीकीकात की है अब हम अकली तौर पर मसीह के चाल व चलनकी परीक्षा करेंगे और दिखलावेंगे कि श्रीरामचन्द्र व मसीह की सुशीलता में कितना अन्तर है जहां तक होगा हम किन्हीं प्राचीन बुज़ुर्गों पर अपनी तरफ़ से गढ़कर कोई अपराध नहीं लगावेंगे बल्कि बाईबिल के लेख पर ही अपनी तहकीकात की बुनियाद रक्खेंगे।

हम अपने व्याख्यानों में कमसे कम चालीस व्याख्यान ईसाई मजहब के मुतल्लिक पेश करेंगे और दिखलावेंगे कि जिन लोगों ने अपने धर्म के न जानने से ईसाई मजहब को कबूल किया है उन्होंने कैसी गलती खाई है और यह भी दिखलावेंगे कि इन गलतियों के पैदा होने के कारण क्या हैं गरजे कि हम थोड़े अर्से में ही ईसाई मजहब की चिकनी चुपड़ी बातों पर जिस को भोले भाले लोग गलती से सही समझकर भूल जाते हैं और अपने धर्म और जिन्दगी को तबाह करके ईश्वर के हुक्म की तामील से अलग होकर दुःखों के गहरे गड्ढे में गिर जाते हैं उनकी सच्ची तहकीकात पेश करके सर्व साधारण को ईसाइयों के भ्रम से बचाने का यत्न करेंगे ॥ इसके और भाग भी तयार हैं।

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती।

"वैदिक पुस्तकालय" मुरादाबाद के पुस्तकों का

सूचीपत्र ।

श्री स्वामी दर्शनानन्दजी कृत पुस्तकें ।

स्वामी जी का तीन दर्शनों (शास्त्रों) पर भाष्य न्याय-दर्शन--भाषा-भाष्य मू० १॥) वैशेषिकदर्शन--म० १॥) सांख्य १]

उक्त स्वामी जी की पुस्तकें ।

ईसाईमत परीक्षा]॥ औटूजाट और एक डाक्टर पादरी साहब का मुबाहिसा ≡] वेद किस पर प्रकट हुए]॥ वेदों की आवश्यकता]॥ मुक्ति और पुनरावृत्ति ~]॥ ईश्वर विचार प्रथम भाग]॥ द्वि०]॥ ईश्वर प्राप्ति प्रथम भाग]॥ नवयुवको उठो]॥ क्या वेदों के पढ़ने का अधिकार सबको नहीं]॥ धर्म--शिक्षा]॥ उन्नीसवीं सदी का सच्चा बलिदान]॥ बालशिक्षा ~] महाअन्धेर खाने]॥ बोहमुद्गर]॥ भौनवाद]॥ श्राद्ध व्यवस्था]॥ अविद्या का प्रथम अङ्क]॥ दूसरा अङ्क]॥ स्थावर म जीव विचार]॥ षट्शास्त्रों की उत्पत्ति]॥ स्वामी दयानन्द का उद्देश्य]॥ कनफुकवे गुरु बैल की पूंछ]॥ आत्मिक बल]॥ आत्मिक शिक्षा]॥ ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र की व्याख्या]॥ प्रश्नोत्तरी]॥ कोपीन पञ्चक]॥ रामायणसार]॥ जैनी पण्डितों से प्रश्न]॥ ईश्वर जगत् कर्ता है)॥ हिन्दुओं की छाती पर जहरीली छुरी ~) बकरा विजय]। शिवलिङ्ग पूजा विधान । जैन धर्म)॥ व्याख्यान मुक्तावली ॥।; कुरान की छानबीन ।) तत्त्ववेत्ता ऋषी की कथा ।]

पं० शङ्करदत्त शास्त्री

वैदिक पुस्तकालय, मुरादाबाद ।

* ओ३म् *

संख्या १

ईसाई मत में मुक्ति असम्भव है।

लेखक

श्री० १०८ स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती

जिसको

पं० शङ्करदत्त शर्म्मा ने अपने लिये
अपने शर्म्मा मैशीन प्रिन्टिंग प्रेस मुरादाबाद में
छापकर प्रकाशित किया।

द्वितीयवार १०००] मूल्य)॥ सैंकड़ा २)

॥ ओ३म् ॥

ईसाई मत में मुक्ति असम्भव है ।

महाशयो !

हमारे ईसाई मित्र मोक्षको अनन्त मानते हैं । जिसका आशय यह है कि इसका अन्त न होगा यद्यपि यह शब्द प्रत्येक जातिको प्रियहै किन्तु इसकी असलियत पर विचार करने से पोल खुल जाती है क्योंकि ऐसा कोई मत नहीं जो मोक्ष (निजात) को अनादि मानता हो क्योंकि जब वह जीवात्मा को ही अनादि मानने से इंकार करते हैं तो मुक्ति को अनादि कैसे कह सकते हैं, अब यह प्रश्न है कि जो मुक्ति पैदा होती है वह आत्मा का स्वभाविक गुण है, या नैमित्तिकगुण, यदि स्वभाविक गुण स्वीकार किया जाय तो मुक्ति के लिये किसी साधन की आवश्यकता

नहीं-किन्तु प्रत्येक मत अपने विश्वास को मुक्तिका साधन मानता है अतएव कोई भी मत मुक्तिको आत्मा का स्वाभाविक गुणनहींबतला सकता—क्योंकि मुक्ति के मानेछूटने के हैं। और छूटता वह है जो पहले बँधा हुआ हो अतएव मुक्ति आत्मा का स्वभाविक गुण हो ही नहीं सकता, प्रश्न यह भी उत्पन्न होता है कि यदि मुक्ति आत्मा का स्वाभाविक गुण नहीं, तो क्या जिस बन्धन से मुक्ति पाता है, वह आत्मा का स्वाभाविक गुण है ? उत्तर मिलता है नहीं, क्योंकि यदि आत्मा का स्वाभाविक गुण बन्धन माना जाय तो मुक्ति किसी दशा में हो ही नहीं सकती। स्वाभाविक गुण सदा गुणी के साथ ही रहता है और बन्धन के अर्थ ही खुले शब्दों में प्रकाशित करते हैं कि वह नैमित्तिक गुण है, क्योंकि बंधता वह है जो प्रथम छूटा हो अतः बन्धन और मुक्ति दोनों नैमित्तिकगुण हो सकते हैं। बस किसी नैमित्तिक गुणका अनादि होना ईसाई फ्लासफ़ी में ही हो सकता है और में नहीं-क्योंकि पदार्थ (मफहूम) का भाग तीन दशाओं में हो सकता है या वह नित्य सत् पदार्थ (वाजिबुलवजूद) हो जिसका

लक्षण विद्वानोंने यहकियाहै किजिसका आदि तथा अन्त न हो। अर्थात् वह अपने अस्तित्व के लिये साधनोंका आधीन न हो क्योंकि मुक्ति का साधनों के आधीन होना उसके नित्यपन को नष्ट करता है दूसरा पदार्थ अनित्य (मुमकिनुलवजूद) जिसका दो अभावों (नफियों) के मध्य होना आवश्यक है अर्थात् एक प्रागभाव जो उत्पत्ति से प्रथक हो दूसरा प्रध्वंसाभाव जो नाश के उपरान्तहो, क्योंकि मुक्ति को अनन्त मानने वाले उसके प्रध्वंसाभावको जो (नफ़ी) नाशके उपरान्तहो स्वीकार नहीं करते अतः मुक्ति अनित्य पदार्थनहीं कहला सकती। तीसरा पदार्थ सम्भव है जिस का होना तीनों काल में असम्भव हो और जिसका कोई दृष्टान्त न मिले जैसे शशशृंग (ख़रगोश के सींग) तथा वन्ध्या का पुत्र क्योंकि जिसका बेटा हो वह वन्ध्या कहला ही नहीं सकती। क्योंकि संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं जो उत्पन्न होकर अनन्त हो यदि किसी ने एक किनारे वाली नदी देखी होती तो ईसाइयों की मुक्ति सम्भव हो सकती है. किन्तु एक किनारे की नदी कहीं दृष्टि गोचर नहीं होती

अतएव अनन्त मुक्ति असम्भव ही मानी जा सकती है। बड़े आश्चर्य का स्थान है कि जब ईसाई मत में आत्मा अनादि न होने से अनन्त नहीं हो सकती, क्योंकि ईसाई और मुसलमान आत्मा को अनादि नहीं मानते। जब आत्मा अनादि नहीं तो अनन्त किस तरह हो सकती है, जब आत्मा अनन्त हो ही नहीं सकता तो मुक्ति अनन्त किसप्रकार कहला सकती है। हमारे ईसाई मित्र दूसरे मतों की परीक्षा कर रहे हैं कहीं राम परीक्षा कहीं कृष्ण परीक्षा गुरु परीक्षा इत्यादि यदि मुक्ति परीक्षा भी कर लेते तो इस असम्भव के गढ़े में स्वयं न गिरते और दूसरों को गिराते किन्तु इञ्जील के देखने में पता चल सकता है कि मसीहने ईसाइयों को अपनी भेड़ें बताया है। और भेड़ों की आदत है कि वह बिना बिचारे एक दूसरी के पीछे गढ़े में जा गिरती हैं, ऐसे ही हमारे ईसाई मित्र बिना विचारे ही गड़े में जागिरे हैं ईसाई मत अनादि तो है ही नहीं क्योंकि उसका सन् उसको नया बताता है उन्होंने जिस बौद्ध मत से इस बिचारको ग्रहण किया वहां ऐसा ही वर्णनथा यदि वह परीक्षा करके बुद्धके उद्देश्योंको अपने मतमें प्रकाशित करते तो ऐसी भूल न करते इस भूलकी

नींव उपनिषदों के न जानने से हुई है यह तो किसी को सन्देह नहीं होसकता कि उपनिषदोंसे ईसाई मत अथवा बौद्धमत बाद उत्पन्नहुए हैं क्योंकि जो उपनिषदोंमें प्रामाणिक बात है वह ब्राह्मणों और वेदों से लीगई है कि जिनपर बहुत से टीके विद्यमान हैं,शंकर स्वामी का भाष्य उपनिषदों पर है उपनिषदों में तो यह लिखा है कि ब्रह्मलोक की आयु तक जीव मुक्ति से नहीं लौटता, लोगों ने यह समझ लिया कि कभी नहीं लौटता उपनिषदोंसे हिन्दुओं ने लिया और उनसे बौद्धमत वालों ने और बुद्ध मत से ईसाइयों ने लिया,किन्तु यह प्रश्न है कि यदि ईसाई लोग मुक्ति को अनन्त स्वीकार करें तो उसको किस पदार्थ में रक्खेंगे हमारे माननीय पादरी ज्वालासिंहने कहाथा कि अनित्य पदार्थ दो प्रकार के होते हैं "एक मुख्य दूसरे गौण" किन्तु किसी प्रकार का अनित्य क्यों न हो उसमें जो लक्षण अनित्यकाहै वह तो अनिवार्य हीहै और अनित्य का दो अभावों के मध्य होना अवश्य ही अनिवार्य है।

यदि संसार भी अनन्त होजाये तो सूर्य चन्द्रादि ब्रह्माण्ड भी अनन्त होसकते हैं किन्तु उनको कोई अनन्त स्वीकार नहीं करता,अतएव अनन्त मोक्ष (निजात अब्दी)

एक ऐसा गड्ढा है जिसके आस्तित्त्व का सिद्ध करना हमारे मित्रों (ईसाईयों के लिये)को असम्भवहै, यदि अनंत अब्दीके अर्थ स्थिर (मुस्तकिल) नौकरीके समान चिरस्थायी के लिये जावें तो सम्भव हो सकता है, जिसको मानने से हमारे मित्र इंकार करते हैं, जहांतक ध्यान से अनुसंधान कियाजाता है,(मखलूक शै) संसारीवस्तु अनन्त (अब्दी) साबित नहीं हो सकती प्रत्येक सांसारिक वस्तु का नाश होना अनिवार्य है प्रत्येक उत्पन्न हुए के साथ मृत्यु अवश्य भावी है विलम्ब से हो वा शीघ्र हमारे ईसाई मित्र जब एक भी दृष्टांत नहीं दे सकते तो उनको इस विषय (मसलः) पर हठ करना व्यर्थ है, क्योंकि प्रत्येक पक्षके लिये युक्ति और दृष्टांत का होना अत्यावश्यकहै क्योंकि जिस दावे का कोई दृष्टांत नहीं उसको सत्य स्वीकार नहीं किया जासकता यदि हमारे ईसाई मित्र एक भी दृष्टांत देदें तो किसी बुद्धिमानको मानने से अस्वीकारी नहीं हो सकती जब नकशा और जुगराफिया और ज़मीन मिल जाते हैं तब किसीको उनके मानने में शङ्का नहीं होती क्योंकि आदि अनन्त पदार्थ का ईसाई लोग एक भी दृष्टांत नहीं देसकते, इसलिये आदि वाली मुक्ति का अनन्त बताना असम्भवोक्ति दोष से दूषित है। इति

"वैदिक पुस्तकालय" मुरादाबाद के पुस्तकों का

सूचीपत्र ।

श्री स्वामी दर्शनानन्द जी कृत पुस्तकें ।

स्वामी जी का तीन दर्शनों (शास्त्रों) पर भाष्य न्याय-दर्शन-भाषाभाष्य मू० १॥) वैशेषिकदर्शन- मू० १॥) सांख्य १]

उक्त स्वामी जी की पुस्तकें ।

ईसाई मत परीक्षा)॥ भोंदूजाट और एक डाक्टर पादरी साहब का मुबाहिसा ≈) वेद किस पर प्रकट हुए)॥ वेदों की आवश्यकता)॥ मुक्ति और पुनरावृत्ति ‌-)॥ ईश्वर विचार प्रथम भाग)॥ द्वि०)॥ ईश्वर प्राप्ति प्रथम भाग)॥ नवयुवको उठो)॥ क्या वेदों के पढ़ने का अधिकार सबको नहीं)॥ धर्म शिक्षा)॥ उन्नीसवींसदी का सच्चा बलिदान)॥ बालशिक्षा -) महाअन्धेर रात्री)॥ मोहमुद्गर)॥ भोगवाद)॥ श्राद्ध व्यवस्था)॥ अविद्या का प्रथम अङ्क)॥ दूसरा अङ्क)॥ स्थावर में जीव विचार)॥ षटशास्त्रों की उत्पत्ति)॥ स्वामी दयानन्द का उद्देश्य)॥ कनफुकवे गुरु दैल की पूँछ)॥ आत्मिकवल)॥ आत्मिक शिक्षा)॥ ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र की व्याख्या ॥प्रश्नोत्तरी)॥ कोपीन पञ्चक)॥ रामायणसार)॥ जैनी पण्डितों से प्रश्न)। ईश्वर जगत् कर्ता है)॥ हिन्दुओं की छाती पर जहरीली छुरी -) बकरा विनय)। शिवलिंग पूजा विधान)। जैन धर्म)॥ कुरान की छानबीन ।) तत्वेत्तात्रूपी की कथा ।)

पं० शङ्करदत्त शर्मा

वैदिक पुस्तकालय–मुरादाबाद,

टरेक्ट नम्बर १४.

महा अन्धेर रात्रि

जिस को

स्वामी दर्शनानंद सरस्वती जी ने

दयानन्द टरेक्ट सोसाइटी के हितार्थ

महाविद्यालय मैशीन प्रेस

ज्वालापुर हरिद्वार में

छपवाया

—=+:※:+=—

४००० [प्रति   [मूल्य)।

ओ३म्

महा विद्यालय

में गुरुकुल, अनाथालय, उपदेशक पाठशाला, साधूआश्रम, गौशाला, आर्टस्कूल; इत्यादि उपस्थित हैं ॥

* ओ३म् *

महाअन्धेर रात्रि ।

प्यारे पाठक गण ! एक वार वर्षा ऋतु में जब कि चारों ओर घनघोर घटा छारही थी और अन्धेरा इस कदर होगया था कि अपना हाथभी दिखाई न देता था उस समय एक स्त्री और पुरुष अपने घर में वेखवर सोरहे थे चोरों ने उनके घर में कुमाल लगाकर वहुत रोशनी करली थी और वेतहाशा उसका माल लेजा रहे हैं उन्हें अपनी और अपने माल की कुछ सुध न थी और न यह मालूम था कि हमारे घर में चोर घुस आये हैं सोने के समय वे अपने घर को मजबूत समझ कर निडर सोये थे उस समय उन्हें कभीभी यकीन नहीं था कि ऐसे मजबूत घर में किस तरह पर चोर आ सकते हैं लेकिन वर्षा ऋतु के जोर जमाने के भाव ने उस मकान को ऐसा मजबूत नहीं रहने दिया था जैसा कि वह समझ कर सोये थे चोरों ने मुख्तलिफ रास्ते उस घर से माल निकालने के लिये पैदा कर लिये थे जिनका हाल घरवालों से विलकुल छिपा हुआ था इस तरह पर जब एक चौथाई के करीव माल निकल गया

और यकीन था कि शेषभी निकल जाता कि उस वर्षा में एक बिजली का गोला छूटा जिसने सोते हुओं को गहरी नींद से जगा दिया और बिजली कड़की पहले पुरुष जागा और उसने देखा कि घर में चारों ओर छेद होरहे हैं उसने उनको अच्छी तरह देखने के वास्ते कि किस कद्र माल गया है सामान रोशनी की तलाश शुरू की कुछ तो अन्धेरे के सबब से और दूसरे इस सबब से कि चोर सामान रोशनी को पहले ही लेगये क्यों कि वह उन स्त्री पुरुष के बल और पराक्रम का इतिहास सुन चुके थे उन्हें ख्याल था कि जब तक ये सोये हुए हैं तब तक हम इनका कुछ लेजा सकते हैं लेकिन इनके जागने पर माल लेजाना बल्कि जान बचानाभी मुश्किल होगा और रोशनी के न होने से अगर ये जागभी जावें तो हमारा कुछभी न कर सकेंगे क्यों कि अव्वल तो अन्धेरी रात में इस को हमारा स्वरूप ही नजर न आवेगा और दूसरे इस को अपने खोये हुए माल का बिलकुल हाल न मालूम होगा जिस के लिये ये हमारा पीछा करने के लिये तैयार होजावे उनका यह इरादा था कि वह उस का माल लेजाने के बाद उनको जान से भी मार डालें लेकिन अभीतक उसका इन्तजाम नहीं होने पाया कि अचानक बिजली की कडक ने उसे जगाही दिया पुरुष ने उठते ही सामान रोशनी की तलाश शुरू की लेकिन रोशनी के न होने से सामान रोशनी का तलाश करना भी उसके लिये मुश्किल होरहा था लेकिन बिजली की रोशनी

उसको जरा २ सी मदद देरही थी जिसके ज़रिये से उसने यह मालूम कर लिया था किमेरे घर में चोरों ने बहुत से छेद कर लिये हैं और बहुत सा मालभी लेगए हैं उसने चाहा कि उन सूराखों को बन्द कर के चोरों के पीछे अपना माल छीनने के लिये जावे और जिस कद्र होसके अपना माल वापिस, ले, उसका ख्याल था कि जबतक यह सूराख बन्द नहीं होंगे तबतक चोरों के हाथ से माल बचाना बहुत ही मुश्किल होगा इतने में उसकी स्त्री भी उठ खड़ी हुई और उसने पुरुष से पूछा कि तुम क्या करना चाहते हो उसने कहा कि इन सूराखों को बन्द करके इन चोरों को पकड़ने और माल वापिस लानेकी कोशिश करूंगा स्त्री ने कहा कि मैं हरगिज ऐसा न करने दूंगी यह सूराख तो घर का साज व सामान दूसरों को दिखलाते हैं।

क्योंकि हमारे दर्वाज़े सेतो बहुतसे लोग हमारे घर के पदार्थों को देख नहीं सकते और तुम किसी चोर को मत पकड़ो अगर हमारा कुछ माल लेगयेतो लेजाने दोयह हमारी किस्मत का नहीं वह उन्हीं का होगा हमारे घर में कुछ कमी नहीं पुरुष ने उसको समझाया कि अगर थोड़ा २ इसी तरह लेजाते रहेंगे तो तुम एक दिन कंगाल होजाओगी और इन सूराखों को बन्द करना तो भला काम हैक्योंकि उनकी राह से शत्रु आकर हमें बहुत हानि पहुंचा सकते हैं स्त्री ने कहा सना

तन से ये सूराख चले आते हैं अब इनके बन्द करने की कोई आवश्यकता नहीं और तुम जो कहते हो कि थोड़ा २ माल चोरों के पास बराबर निकल जानेसे तुम कंगाल होजाओगी मेरे पास इतना माल है कि हज़ारों वर्षों में खतम नहोगा और आगे का हाल कौन जानता है ग़रज़ कि इसी तरह की बहस और प्रश्नोत्तर होते हुए स्त्री पुरुष के पीछे एसी पड़ी कि जिस को बाहर जाना और सूराखों का बन्द करना और अपना माल वापिस लाना बहुत ही मुश्किल होगया। जब चोरों ने देखा कि उसके पीछे भूतनी होकर चिपट गई है किसी तरह भी अपना माल हमसे वापिस नहीं लेसकता और न ऐसी दशा में हमसे सामना कर सकता है उन्होंने दिलेर होकर पुरुषपर हमले करने शुरु किये और सूराखों के रास्ते और भी माल लेजाने लगे बेचारा पुरुष जिसको अपने बुजुर्गों का माल जाता हुआ देखकर बहुत ही शोक होरहा था कि क्या करें इधर दुश्मनों का सामना इधर स्त्री की ज़बरदस्ती और कटुवाक्य उस पर रोशनी की कमी ग़रज़ कि एक मुसीबत हो तो उसका बन्दोबस्त भी होसकता उसका हरएक पत्ताभी दुश्मन हो रहा था लेकिन पुरुष जिसको अपने बुजुर्गों से मज़बूती और बुद्धिमानी से काम करने का सबक मिल चुका था वह बराबर अपना काम करता चला गया थोड़े अरसे में स्त्री जब उसको रोकते २ थक गई और उसने छोड़कर कहा जा निपूते जा मेरे घर से बाहर

जायज़ कर दिया ऐसा होते ही चारों ओर से गैर मजब वालों के हमले भारतवर्ष पर होने लगे और उन्हों ने वैदिकधर्म के मानने वालों को अपने मत में लाना शुरूकिया वैदिकधर्म में वाममार्ग के साथ मुद्दत तक पड़ौस रहने से उनकी बहुतसी बातें आगई थीं जिससे वैदिकधर्म ऐसा मजबूत नहीं रहाथा जैसा कि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर महाभारत के ज़माने तक। इसकी कमजोरी और वाममार्गकी वृत्रासने यहांपर बौद्ध जैनी मुसलमान व ईसाई चारों मज़हबों को वैदिकधर्म के अनुयायी यानी वेद के मानने वालों को अपने धर्म में लाने का मौका दिया यहांतक कि भारतवर्ष में बौद्ध और जैनमत के फैलने के बाद करीबन छः करोड़ आदमी मुसलमान होगया और अरसा १५० साल में करीबन २५ लाख हिन्दु ईसाईधर्म में चले गये ऐसी हालत में दुनिया के तमाम मज़हबों का यह ख्याल था कि इसीतरह एक दिन वैदिकधर्म का खातमा होजायगा और कुल वेद के मानने वाले ००० होजावेंग लेकिन परमात्मा को यह बात मंज़ूर नहीं थी कि उसका दिया हुआ ज्ञान संसार में से अलग होजावे और लोग हमेशा के लिये ऐसी महाअंधेरी रात्री में पड़े रहें इस वास्ते उसने अपनी कृपासे इस घनघोर रात्री में एक बिजलीका गोला छोड़ा जिससे एकदफा सारे संसार की नींद को दूर करदिया अगरचे बहुत से आदमी थोडी देर बाद फिर ख्वाब में चले गये लेकिन एक बार तो सबकोळिये हल चल पड़गई वह गोला स्वामी

दयानन्द के उपदेश का जोरदार शब्द था जिसने भारतवासियों को नहीं बल्कि कुल संसार को धर्म की तहक़ीकात की तर्फ रुजू करदिया अमरीका और इंगलैंड के माद्दह परस्त मुल्कों में जहांपर नास्तिकता का जोर हद से बढ़गया था हजारों आदमियों को धर्म की तहकीकात का शौक हुआ और लोग ईश्वरीयज्ञान की तहकीकात में लगगये उस महात्मा के उपदेश से आर्य्यसमाज ने जागकर इस बात की तलाश की कि किस तरह पर हमारे मुल्क की यह हालत होगई है लेकिन मुसलमान ने हिन्दुओं के मजहब की कुल किताबें जो उनके हाथ लगीं जला दी थीं और बहुतसी किताबें हिन्दुस्तान की जरमन वग़ैरह योरुप के देशों में चली गईं इसलिये आर्य्यसमाज को वेदों की किताबों की तलाश की बहुत जरूरत मालूम हुई जिस से वह अपने भाईयोंको जो वाममार्ग से पैदाहुई बुरी रीतियों को देख वैदिकधर्म को छोड़ ईसाई और मुसलमानी मजहब में जारहे हैं किसी तरह उन रीतियों को दूरकर उनको वैदिकधर्म सेपतित होने से बचावें और जो लोग वैदिक धर्म से पतित हो हो चुके हैं उनको वापिस लाने की कोशिश करें ताकि वैदिक धर्म फिर वैसी ही हालत में आजावे जैसी कि वह महाभारत के पहले था लेकिन आर्य्यसमाज के बाद ही एक स्त्री धर्मसभा के नाम से उठी जिसने आर्यसमाज का दामन पकड़ लिया और कहा खबरदार तुम इन बुराइयों को दूर मत करो इन से हमारे

धर्म्म की खूबी और बुजुर्गी जाहिर होती है और तुम को क्या पड़ी है कोई धर्मपर रहे या नरहे और आर्यसमाजका जो ख्यालथा कि वैदिकधर्म के मानने वाले जो ईसाई मुसलमान इत्यादि मजहबों में अपनी गलती या किसी विषय के लालच से गये हैं और जो हमारी तरह ऋषियों की औलाद हैं लेकिन अपने बुजुर्गों के सच्चे धर्म को बसबब नादानी के हानि पहुंचा रहे हैं उनको समझा कर और प्रायश्चित्त कराकर फिर उनको ऋषिसन्तान बनादिया जावे कि श्रीमान् स्वर्गवासी महाराज जम्बू कश्मीरने काशी इत्यादि के पण्डितों से साबित कराद्रिया है कि धर्म के न जानने से जो ईसाई या मुसलमान हो जावें उनको प्रायश्चित्त करके शुद्ध कर लेना बिलकुल धर्मशास्त्र और वेदों की आज्ञा के अनुसार है जिस के लिये महाराज ने (रणवीररत्नाकर) नामी पुस्तक पर बहुत से पण्डितों के हस्ताक्षर भी करादिये हैं लेकिन भारतवर्षके कुदिनने अबभी धर्म सभा के मूर्ख और अगस्वार्थी मनुष्योंको प्रायश्चित्त का शत्रु बना रक्खा है जिस से वैदिकधर्म की वह कमी जो मुसलमान बादशाहों की जबरदस्ती से पैदा होगई थी पूरी होनी कठिन ज्ञात होती है बावजूद कि धर्मसभा में ऐसे लोग भी मौजूद हैं जो मुसलमान डाक्टरों की दवाई इस्तेमाल करते हैं जिस में उनका पानी मिला होता है. मुसलमानों के हाथ का सोडावाटर पीलेते हैं. मुसलमान वेश्याओं के साथ खालेते हैं इस किस्म के मुसलमानों के साथ खाने

वालेतो शुद्ध हैं और जो लोग धर्म्म रक्षा के लिये मुसलमा और ईसाइयों को जो पहले हिन्दू थे शुद्ध करके मिलालेते वह अशुद्ध हैं सच है घोर कलियुग का यही धर्म्म है के रक्षक अपवित्र और वेश्यागामी और शराबी और कबाबी पवित्र अगर इतना अज्ञान न छाजाता तो भारत का दुर्भाग्य किस तरह कामियाब होता।

प्यारे पाठक गण! आर्य्य समाज जो भारत वर्ष के धर्म और विद्या का बचाने वाला है जिसका उद्देश्य ही सम्पूर्ण संसार को सुख पहुंचाना है और अपने तन मन से आपकी सेवा में लगरहा है उसको अपस्वार्थियों ने झूंठी गप्पों और धोखे की चालों से ऐसा बदनाम कर दिया है जिस से भारत वासी अपने परमहितकारक को नफरत की निगाह से देखते हैं जहां पर इस क़िस्म की महाअन्धेर रात्री हो वहां उन्नति की आशा करना बहुत ही कठिन है। अफसोस की बात तो यह है कि आज ऋषियों की सन्तान का धर्म रोटियों पर बिकरहा है सब लोग ऐसे मूर्ख हैं कि वह धर्म के शब्द की असलियत सेभी जानकार नहीं और लोग जानते हैं कि उनका रोजगार अभी खराबियों और बुरी रीतों पर कायम है अर्थात् इस ख्याल में हैं कि आज हम सचाई की ओर ध्यान देंगे तो लोगों में हमारी विद्याकी पोल खुल जायगी वह कहेंगे कि आजतक पण्डित होकर गलत कायदों के कायल रहे गर्ज कि पढ़े लिखे और पण्डित तो इस आफत में फँसे हैं और

अनपढ़ और मूर्खता के कारण मझधार में डूब रहे हैं इन लोगों के अपस्वार्थ और खुदगर्जी और बेवकूफी से वैदिक धर्म प्रति दिन तबाह होता चला जाता है ये लोग यह नहीं सोचते कि उनकी बेवकूफी से छः करोड हिन्दू मुसलमान होगए और २५ लाख आदमी ईसाई होगए आज जिस कदर हानि हिन्दू मुसलमानों के झगडों से हो रही है अगर ये भाई जो मुसलमान हुए हैं न होते तो कभी मुमकिन न था कि भारत वर्ष की यह दशा होती लेकिन आज आधी ताकत जिस से कुछ मुल्क का फायदा होता आपस के झगड़ों में खर्च होरहा है जो आर्य्य समाज ने इस बात की कोशिश की कि हिन्दुओं को मुसलमान और ईसाई होने से बचाए और जो लोग गलती से होचुके हैं उनको प्रायश्चित्त कराकर वापिस ले तो यह अपस्वार्थी लोग बेवकूफ लोगों को बहका कर आर्य्य समाज को धर्म रक्षा से बाज रखने की कोशिश करते हैं।

प्यारे पाठकगण! सनातन धर्म सभा अगर किसी अच्छे काम का प्रचार करती तो आर्य्य समाजको बहुत मदद मिलती लेकिन यह तो बजाय उपकार के झगडे में डालने का बन्दोबस्त करती है अगरचे आर्यसमाज प्रति दिन बहुत उन्नति करता चला जाता है लेकिन धर्मसमाज के झगड़ों ने आर्यसमाज की स्प्रिट को बिलकुल बदल दिया है आर्यसमाज का उद्देश्य यह नहीं था कि वह वैदिकधर्म के मानने वालों में और झगडे उपस्थित कर

इस का उद्देश्य तो केवल वैदिक धर्म की रक्षा करना था और जो छिद्र जैन, बौद्ध, ईसाई और मुसलमान लोगों की तालीम से वैदिकधर्म में पैदा होगये हैं उनको बिल्कुल अलग करके शुद्ध वैदिकधर्म को जिस के सामने संसार की किसी मत का बल नहीं कि अपने मत को उपस्थित रखके संसार भर में फैलादे लेकिन शोक तो यह है कि भारतवर्ष में उत्तम वर्ण और सब से श्रेष्ठ कक्षा के मनुष्य यानी ब्राह्मण और साधु अब उन्हीं अशुद्धियों के बचाने वाले हो गये हैं जो और मतों के सम्बन्ध से पैदा होगई हैं ॥

प्यारे पाठकगण ! क्या कोई सनातनधर्म का पण्डित बतला सकता है कि वेद और वेदानुकूल पुस्तकों में कहीं मुसलमान मुर्दों की कबर की पूजा लिखी है ? आप में से कोई इस का सबूत दे सकता है ? कदापि नहीं ? क्या कोई बतला सकता है कि सनातन ऋषि मुनि इसी भांति पर धर्म से अलग रह कर केवल संसार का धन कमाने को ही धर्म कर्म मानते थे ? जैसा कि आज कल हमारे बहुत से भाई कर रहे हैं, क्या यह रासलीला का खेल कोई सनातन धर्म सिद्ध कर सकता है क्या अपने बुजुर्गों को चोर और जार बतला सकता है ? जिस तरह हमारे सनातन धर्मी लोग महात्मा कृष्ण जैसे योगिराज को बतला रहे हैं, क्या कहें एक बात हो तो बतलावें देखो जिधर देखो तिधर चौपट काम हो रहा है केवल

स लिये कि हमारे देश के खत्री वनिये अपने धर्म पुस्तक के
ढने के लिये विद्या की आंखें नहीं रखते इस कारण उन को
न्धे की भांति दूसरे की अन्धाधुन्ध तालीम खोती चली जाती
जिस प्रकार एक अन्धा दूसरे अन्धे के अन्धा होने को नहीं
ान सकता ऐसे ही यह मूर्ख लोग अनपढ़ ब्राह्मणों और सा-
ओं की मूर्खता और अशुद्ध तालीम को नहीं समझ सकते
स लिये हर एक आदमी को हौसला पैदा होगया है कि वह
ो चाहे शास्त्रों का नाम लेकर उन को समझावें ॥

प्यारे पाठकगण ! अगर्चे शास्त्रों और बुजुर्गों में इन की
द्धा काबिल फखर है लेकिन ज्ञान की कमी से हानिकारक
रही है अगर ये मनुष्य वेदविद्या की कुछ तालीम पाकर कुछ
वेचारते और उस पर इसी श्रद्धा से अमल करते जैसा कि
ाज कल करते हैं तो जरूर मोक्ष पद के भागी होते लेकिन
फसोस तो यह है कि ये धर्म सभा के लोग ऐसे खुद गलत
रहे हैं कि अपने कायदों की आप जड़ काटते हैं कहने तो
यह हैं कि वर्ण उत्पत्ति से है और आर्य समाज से दिन रात
स बात पर झगडा करते हैं कि गुण कर्म से वर्ण नहीं बल्कि
ौयिंसे है लेकिन अमली तरीका इस के बिलकुल खिलाफ है
लगुन की सभा के बड़े २ उपदेशक बढ़ई रोड़े इत्यादि जातियां
के हैं जो कोई तो सागर संन्यासी वन गया है और कोई उदा
ी कोई निर्मला गरज़े कि लोगों ने साधुओं का भेष बदल

लिया है अब ज़रासे भेष से तो उनका वर्ण बदल गया कि अब उन के धर्म सभा के ब्राह्मण तक स्वामी जी महाराज कहते और उनकी इज्जत मिस्ल अपने गुरु संन्यासियों के करते हैं और यह खयाल नहीं करते कि वह वीर्य से वढ़ई हैं या शूद्र हैं। उन को वर्ण से कोई गरज नहीं सिर्फ भेष से गरज़ है।

प्यारे पाठकगण! अपनी गलत समझ से भेष्वरान् सनातन धर्म सभा अमल वही करते हैं कि जो आर्य समाज के अनुसार है लेकिन जवानी तौर पर दिन रात स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे धर्मात्मा परोपकारी को कि जिसने वैदिक धर्मियों की काया प्लट दी अर्थात् जो वैदिक धर्मी मुसलमान और ईसाई उन के मुकाबिले में बहस करने से घबराते थे आज मुसलमान और ईसाई उन से बहस करने में घबरा रहे हैं और पहले हिन्दू लोग दिन रात मुसलमान ईसाई होरहे थे अब बहुत ही कम लोग हैं जो धर्म समझ कर मुसलमान और ईसाई हों बलकि उन को कमजोर धर्म समझ कर वापिस आरहे हैं कई हजार आदमी वापिस आचुका है यह सनातन धर्म के पंडित जानते हैं कि स्वामी दयानन्द के सिद्धान्त बिलकुल वेद के अनुकूल हैं और उस से ऋषियों की राय के विरुद्ध कुछ नहीं लिखा और उन की मिहनत और गालियों

से आर्य्य समाज का कुछ नुकसान नहीं हो सकता केदिन अपने रोजगार की हानि समझ कर ऐसे अधर्म और कृतघ्नता को कर रहे हैं परमेश्वर इस महारात्रि को मिटा कर हमारे भाइयों को बुद्धि दे जिस से वे सनातन वैदिक धर्म का ग्रहण कर के उस का प्रचार करें ॥

॥ इति भूयात् ॥

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।
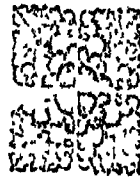
जैनमतदर्शन

अर्थात्

जैनबौद्धमतकी एकता पर विचार

ट्रैक्ट नम्बर १

जैन ग्रन्थोंसे तथा समाचारपत्रों से उद्धृत

जिसको

पं० रामदयाल शर्म्मा सर्वैयर इटावा ने

छपाकर प्रकाशित किया ।

Printed by B. D. S. at the Brahma
Press—Etawah.

प्रथमवार १००० } संवत् १९६७ { मूल्य -)

फुटकर खरीदनेवालों को ३।) रु० सै० मिलैंगी

भूमिका

वाचकवृन्द ! वेदमत मार्त्तण्ड को बौद्ध (जैन) घटा ने ऐसा दबाया है कि संसार में घोर रात्रि प्रतीत होती है यद्यपि श्री स्वामी शंकराचार्य्य आदि महापुरुषों ने कठिन प्रयत्न से वेद भगवान् भास्कर के अगणित गुण गण समझादिये थे अतः अधिकतर नास्तिकों की पोल खोलने के कारण आस्तिक भाई शंकराचार्य्य स्वामी को अवतार मानने लगे वास्तव में ऐसी ही उनकी प्रतिष्ठा होनी चाहिये। क्योंकि उन्हों ने नास्तिक मत का खंडन करके वैदिक धर्मका उद्धार किया था उनके कुछ काल बाद यही बौद्ध, जैन के नाम से प्रगट हुए इन समस्त बातों को आदर्श रूप से दिखलाया गया है। आशा है कि सत्यग्राही पुरुष इस पुस्तक को देख अवश्य आनंदित होंगे--

वाचकवृन्द ! इस पुस्तक के लिखने से मेरा अभिप्राय यही है कि जैन महावीर और गौतम बुद्ध एक ही हैं निम्न लिखित लेख से आप को मालूम होगा कि इन दोनों में कुछ भी भेद नहीं है।

जैन महावीर ।	गौतम बुद्ध ।
(१) जैनी धर्म हमेशा कहते हैं	बौद्ध धर्म मत्रक मानते हैं
(२) महावीर नाम गौणिक विख्यात है	गौतमको भी द्वीप वंश में महावीर के नाम से लिखा है
(३) महावीर के पिता का नाम सिद्धार्थ कहते हैं	गौ० सिद्धोदन था
(४) स्त्री का नाम जसोदा	गौ० अमोदा
(५) राजा का पुत्र	राजा का पुत्र
(६) ३० वर्ष की उम्र में गृह त्याग	३० वर्ष की उम्र में गृह त्याग
(७) महावीर के सिंह का चिन्ह	गौतम भी शाक्यसिंह
(८) पैदायश काल में पृथ्वी हिली	पैदाइश काल में भूकम्प आया
(९) पैदा होनेसे पहले मा ने स्वप्न देखे	„ „ „ „
(१०) पैदायशी तीनकालका धारक है	पैदायशी अन्तर्यामी है

(११) एकाएक स्वयं दीक्षाली	एकाएकी स्वयम् दीक्षाली
(१२) पहला व्रत खीर से पारना किया	पहला व्रतखीर से पारना किया (देखो ललित विस्तर)
(१३) तपकालमें देवताने उपसर्ग दिया	तपकालमें देवता ने उपसर्ग दिया
(१४) तपकालमें सर्प ने आकर फणाकी छाया की	तप काल में आकर सर्प ने छाया की
(१५) समोसर्ण देवमयबना	देवमय बौद्ध मंडप रचा गया
(१६) चर्वर छत्र देव में आये	चवंर छत्र देवमें आये
(१७) धर्म चक्र प्रवर्त्तन किया	गौतम ने धर्मचक्र परिवर्त्तन किया
(१८) भामंडल था	मुख पर भामंडल था
(१९) वाणी पशु पक्षी सुनने आये	वाणी पशु पक्षी समझते थे
(२०) इक्ष्वाकु वंश मानते हैं	गौतम को भी इक्ष्वांकु वंश मानते हैं
(२१) उत्पन्न होतेही इन्द्रने अभिषेककिया	उत्पन्न होते ही इन्द्रने अभिषेक किया

(२२) शरीर में चक्रवर्ती के चिन्ह थे	शरीर में चिन्ह थे
(२३) महावीर का अनुयायी विम्बसार मरते २ तक रहा	गौतम का अनुयायी विम्बसार मरते२ दम तक रहा
(२४) राजा से पहले चेला नारायणी अनुयाई हुई	राजासे पहले चेलानारायणीअनुयाईहुई
(२५) महावीर का केवल समय शरीर ५ हजार धनुष आकाश में उठा	गौतम का शरीर केवल ५ ताल वृक्ष समान आकाश में उठा
(२६) महावीरका शिष्य मोगलायनथा	गौतम का शिष्य मोगलायन था
(२७) महावीर पर मोगलायन रुष्टहुआ	गौतम से मोगलायन रुष्ट हुआ
(२८) महावीर गोशाला शास्त्रार्थ करने गया	गौ० मोगलायन शास्त्रार्थ करने गयाथा
(२९) साधू चातुर मास करते थे	चातुर मास करते थे
(३०) जिन२ नगरोंमें चातुर मासकिया	उन २ नगरों में चातुर्मास किया

(३१) आनंद महावीरका परम भक्त था	आनंद गौतम का परमभक्त था
(३२) महावीर केवल ज्ञानी अरहन्तों को मानता है	गौतम भी अरहन्त को ज्ञानी बतलाता है।
(३३) बिना अरहन्त मुक्त नहीं होसक्ता	बिना अरहन्त मुक्ति नहीं होती
(३४) अपनी स्त्री को संगत में शामिल किया	स्त्री को संघमें सम्मिलित किया
(३५) उदायनचन्द्र पद्योत आदि राजा अनुयायी थे	उदायन चन्द्र पद्योत आदि राजा अनुयायी थे
(३६) महावीर की चंदन की प्रतिमा उदायन राजा के पास थी। (देखो जैन कथा रत्न कोश)	गौतम की चंदन की प्रतिमा उदायन राजा रखता था।
(३७) महावीर की पूजा करने मेंडक चला	गौतम की पूजा करने मेंडक चला
(३८) द्वादशाङ्ग वाणी थी	बारह क़िस्म का धर्म बतलाया है

(३९) आठ वर्ष के बालक साधू होते थे	आठ वर्ष के बालक साधू होते थे
(४०) त्रिरत्न धर्म बतलाया है सम्यक् दर्शन आदि	त्रैविद्या युक्त (देखो ललित विस्तर अध्याय २५)
(१४) महावीर का शिष्य एक नामी लुटेरा हुआ	गौतमका एक शिष्य नामी लुटेरा हुआ
(४२) १४, ५, ८ तिथि पुण्य तिथि मानी	१४, ५, ८ पुण्य तिथि मानी ।
(४३) मैतारय महावीर का अनुयायी था (जैनकथा ५ भाग पृ० ५५०)	मैतारय गौतम का शिष्य था
(४४) राजा चन्द्रपद्योत ने उज्जैन से आकर उपदेश लिया	राजा चन्द्रपद्योतने मालवे अर्थात् उज्जैन से आकर उपदेश लिया
(४५) एक-बार राजा अजात शत्रु महावीर के पास आया और कहा कि मैं चक्रवर्ती हूं महावीर ने कहा	गौतम से भी अजात शत्रु शत्रुता रखता था अर्थात् उसकी बातको ठीक नहीं मानता था

तू चक्रवर्ती नहीं है उस ने कहा नहीं मैं ज़रूर हूं तुम ठीक नहीं कहते इस बात से मालूम पड़ता है कि अजातु शत्रु महावीर पर विश्वास नहीं रखता था	
(४६) चंदन वाला नामी साध्वी को मृगावती साध्वी ने इस कारण बहुत बुरा भला कहा कि तू महावीर तीर्थंकर के समोसर्ण में अकेली इतनी रात्री तक क्यों रही इत्यादि	गौतम पर भी चंचा नामी स्त्री से ऐसा ही हुआ और लोगों ने ननसा पाप धारण किया
(४७) केवली था	केवली था (ललित विस्तर)
(४८) महावीर के गृहस्थी अनुयायी श्रावक कहलाये	गौतम के अनुयाइयों को श्रावक भी लिखा है

(४९) महावीरका सबसे बड़ा चेला अग्निहोत्री ब्राह्मण बतलाया जाता है	गौतम का सब से बड़ा चला अग्निहोत्री ब्राह्मण लिखा है ॥
(५०) ये प्रथम बड़े शिष्य तीनभाई थे	ये बड़े शिष्य प्रथम तीन भाई थे ॥
(५१) महावीर की भस्म राजाओं ने बांटली ॥	गौतमकी भस्म भी बांटीगई
(५२) महावीर की डाढ़ देवता स्वर्गमें लेगये ॥	गौतमकी २ डाढ़ देवता लेगये लिखा है
(५३) महावीर का शिष्य गुरू के बाद ५०० शिष्योंसे युक्त गद्दी पर बैठा,	गौतम का शिष्य भी ५०० साधुओंसे युक्त गद्दीनशीन हुआ ॥
(५४) नौ नन्द जैनी जैन बतलाते हैं	बुद्ध बौद्ध बतलाते हैं ॥
(५५) चन्द्रगुप्तको जैनी जैन कहते हैं	बुद्ध बौद्ध कहते हैं ॥
(५६) चन्द्रगुप्त का बेटा बिंदुसार जैनी कहते हैं ॥	बुद्ध बौद्ध कहते हैं ॥

(५७) अशोकको जैनी जैन बतलाते हैं	बुद्ध बौद्ध बतलाते हैं
(५८) अशोक के पुत्रको जैनी कहते हैं	बुद्ध बौद्ध कहते हैं
(५९) नागार्जुन को जैनाचार्य कहते हैं	बौद्धाचार्य कहते हैं ॥
(६०) स्कंदलाचार्य जैनी मानते हैं	स्कन्दा स्वामी बौद्ध मानते हैं ॥
(६१) दांयां कंधा श्वेताम्बर साधू वस्त्र रहित रखते हैं।	बौद्ध साधूके दायें कंधे पर वस्त्र नहीं होता ॥
(६२) जैनी कहते हैं कि महावीर की वज्र सहन थी।	बौद्ध भी बतलाते हैं
(६३) प्राकृत में ग्रन्थ।	प्राकृत में ग्रन्थ ॥
(६४) महावीर बिम्बसारके बागमें ठहरा और वे शीसम फल आये॥	गौतम बिम्बसार के बाग में ठहरा और वशीसम फल फूल आये ॥
(६५) महावीरके शरीरमें रुधिरकी जगह दुग्ध कहते हैं ॥	गौतम के शरीर में रुधिर की जगह दुग्ध बतलाते हैं ॥

(६६) महावीरको-सांपने काटा दूध निकला (श्वेताम्बरी)	गौतमको सांपने काटा दूध निकला
(६७) जिस सर्पने काटा वह देवता बना	जिस सर्पने काटा वह देवता बना
(६८) महावीरके चरणों के तले देवता पुष्प कमल बिछाते ॥	गौतम के चरणोंके तले देवताओं ने कमल पुष्प बिछाये
(६९) महावीरकी बाल्यावस्था में देवताओं ने परीक्षा की ॥	गौतमकी बाल्यावस्था में देवताओं ने परीक्षा की
(७०) महावीर का उपदेश सुनने देवी देवता आये ॥	गौतम का उपदेश सुनने देवता देवी आये ॥
(७१) महावीरका रंग गोरा जर्दी मायल था ॥	गौतमका रंग गोरा जर्दी माइल था
(७२) महावीरमें अतौल बल लिखा है	गौतमके अतौल बल मानते है

(१३) महावीरके शरीरमें चक्रवर्त्तीआदि के चिन्ह थे ॥	गौतमके चक्रवर्त्ती आदिके चिन्ह थे
(१४) महावीर देव मय गंधोदक पुष्प वर्षा होती थी ॥	गौतम पर, देवमय गन्धोदक पुष्प-वृष्टि होती थी ॥
(१५) महा० की दिव्यध्वनि बतलाते हैं	गौतमकी भी दिव्यध्वनि लिखी है
(१६) महावीरके दुन्दुभी बाजे बजते थे जैनी कहते हैं ॥	गौतमके दुन्दुभी बाजे बजते थे ॥
(१७) महावीर चन्द्र सूर्य आदिको देवता मानता था ॥	गौतम भी देवता मानता था । (देखो ललित विस्तर)
(१८) जैन साधू आलोपना करते हैं अर्थात् जो कुछ करे गुरुसे कहे ॥	बौद्ध साधू अबतक भी करते हैं ॥ अर्थात् सब गुरुसे कहें ।
(१९) जैनी २४ तीर्थंकर बतलाते हैं	बुद्ध २४ बौद्ध बतलाते हैं

(८०) जैनी महावीर को ईश्वर विमुख कहते हैं ॥	बुद्ध बौद्ध को ईश्वर विमुख ख्याल करते हैं ॥
(८१) जैनी कहते हैं २४ तीर्थंकर गंगादि सिंधके बीच पैदा होते हैं ॥	बुद्ध कहते हैं कि बौद्ध भी मध्यदेश ही में पैदा होते हैं ॥
(८२) ((श्वेता०) महावीर को वृद्ध अवस्था में पेचिश की बीमारी हुई और खून के दस्त आये ॥	बुद्ध कहते हैं बौद्ध को वृद्ध अवस्था में दस्तोंकी बीमारी हुई और रुधिर आया ॥
(८३) महावीरने औषधकी अभक्ष्य थी। किन्तु बहुत जैनी अभक्ष्यको नहीं मानते ॥	बुद्धने भी आजीविक वैद्यकी बताई औषधिकी जो अभक्ष्यथी बहुतसे बुद्ध अभक्ष्ये नहीं मानते।
(८४) जैन शास्त्रों में मामा की पुत्रीसे विवाह करना जायज़ लिखा है ॥	बुद्ध कुलमें भी जायज़ था ॥
(८५) अमरसिंह अमरकोशमें महावीर	बौद्धग्रन्थोंमें बुद्ध की माताका नाम

की माता का नाम मायादेवी लिखता है ॥	मायादेवी लिखा है ॥
(८६) अमरकोष में अमरसिंह जैनी ने गौतम और महावीर को एक ही माना है ॥	” ” ”
(८७) महावीरका विवाह बाल्य अवस्था में हुआ ॥	गौतम का विवाह उसी अवस्था में हुआ ॥
(८८) महावीर पाठशाला में (चन्दनकी तख्ती क़लम संयुक्त) पढ़ने गया ॥	गौतम भी चन्दनकी तख्ती क़लम युक्त पाठशालामें गया ॥
(८९) महावीरने उलटा अपने गुरु को ज्ञान बतलाया ॥	गौतम ने भी उलटा अपने गुरु को उपदेश किया ॥
(९०) महावीर आदि तीर्थंकर जिस कुलमें उत्पन्न होवें मूर्त्तिपूजक होता है	बौद्ध ग्रन्थ ललित विस्तरमें लिखा है कि जिस कुलमें, बुद्ध उत्पन्न हों वह मूर्त्तिपूजक होता है ॥

(९१) महावीरके मृतक शरीरकी भस्म आदि पवित्र समझी गई और स्तूप आदि बने (किन्तु कोई स्तूप महावीर का जैनी नहीं दिखा सके)	गौतमबुद्धकी मृतक देहके वस्त्र भस्मी अस्थी पवित्र समझे उनकी पूजा हुई (और अब तक स्तूप और मृतक वस्तु विद्यमान हैं)
(९२) अर्हंत, जिन, प्रत्येक बुद्ध, श्रमण क्षपण, अस्थवीर इत्यादि पदवी जैनचिह्न की है	अर्हंत, जिन, श्रमण, क्षपण अस्थवीर यह सब पहलेगौतमने अपने साधुवों को पदवी दीं
(९३) महावीर और उसके शिष्य आदि वेश्या नटनी आदिके घर जा २ कर भिक्षा लाते थे (देखो श्वेताम्बर) नंदीसेन म-हावीर का शिष्य वेश्याके घर	गौतम बुद्ध भी और उसके शिष्य भी वेश्या नटनीके भिक्षा ग्रहणकरलेते थे। अम्बापाली में गौतम ने वेश्याकी भिक्षाली और रहा उग्रसेन नटको संगतमें मिलाया

भिक्षा लेने गया, असाढ़ भूती न-
हाथीर का तपस्वी साधु नटनी
के घर गया इत्यादि ।

(९४) बहुत से (श्वेताम्बरी) साधु आ-
पसमें मिलकर सामलात भोजन
एक ही पात्र में करलेते हैं ।

(९५) इस समय जैन साधु जिन २ फलों
को मांसके तुल्य हिंसा मानते
हैं और अपने शिष्योंसे उमर पर्-
य्यन्त त्याग कराते हैं लेकिन अगर
उनको वही फलादि वस्तु भिक्षा
में मिल जावें तो खालेते हैं जस

बौद्ध साधु भी करलेते हैं ॥

इसी तरह बौद्ध साधु जीवके मारने
में तो हिंसा मानते हैं लेकिन अगर
मांस भी भिक्षामें मिल जावें तो पाप
नहीं समझते ।

में हिंसा नहीं मानते ।	
९६) श्वेताम्बरी साधू प्याले या पात्र रखते हैं ।	बौद्ध साधू भी प्याले या पात्र रखते हैं
९७) जैन साधू उपवास करते हैं ।	बौद्ध साधू उपवास करते हैं
९८) जैनी (कल्पित) स्वर्गादिक्रमस मानते हैं और जो बड़े २ स्वर्ग हैं वहांसे लौटकर आने वाला फिर निर्वाणको ही जाता है ऐसा कहते हैं ।	बुद्ध लोग भी ऐसा ही मानते हैं ।

जैन मुक्तियां निर्वाण मिट जाने के ही तुल्य हैं लेकिन बौद्धों से विशेष इन्होंने एक कल्पित सिद्ध शिलाकी कल्पना करली है तो भी न वहां आनन्द है न चैतन्यता है। केवल पाषाणवत पड़े रहते हैं हमने एक जैनी पण्डितसे सवाल किया कि तुम्हारी सिद्धि शिला सीमायुक्त है और तुम अनंत जीवों को मुक्ति गये बतलाते हो और अनंत जांयगे तो उस हदवाली शिला पर क्योंकर समावेंगे। उसने उत्तर दिया कि जिस तरह एक मकानके कमरेमें चिराग़ बाल कर गुल करते चले जाव देखो !!! चाहे कितने ही चिराग़ उस महदूद कमरेमें गुल करदो लेकिन कमरेमें जगह बराबर रहेगी इसी तरह हमारी सिद्धशिला है। हास्यप्रद दृष्टान्त--

यही दृष्टान्त गोतम बुद्धके मौजूदा ग्रन्थोंमें है और अर्हतका निर्वाण ऐसा होता है जिस तरह चिराग़ गुल होजावे इत्यादि ॥

प्यारे जैन भ्राताओ! इस उपरोक्त लेखोंसे साबित है कि जैन महावीर और गौतम बुद्ध एक ही मनुष्यका नाम है अर्थात् बौद्धमत और जैनमत एक ही मतहै

इतना अवश्य भेद होगया है कि जिस तरह अब श्वेताम्बरी और दिगम्बरिओंमें भेद होगया है॥

आप लोगों के ग्रन्थों से भी सिद्ध है कि जैन और बौद्ध एक ही हैं फिर आप लोग क्यों बौद्ध मती कहलाने से चिढ़ते हो। आप अपने मतके धर्म ग्रन्थों को देखिये उन से भी यही सिद्ध होता है कि जैन बौद्ध एकही हैं देखो धर्म परीक्षा अमितगत जैनाचारी कृत। यह दिगम्बर जैनियों का धर्म शास्त्र है इस का अनुवाद दिगम्बर आम्नाय के मुख्य पं० पन्नालाल बाकलीवाल दिगम्बरी ने किया है और जैन हितैषी पुस्तकालय कर्णाटक प्रेस में छपी है (१९०९ ईस्वी)

इस पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर छोटे अक्षरों में लिखा है कि जैन दिगम्बरी समुदाय के लिये है। पाठक जैन महाशयो सुनो २ यह पुस्तक साधारण नहीं है किन्तु यह आप का ही परमहित कारक धर्मशास्त्र है प्यारे जैन भ्राताओ। अपने धर्म शास्त्र के पृष्ठ २५७ पंक्ति २४ को देखो जो मैं यहां आपके परमधर्म शास्त्र का प्रमाण जैसा है वैसा ही लिखे देता हूं।

दुष्टःश्रीवीरनाथस्य तपस्वीमौगलायनः ।
शिष्यःश्रीपार्श्वनाथस्य विदधेबुद्धदर्शनम् ॥

इस श्लोक का यथार्थ अर्थ यह होता है कि श्री पार्श्वनाथ के तपस्वी चेलेने वीरनाथ अर्थात् महावीर से रुष्ट होकर बुद्धमत चलाया । लेकिन आप के पंडित ने आप की पुस्तक में ऐसा ही अर्थ किया है कि महावीर शिष्य के तपस्वी शिष्य ने मुसलमानों का मत प्रगट किया और पार्श्वनाथके शिष्यने बौद्धमत प्रगट किया । अब प्यारे जैन भाताओ ! आप के धर्मशास्त्र से भी जैन और बौद्ध एकही साबित होगये क्योंकि मौगलायन को तपस्वी शब्द से माना है और दूसरी बात इस लेख से यह भी पाई जाती है कि पार्श्वनाथ का ही नाम वीरनाथ था अर्थात् महावीर था क्योंकि गुरुसे रुष्ट होकर शिष्यने अपना मत प्रगट किया और आप के धर्मशास्त्र से यह बात भी पाई गई कि पार्श्वनाथ महावीर से २५० साल पहले कोई नहीं हुआ और आप के पंडित ने यह अर्थ किये हैं कि महावीर के शिष्यने मुसलमानों का मत जारी किया सो मुसलमानों को

तो १३०० तेरहसौ वर्षके लगभग हुए इससे पहले मुसलमानों का नाम निशान भी न था फिर आप गौर करिये कि महावीर का चेला जिन को आप २४३० साल पहले का मानते हो मुसलमानों का मत क्योंकर चला सकता है ? दर असल बात यह है कि मौजूदा जैनमत बुद्ध गौतम या महावीर या पारश्वनाथ ये सब गौण नाम एक ही के हैं ॥

यह बहुत काल पश्चात् निकला और इसकी पुष्टि में बहुत से प्रमाण दे सकते हैं इसमें जैनमत की बहुत बड़ी दो शाखा हैं एक श्वेताम्बरी दूसरे दिगम्बरी इन दोनों में श्वेताम्बर शाखा दिगम्बर से बहुत बड़ी है (इसका विस्तार के साथ हाल हम आगे लिखेंगे) क्योंकि श्वेताम्बरी दिगम्बरी की निस्बत चौगुने हैं और जैन मत के बड़े २ तीर्थ उन के कब्जे में हैं लेकिन श्वेताम्बरी जैनी तो महावीर तीर्थंकर को विवाहित मानते हैं और एक सन्तान भी मानते हैं किन्तु दिगम्बरी आम्नाय कहती है कि उन का विवाह ही नहीं हुआ इस बात से साफ मालूम होता है कि मौजूदा

जैन शास्त्रों का महावीर के समय का कुछ भी हाल नहीं मालूम है और दोनों जैन शाखाओं से पाया जाता है कि दोनों शाखाओं के ग्रन्थ महावीरसे अनुमान एक हजार या नौ से वर्ष बाद बने; अब जैन भ्राताओ! पक्ष छोड़ कर विचार कीजियेगा यदि कोई पुरुष आज से ५०० वर्ष पूर्व का हाल लिखने लगे तो क्या लिख सकता है। हम आगे चलकर जैनग्रन्थों की वह्नावली भी लिखेंगे जिसको दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों मानते हैं॥

दिगम्बर वह्नावली देखो रत्नकाण्ड श्रावकाचार पृष्ठ २१४॥

ऐसे काल के निमित्त तैं बुद्धि वीर्यादिक की मन्दता होते श्रीकुन्द कुन्दादि मुनि निर्ग्रन्थ वीतराग अंगक वस्तुन के ज्ञानी होते भये, तथा उन के स्वामी होते भये इत्यादि तिनमें श्री कुन्द २ स्वामी सौसार प्रवचन सार पंचास्तिकाय, नियमसार, अष्टपाहुड, कूआदि लेकर अनेक ग्रन्थ रचत भये जो आज काल प्रत्यक्ष बांचने पढ़ने में आते हैं॥

दिगम्बर वह्नावली महावीरसे तीसरी पुश्त से शुरू

होती है अर्थात् महावीर गौतमके पश्चात् सुधर्मा स्वामीको गद्दी आधोश्रय आचारी माना ॥

(३) स्वधर्मा स्वामी, ४ जम्बू स्वामी ५ विष्णु आचारी, ६ नन्दीमित्र ७ अपराचित ८ गोवर्धन ९ भद्रबाहु १० विशाखाचार्य ११ प्रोष्ठलाचार्य १२ क्षत्रिये १३ जयसैन १४ नागसैन १५ सिद्धार्थ १६ धृतशैणा १७ विजय १८ बुद्धिमान १९ गंगदेव २० धर्मसेन २१ नक्षत्र २२ जयपाल २३ पाण्डूनाम २४ ध्रुवसैन २५ कंसाचार्य २६ सभद्र २७ यशोभद्र २८ भद्रबाहु २९ महीयश, ३० लोहाचार्य ३१ कुन्द कुन्द आचार्य ३२ उमास्वामी ॥

श्वेताम्बरी पट्टावली ॥

[३] स्वधर्मा स्वामी [४] जम्बू स्वामी [५] श्री प्रभव स्वामी [६] स्वयम्भव स्वामी [७] यशोभद्रवस्वामी [८] भद्रबाहु स्वामी [९] स्थूलभद्रबाहु [१०] महावीर सुहस्थी [११] बहुवलिस्सह [१२] स्वत सूर्प [१३] श्यामाचार्य [१४] जीतधर [१५] आर्यसमुद्र [१६] आर्यमन्यु [१७] आर्यनादिलक्षल [१८] आर्यनागह्वास्ते [१९] रेवती नक्षत्र [२०] सिंहाचार्य [२१] स्कन्दलाचार्य (स्कन्दा स्वामी)

अब जैन भ्राताओं तथा सभ्य जैन समुदायको न्याय

३१ वीं गद्दीसे मौजूद दिगम्बर ग्रन्थों की रचना हुई इससे पेश्तर का कोई ग्रन्थ नहीं है और श्वेताम्बर सूत्रोंकी रचना जिनको श्वेताम्बरी माननीय सूत्र मानते हैं स्कन्दलाचार्य या स्कन्दास्वामी ने की है जो महावीर से २१ पीढ़ी बाद हुआ है ॥

इस के समय को श्वेताम्बर महावीर से १००० वर्ष पश्चात् बतलाते हैं बौद्ध मत के ग्रन्थों में स्कंदा स्वामी का हाल है। चीनी पथिक अपनी यात्रा में इस का हाल लिखता है जो अब से पूर्व १३०० वर्ष हमारे देश में आया था;उसके समय से पूर्व स्कंदा स्वामी मरचुका था। बौद्ध मत वाले कहते हैं यह गौतम बुद्ध से १००० वर्ष पश्चात् मरा इसका मुख्य मठ पेशावरमें था (ह्यूंग थ्यांग) चीनी पथिक लिखता है कि स्कंदा स्वामी का मठ बिलकुल उजड़ चुका है इस ने बौद्ध मत में बहुत गड़ बड़ डाली और अपना नया मत चलाया (जैन) और बहुत से कल्पित बुद्ध माने और कल्पित शास्त्र रचे और मूर्त्तिपूजा को रौनक़ दी ईसा के लगभग कुछ काल पूर्व नागार्जुन तांत्रिक हुआ जिस को

बौद्ध वाले के तुल्य और जैनी तीर्थङ्कर के स-
मान मानते हैं-और शिवमतावलम्बी शिवका अवतार
मानते हैं मालूम पड़ता है कि नागार्जुनके समय तक जैन
बौद्धों में कुछ विशेष भेद न था और यह दोनों ही
तांत्रिक हुए हैं । शिवमतावलम्बियों ने स्कंदला-
चार्य्य को स्कंद के नाम से माना है और इसको शिव
के पुत्र की उपाधी दी है इस कारण से इन तीनों
मतों की एकता ही मिलती है। और एक सबूत यह
भी जैन बौद्ध की एकता का है कि श्वेताम्बर जैन आ-
म्नाय और बौद्ध की प्रतिमा में फर्क नहीं है देखो जैन
श्वेताम्बर कान्फ्रेन्स हैरल्ड मासिक पत्र नं० १ जौलाई
७ सन् १९०५ ई० सम्पादक गुलाब चंद ढिड्ढा एम० ए०
पृष्ठ २३६, २३७ (हमारे सुप्रसिद्ध श्री हरी भद्र सूरी जी
के दो शिष्य हंस और परमहंस ने व्याकरण न्याय
अलङ्कार काव्य कोष जैन शास्त्रों का पूरा अभ्यास क-
रके बौद्धधर्म का न्याय युक्त खंडन करने की अभिला-
षा से बौद्ध धर्म के ग्रन्थोंसेंअभ्यास करने के लिये गुरू
महाराज की आज्ञा के अनुसार दोनों शिष्य भेषान्तर
करके (रूप बदल कर) बौद्ध धर्म के आचार्य्यों से उन

के धर्म का ज्ञान प्राप्त किया और ऐसी चैतन्यता और चातुरता से रहे कि बौद्धों को उन के जैनी होने का हाल मालूम नहीं होने दिया कालान्तर में कई कारणों से बौद्ध धर्म के आचार्यों को उन पर शंका उत्पन्न हुई कि यह जैनी न हों इस लिये उन की परीक्षा करने के लिये धर्मशाला की नाली के पंगतिये पर जैन श्वेताम्बर की प्रतिमा का चिन्ह लिखा और विद्यार्थी तो उस चित्र को उल्लंघन करके चले गये लेकिन उन दोनों ने उस चित्र पर बुद्ध मुनि की तीन रेखा करके फिर उसको उल्लंघन किया और वहां से तत्काल अपने जैनी गुरूकी ओर चले। लेकिन बौद्धों ने उन का पीछा किया और हंसको तो रास्ते ही में मारडाला किन्तु परम हंस बचकर चित्तौर में आया अपने गुरू से मिला और अपनी पुस्तकें गुरू को दे कर छुपकर एक मकान में सो गया। बौद्धों ने वहां पर भी उस को मारडाला, जब यह बात श्रीहरीभद्र सूरी जी को (जो जैन मत के आचार्य्य थे) मालूम हुई तो उन्हों ने आकर एक शक्ति से चूल्हों पर तेल के कड़ाहा गर्म कराकर बौद्धों को खेंच २ कर कएदम होमना शुरू

किया (अर्थात् बौद्धों के बड़े समुदाय को लाल तैल डालकर भस्म करने लगे) जब यह ख़बर उनके गुरूको लगी तो उन्हों ने दो शिष्य भेजकर उनका क्रोध शान्त किया इस उपरोक्त लेख से हमारा तात्पर्य यह है कि जैन प्रतिमा और बौद्ध प्रतिमा एक हैं जैन समुदाय ने बौद्धमत से पृथक् होकर केवल तीन रेखा हटाकर अपनी प्रतिमा बनाली है इसके अतिरिक्त एक पुस्तक जैन धर्म प्रचारक सभा भाव नगर सं० १९४८ अ-हम्मदाबाद यूनीयन प्रिन्टिंग प्रेसमें छपवाई उसके पृष्ठ १२२ पर यह प्रश्न नं० ८५ आत्माराम जैनी साधू से अ-मरसिंह जैनी साधू ने किया है, प्रतिमा भी तीन प्र-कार की हैं श्वेताम्बरी, दिगम्बरी और बौद्ध मत की इसमें सत्य कौन सी इत्यादि लेख भी यही प्रगट कर रहा है कि जैन बौद्ध दो नहीं आत्माराम अपने अ-ज्ञान तिमिर पृष्ट ३५ खंड २ पर लिखते हैं कि इतिहास तिमिर नाशक का लिखने वाला लिखता है कि जैन और बौद्ध एक मत है सो उन की बड़ी भूल है फिर आगे चलकर जब श्री महावीर विद्यमान थे तब बौद्ध मत का शाक्यसिंह गौतम नाम का कोई गुरू नहीं था

केवल इतिहास लिखने वालोंने महावीर भगवंत को ही शाक्यसिंह गौतम करके लिखा है (यह अक्षर जिनपर हमने रेखा की है ध्यान से पढ़ने के लायक़ हैं) वास्तव में सत्यता छुप नहीं सकती और आत्माराम जैनी को अंत में यही लिखना पड़ा कि गौतम बुद्ध तो भी हुआ लेकिन महावीर का ही नाम गौतम बुद्ध रखो चाहे गौतम बुद्ध का नाम महावीर रखो लेकिन अमरसिंह अमर कोष का कर्त्ता जिस्की तारीफ़ आत्माराम जैनी अपने ग्रन्थोंमें लिखते हुए बड़े अभिमान से कहता है कि जैन समुदायमें अमरसिंह अमरकोषके कर्त्ता जैसे पंडित उत्पन्न हो चुके हैं सो अमरसिंह तो इन तारीफ़ लिखने वालों से बहुत पहले हो चुका है वह भी अमर कोष में लिखता है ॥

सर्वज्ञःसुगतोबुद्धोधर्म्मराजस्तथागतः ।
समन्तभद्रोभगवान् मारजिल्लोकजिज्जिनः॥१॥
षडभिज्ञोदशबलोऽद्वयवादीविनायकः ।
मुनीन्द्रःश्रीघनःशास्तामुनिःशाक्यमुनिस्तुयः॥२

सशाक्यासंहःसर्वार्थःसिद्धःशौद्धोदनिश्चसः।
गौतमश्चार्कबन्धुश्चमायादेवीसुतश्चसः॥३॥

अमरकोष १ वर्ग १ श्लोक १२ से १५ तक।

बात यह है कि विद्वानों को चाहे किसी भी मत में उत्पन्न हों पक्षपात नहीं होता किन्तु अविद्वान अपने हठ को नहीं त्यागते चाहे वह एम. ए. या शास्त्री क्यों न हो जावें।

इस बात को सिद्ध कर चुके हैं कि बौद्ध मत से पृथक् जैन मत का नाम भी नहीं मिलता तौ भी जैन समुदाय अपनी हठ धर्मी नहीं छोड़ता बो मुर्गी की १ टांग वाली नकल इस पर चरितार्थ है चाहिये तो यह कि हमारे इस लेख को पढ़कर जैन मतावलम्बी जो सत्य है उसको ग्रहण करें और असत्य को तिलाञ्जली दे दें।

मैं ने देखा है कि जैनी अप्रमाणिक विवाद किया करते हैं लेकिन यह नई बात नहीं है अपने आचार्यों को अनुकरणीय है जिस तरह एक दिगम्बरीय पक्षपाती ने मोक्षमार्गप्रकाश नाम मात्र पुस्तक रखकर वेद

और मनुके कल्पित प्रमाण जैनमतको सनातन ठहराने के लिये लिखमारे हैं हम जैन मतावलम्बियोंसे यत्न पूर्वक कहते हैं कि वह अपने आचार्यों व पण्डितोंके कल्पित प्रमाणोंको साबित कर उनके शिरसे कलंक हटावें और मनु और वेदोंसे साबित करें यदि पाठ भेद होगा और अर्थभेद न हो तो भी हम मानने को तैयार हैं यदि वेद का प्रमाण उन्होंने दिया है और उस जगह वह प्रमाण नहीं है तो वह चारों वेदों में कहीं भी दिखादें तो वह कलंकित न रहेंगे यदि इतना भी न कर सकेंगे तो ऐसों को पण्डित मानना और उनके ग्रन्थोंको मोक्षमार्ग प्रकाश नाम रखना दिगम्बरों को मोक्ष का नमूना है ॥

मोक्षमार्ग पृष्ठ २१६ (ऋग्वेदके नामसे मन्त्र)

ओ३म्-त्रैलोक्यप्रतिष्ठितानां चतुर्विंशतितीर्थंकराणाम् । ऋषभादिवर्द्धमानान्तानां सिद्धानां शरणं प्रपद्ये ॥

क्या यह ऋग्वेदमेंसे या चारों वेदोंमें से कोई जैनी या नग्न आम्नाई दिखा सकता है ? । पाठक वृन्द !

इस समुदाय के नामी पण्डितों और आचार्यों का तो यह करतूति है कि अपने मत को प्राचीन ठहराने के लिये मिथ्या ग्रन्थ रच २ कर उन का नाम मोक्षमार्ग-प्रकाश नाम रक्खा है। हमारी सम्मति में तो इस के विरुद्ध नाम होता तो ठीक था फिर यजुर्वेद के नाम से प्रमाण ॥

ओ३म्-पवित्रनग्नमुपवि (ई) प्रसा-महे येषांग्ना (नग्न) जातिर्येषां वीरा॥

(फिर यजुर्वेद)

ओ३म्=नमोऽर्हन्तो ऋषभो ॥

पाठक वृन्द ! यह वेद मन्त्र जैनमत विशेष कर नग्न-आम्नायकी प्राचीनतामें नग्न आम्नाई ने उपस्थापित किये हैं।

विशेष हाल दूसरे भाग में पढ़िये।

निवेदक—रामदयालु शर्मा सर्वैयर-इटावा।

इति ॥

हमने इस पुस्तकमें निष्पक्षतासे जैन बौद्धकी एकताको दर्शाया है इससे सिद्ध है कि जैन मत बौद्ध मत ही से चला है अनादि नहीं है क्योंकि कोई भी जैनी २४३६ सालके पहलेके इतिहासोंसे जैनियोंके होने का प्रमाण नहीं देसकता है। इस मतको २४३६ सालसे गौतम बुद्ध (महावीर) ने चलाया इन महावीरसे पहले २३ तीर्थंकरों का कोई भी जैनी जन्म सम्वत् नहीं बतला सकता है इसीलिये इन्होंने अपने मतको प्राचीन ठहराने के लिये कल्पित ग्रन्थ रचे जिनको देखकर आप लोग हंसेगे इन ग्रन्थोंका हाल हम नं० २ ट्रैक्टमें लिखेंगे हम आशा करते हैं कि जैन भ्राता निष्पक्ष भावसे विचारें यदि कुछ भ्रम हो तो हम समझने वा समझानेको उद्यत हैं॥

॥ ओ३म् ॥

जैनीपण्डितोंसे प्रश्न ।

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वतीजीकृत

तथा

सत्यासत्य विचारार्थ

बाबूराम शर्म्मा

इटावास्थ द्वारा प्रकाशित ।

द्वितीयवार } संवत् { मूल्य)।
४००० } १९६९ { सैकड़ा ॥)

Printed by B.D.S. at theBrahm
Press Ftawah.

ओ३म्

जैनीपण्डितोंसे प्रश्न ।

(१) जिस मुक्तिके वास्ते आप जैन धर्मको ग्रहण किये हैं वह जीवका स्वाभाविक गुण है या नैमित्तिक? अगर स्वाभाविक धर्म है तो उसके लिये जैनधर्मकी क्या आवश्यकता है? यदि नैमित्तिक धर्म है तो उसका निमित्त अर्थात् सबब क्या है?

(२) मुक्ति नित्य है या अनित्य यदि नित्य है तो उसका किसी कारणसे होना किस प्रकार सम्भव है? क्योंकि नित्यकी तारीफ (लक्षण) ये है जो किसी कारणसे उत्पन्न न हो। यदि अनित्य है तो उसका अनन्त होना बन नहीं सकता क्योंकि सृष्टिमें ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसका आदि हो और अन्त न हो। क्या किसी जैनीने एक किनारा वाला दरिया या एक सीमा वाली वस्तु देखी है?

(३) जैन धर्ममें सृष्टिकर्ता तो ईश्वरको मानते ही नहीं। जिस परमाणु पुद्गल या भूतोंके स्वभावसे सृष्टि-

की उत्पत्ति स्वीकार करते हैं वह स्वभावसे गतिवाला यानी मुतहर्रिक बालेजात है या गतिशून्य यानी हर्कत से मुबर्रा अगर गतिवाला है तो संयोग परमाणुओंमें हो नहीं सकता क्योंकि सबकी गति यानी हर्कत बराबर होनेसे जो दरम्यानमें फासला है वह बना ही रहेगा। अगर ग़ैर मुतहर्रिक यानी गति शून्य तसलीम करें तो भी संयोग नहीं हो सकता लिहाजा कोई वस्तु बन नहीं सकती।

(४) क्या जैन धर्मके वे आचार्य जिन्होंने जैनधर्मके शास्त्रको लिखे हैं रागसे रहित थे या राग वाले यदि रागसे रहित थे तो उन्होंने शास्त्र कैसे बनाये ? यदि राग वाले थे तो उनके बनाये ग्रन्थ किस तरह प्रमाण हो सकते हैं ?

(५) आप लोग जो जगतको अनादि मानते हैं तो जगत् प्रवाहसे अनादि है या स्वरूपसे ? यदि प्रवाहसे अनादि है तो उसका सबब (कारण) क्या है। क्योंकि कोई प्रवाह बिला सबब हो नहीं सकता। यदि स्वरूप से मानते हैं तो विकार क्योंकर हो सकते हैं ? क्योंकि विकारोंमें पहिला विकार पैदा होता है। जो चीज़

पैदा होती है वो ही बढ़ती है। ऐसी कोई चीज़ बतलाओ जो पैदा न हो और बढ़ती हो।

(६) जो कर्मका बन्धन अनादि है उसका अन्त किस प्रकार हो सकता है ? क्योंकि अनादि चीजके दोनों किनारे नहीं हो सकते। जिसका एक किनारा है उसका दूसरा भी होना लाज़मी है।

(७) कर्म जो जीव करता है उसका फल देने वाला तो आप मानते ही नहीं और यह नियम है कि जो जिससे पैदा होता वो उससे कमज़ोर होता है और कमज़ोर किसी ज़बरदस्तको बांध नहीं सकता। लिहाज़ा कर्मोंका फल किस तरह होता है ?

(८) जो दृष्टान्त शराब वग़ैरहके पीनेमें नशा आनेका दिया जाता है वो सही नहीं क्योंकि शराब द्रव्य है और पीना कर्म है। वह नशा शराब द्रव्यका है न कि पीने कर्मका। अगर पीने कर्मका फल कहो तो पानी पीनेमें भी नशा होना चाहिये क्योंकि पीना कर्म इस जगह भी है।

(९) इसमें क्या प्रमाण है कि जैन शास्त्रोंको जैनियों के आचार्योंने लिखा है ? क्योंकि आज जैन आचार्य

प्रत्यक्ष लिखते हुये तो नज़र नहीं आते। जब प्रत्यक्ष नहीं तो अनुमान किस तरह हो सकता है। अगर प्रत्यक्ष और अनुमान दोनों नहीं तो शब्द प्रमाण हो ही नहीं सकता। पस जैन शास्त्रोंके बनाने वाले कोई आचार्य नहीं॥

(१०) जैन लोग जिस प्रत्यक्षको प्रमाण मानते हैं वह किसी द्रव्यका हो ही नहीं सकता क्योंकि हरएक चीजकी छः भिन्त होती हैं। प्रत्यक्ष एक तरफके गुणोंका होता है। जैसे एक किताबको जब देखते हैं तो उसके रूप और परिमाणका प्रत्यक्ष होता है। जब किसी दीवारको देखते हैं तो भी रूप और परिमाण का प्रत्यक्ष होता है। तब किस तरह कह सक्ते हैं कि यह रूप किताबका है और यह दीवार वग़ैरह का?

(११) जैन लोग जिस जीवको मानते हैं उसके होनेमें क्या प्रमाण है? क्योंकि जीव रूप नहीं जो आंख से दृष्टि आये। रस नहीं जो रसनासे नज़र आये। पस फिर जैनमतका जीव साबित नहीं होता।

[१२] जैन लोग जिन इन्द्रियोंसे देखकर ईश्वरको जगत कर्ता मानना चाहते हैं तो इन इन्द्रियोंको किस

प्रमाणसे साबित करते हैं। क्या इन्द्रियोंका प्रत्यक्ष होता है जवाब मिलता है नहीं। अनुमान होता है। क्योंकि अनुमानमें व्याप्तिका होना लाज़मी है। जिसका तीन काल में प्रत्यक्ष न हो उसकी व्याप्ति नहीं और जिसकी व्याप्ति न हो अनुमान नहीं हो सकता अतएव जैनियोंको इन्द्रियोंकी हस्ती (अस्तित्व) से इनकार करना चाहिये

[१३] जैन लोग जिस सप्तभङ्गी न्यायको लेकर ईश्वर की हस्ती के मुतल्लिक पेश किया करते हैं अगर उसी सप्तभङ्गी न्यायको तीर्थङ्करों के मुतल्लिक इस्तेमाल किया जावे तो उसका नतीजा बतलाइये।

[१४]धर्म गुण है, कर्म है, स्वभाव है क्योंकि आप उसको एक पदवी पदार्थ मानते हैं जिससे द्रव्य, गुण कर्म वगैरह सब हो सकता है। वह नित्य है या अनित्य।

(१५) शरीरसे अलाहिदा कभी जीव रहता है या नहीं अगर रहता है तो किस परिमाण वाला होता है अणु मध्यम विभु।

(१६) क्या एक ही शयमें दो मुतज़ाद धर्म रह सकते हैं या नहीं जैसे नफ़ी व हस्ती, सर्दी व गर्मी। अगर नहीं रह सकते तो सप्तभंगी न्यायका खातमा। अगर रह सकते हों तो उसकी मिसाल दो। अगर मिसाल नहीं तो उसको न्याय किस तरह कह सकते हो॥

(१७) जिसकी उपासना की जाती है उसके सर्व गुण आते हैं या कोई २ अगर सब (गुण) आते हैं तो मूर्ति पूजनके साथ जड़ता आना लाज़िमी है। जहां जड़ता और चैतन्यता दो शामिल हो जावें उसे अविद्या कहते हैं। अगर कोई गुण आता है तो उसमें न्याय बतलाइये कि किस नियमसे आता है।

(१८) क्या जीव और अजीव जिन दोनों पदार्थों को आप स्वीकार करते हैं इनको सप्तभंगी न्यायसे मुबर्रा मानते हैं।

(१९) पाप व पुण्य को तमीज़ करनेके वास्ते आप किस कसौटी को मानते हैं? वह कसौटी किसी आचार्य्य ने बनाई है या अनादि कालसे चली आती है।

(२०) आपके जीवोंकी संख्या अनन्त है और काल भी अनन्त है। जीवों की तादादमें कमी नहीं और जो जीव मुक्त हो जाता है (लौटता नहीं) गोया जीव की तादाद कभी ख़तम या बहुत कम तो न हो जायगी। जिससे सृष्टि का सिलसिला ख़तम हो जावे क्योंकि जिसमें आमदनी न हो खर्च हो उसका दिवाला निकलना आवश्यक है॥

संजीवनबूटी

यह बूटी मूर्छितोंकी मूर्छा दूर कर श्री-लक्ष्मणयती, शूरवीर, रणधीर, बनाती है, इसके सेवनसे चिरप्रतापी, तेजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी, ऋषि, मुनि, योगी, संन्यासी, महावीर; योधा, बलधारी, जगत्गुरु, परिब्राट् तथा सम्राट् जगत् प्रसिद्ध अमर नाम करगये हैं। केवल इसीके बल बाल ब्रह्मचारी भीष्मपितामह महामृत्युञ्जय कर शर शय्यापर सुखासीन हो धर्मोपदेश करतेरहे।

पूर्वोक्त बूटी सत्यार्थप्रकाशके प्रकाशमें तृतीय खण्डपर जगमगा रही है। यह अमरबूटी ≈) निछावरमात्र करनेसे मिलेगी।

मिलने पता—बाबूराम शर्मा—इटावा

॥ ओ३म् ॥

कुरान की छान-बीन ।

लेखक

श्री १०८ स्वामी दर्शनानन्दजी सरस्वती,

उर्दू से अनुवादक

पं० शिवशर्मा जी आर्य्य

सम्भल (मुरादाबाद)

प्रकाशक तथा प्रिन्टर.

पं० शंकरदत्त शर्मा

"शर्मा मेशीन प्रिंटिंग प्रेस मुरादाबाद"

द्वितियवार १००० } सन् १९१७ ई. { मूल्य प्रति पुस्तक ।)

ओ३म्

क़ुरान की छान बीन

प्रथम–भाग
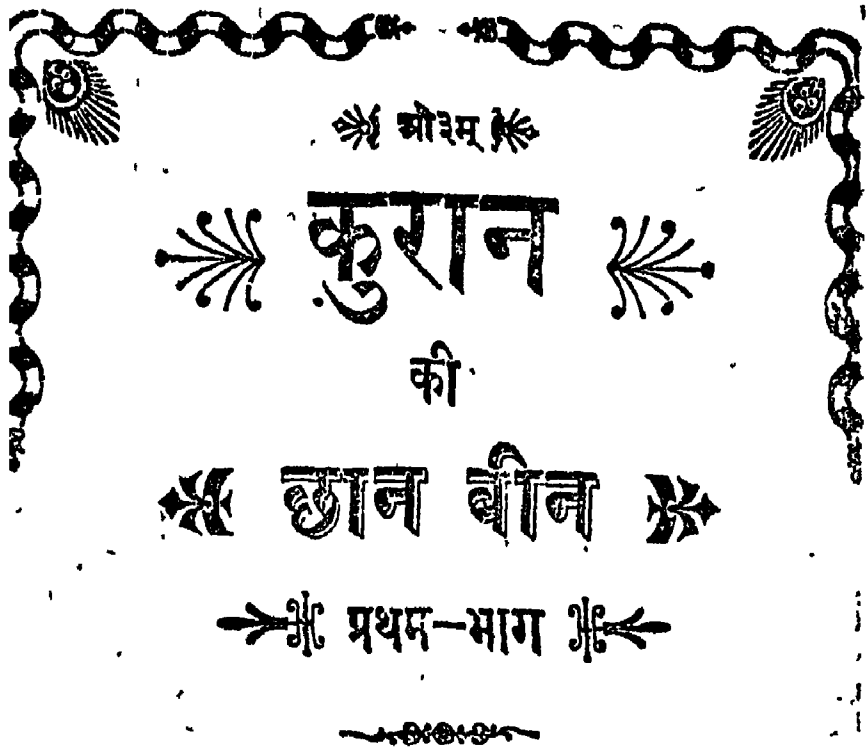
प्यारे भ्रातृगण !

मुसल्मानी सिद्धान्तों पर जहां तक विचार किया जाता है तो यही बतलाया जाता है कि क़ुरानशरीफ़ कलामइलाही–"ईश्वरीय वाक्य" है। परन्तु क़ुरआन की बनावट पर ध्यान देने से नितान्त ही उसके विरुद्ध पाया जाता है। क्योंकि प्रथम तो क़ुरआन उतरने पर ही शंका उत्पन्न होती है। कि क़ुरआन एक ही बार में सम्पूर्ण उतरा वा थोड़ा २ करके! यदि यह माना जावे कि क़ुरआन एक

बारमें सब का सब उतारा गया तो उसका खण्डन कुरआनसे ही होता है; क्योंकि हर एक सूरत के ऊपर लिखा है कि यह सूरत मक्के में उतरी, यह मदीनेमें उतरी और यह अन्य अमुक२ स्थान पर उतरी। ऐसी अवस्था में उनका एक ही स्थान पर और एक ही बार उतरना कैसे मानसकते हैं? यदि यह मानलें कि कुरआन पृथक् २ आयतों में जैसा कि हमारे मुसलमान भाई मानते हैं उतरा तो उसका खण्डन भी कुरआनकी आयतों से ही होता है।

देखो कुरआन सिपारः २५

वल् किताबिल् मबीने इन्ना अञ्जल् नाहो फ़ी लैलतिम् मुबारकतिन् इन्ना कुन्ना मुञ्जेरीन्॥

अर्थ–शपथ (क़सम) है किताब बयान करने वाले की निश्चय उतारा हमने उसको (कुरान को) बीच रात बरकत वाली के निश्चय हम हैं डराने वाले।

पाठकगण! जब कि खुदा क़सम खाकर इस

बात को प्रकाशित करता है कि जब उसने क़ुरान को "बरकत वाली" रात में उतारा, तो इसके विरुद्ध समझना खुल्लम खुल्ला ख़ुदा को भी असत्यवादी कहना है। खुदाकी बातको क़सम खाने पर भी विश्वास के योग्य न समझना है। हम द्विविधा में हैं कि इन दो परस्पर विरुद्ध बातों में से, कि ख़ुदा ने क़ुरान को एक साथ ही उतारा वा पृथक् २ उतारा, किस को सत्य मानें? जब कि इस बातपर ध्यान आता है कि क़ुरान की प्रत्येक सूरत पर जो कुछ लिखा है वह सत्य है तो तत्काल ही विचार उत्पन्न होता है कि जिस बातको ख़ुदा कसम खाकर बताता है वह कैसे झूठ हो सकता है? दूसरे, यह भी सन्देह उत्पन्न होता है कि क़ुरान की सूरतों के ऊपर जो कुछ लिखा है; वह ख़ुदा का वाक्य है या क़ुरान के संग्रह करने वाले का है? यदि यह मानें कि मक्के और मदीने में उतरना भी ख़ुदा की ओर से है, उस समय किसी बात को भी ठीक मानना कठिन प्रतीत होता है। यदि यह माना जावे कि, यह आयत मक्केमें उतरी

करने वालेने लिखा है तो क़ुरान में मिलावट होनेका सन्देह होता है। प्रत्येक दशा में क़ुरानका इलहाम होना ऐसा ही असम्भव है जैसे कि अन्धेरी रात को दिन सिद्ध करना। इसके अतिरिक्त, कुरान के एक रात में उतरने के और बहुत से प्रमाण हैं।

देखो कुरान सिपारः ३० सूरतुल क़दर

इन्ना अन्ज़ल्नाहो फ़ी लैलतिल् क़द्र।

अर्थ—निश्चय उतारा मैंने कुरान को बीच रात क़दर के।

आयत २ लैलतुलकदर खैरुमिन अंलके शहर। अर्थात रात की कदर बेहतर है हजार मास से।

आयत ३—तनज़्ज़लुल् मलायकतो वर्रूहो फ़ीहा बे इज़्ने रब्बेहिम् मिन् कुल्ले अम्रिन् सलामुन् हेय हत्ता मतल्इल् फ़ज्र।

अर्थात्—उतरते हैं फ़रिश्ते और अरवाह पाक (पवित्रात्माऐं) है उसके साथ हुक्म परवर दिगार

कि क़ुरान का ईश्वरीय वाक्य होना तो दूर रहा, किन्तु यह किसी विद्वान का भी वाक्य नहीं हो सकता, क़ुरान की आयतों में विरोध के कारण और कतिपय बुद्धि विरुद्ध बातों के कारण, और ईश्वर की निन्दा करने से, जिसकी स्तुति और प्रार्थना के लिये, मुसलमानों के कथनानुसार, उतरा है स्पष्ट ज्ञात होता है कि क़ुरान बनाने वाला कोई अरब के रहने वाला है और अपनी भाषा सुन्दरता से बोलने वाला है। क़ुरान में भाषा सौन्दर्य के अतिरिक्त और कोई विद्या की बात नहीं है कि जो उसके उतरने से पहिले विद्यमान न हो क़ुरान के कर्त्ता ने दावा भी इसी बात का किया है कि यदि तुम सच्चे हो तो ऐसी एक सूरत बना लाओ। इस दावे से तो यह सिद्ध होता है कि उस समय में मुहम्मद साहब बड़ी सुन्दर भाषा में बोलने वाले थे। हमारे मुसलमान दोस्तों ने हज़रत मुहम्मद साहबको, जो हमारे विचार में क़ुरानके कर्त्ता हैं, उम्मी (बेपढ़ा) सिद्ध किया है। परन्तु उन के इस कथन से क़ुरान को ईश्वरीय वाक्य नहीं कहा जा सकता। क्योंकि हज़रत अरबी भाषा से भले प्रकार परिचित थे।

हली और लखनऊ के मूर्ख निवासी भी सुन्दर भाषा बोल सकते हैं। इस बात में और शहरोंके साधारण पढ़े लिखे भी उन की बराबरी नहीं कर सकते। फिर मुहम्मद साहब जो अरब के सब से बड़े शहर मक्के में पैदा हुए थे जिनके मा बाप बड़े मक्के के मन्दिर के पुजारी थे; और जिन को हर समय ऐसे मनुष्यों से बोलने का काम पड़ता था जो वहां प्रतिष्ठित से प्रतिष्ठित गिने जाते थे। ऐसी अवस्था में सुन्दर भाषा का बोलना कोई मौजज़ः (चमत्कार) नहींहो सकता। जिन मनुष्यों ने पन्जाब की एक कहानी—हीरा और रांझा का किस्सा, जिसको वारिस शाह ने बनाया है, पढ़ा है, वे बतलाते हैं कि पन्जाबी भाषा की उत्कृष्टता की यह पराकाष्ठा है। परन्तु इससे उसका इलहामी (ईश्वरीयवाक्य)होना सिद्ध नहीं होता, जब तक कि उस का विषय ऐसा न हो कि जिनके विद्या सम्बन्धी विचार ईश्वर वाक्य कहाने के अधिकारी हों। हमारे बहुत से मित्रकह देंगे कि वारिस शाह ने केवल एक ही अंश वर्णन किया है किन्तु क़ुरान में बहुत सी बातें ईश्वरका वाक्य कहाने योग्य हैं, जैसे मूर्ति पूजा निषेध

और "एक मेवा द्वितीयं ब्रह्म" का उपदेश। परन्तु ऐसे दोस्तों का कथन किसी प्रकार ठीक नहीं हो सकता। प्रथम तो 'कुरान में बहुत सा भाग पुराने किस्सों से भरा है जिस को मुहम्मद साहब ने अपनी यात्रा में, जब कि वह नौकरी की अवस्था में शाम आदि ईसाई देशों में जाया करते थे। सुनाथा। इस भाग को तो इलहाम से कोई सम्बन्ध ही नहीं होना चाहिये। दूसरे हिस्से में ऐसी आज्ञायें हैं जिन का सम्बन्ध केवल मुहम्मद से है अर्थात् उनके ही लाभ की बातें हैं। जैसे जब मुहम्मद साहब की सब से अधिक प्रिया स्त्री आयशा पर व्यभिचार का दोष लगाया गया और उस से मुहम्मद साहब को अत्यन्त दुख पहुंचा। तब आयशा को कलंक से बचाने के लिये यह आयत मुसलमानों के कथनानुसार, उतरी।

जिसकी चर्चा क़ुरान की मन्जि़ल ४ सिपारह १८ सूरतुल नऊर में आई है। इस वृत्तान्त को शाह अब्दुल क़ादरने हाशिये पर लिखा है। देखो छापा

नोट—कद्र की रात में फ़रिश्तों का उतरना बतलाने से यह स्पष्ट है कि और रात में फरिश्ते न उतरते।

छापाखाना नवल किशोर लखनऊ सटीक क़ुरान पृष्ठ ३५२ का हाशिया नं०२। इस के उपरान्त तूफान (जल विप्लव) का वर्णन है जो हज़रत के समय में उठा था। हज़रत आयशा पर यह कलंक लगाया गया था। पैग़म्बर एक दिन जहाद से लौटे आरहे थे। रात को कूच हुआ, नफीरी और नगाड़ा साथ न था। मुसलमानों की माता (आयशा) शौच को गईं थीं। संयोग वश पीछे रह गईं। एक मुसलमान लश्कर से पीछे चलता था जिसने उन को ऊंटपर सवार करा लिया। स्वयं ऊंट की नकेल पकड़ कर चलता था और लश्कर में आयशा को पहुंचादिया काफिरों में एक मास तक इस का चर्चा रहा। पैग़म्बर भी सुनते रहे। बिना अनुसन्धान किये कुछ नहीं कहते थे, परन्तु दिल में कुछ रहते थे। एक मास के उपरान्त जब मुसलमानों की माँ (आयशा) ने सुना, उन्होंने बहुत ही दुःख माना। रोतेर दम न लिया। अल्ला ताला ने फिर ये आगली आयतें भेजीं।

इसी प्रकार, मुहम्मद साहब ने अपने लेपालक बेटे

लिया। जब लोगोंने उनको बुरा कहना आरम्भ किया, तब बहुत सी आयतें उतारलीं जिससे प्रत्येक के चित्त में यह विचार उत्पन्न होता है कि क़ुरान शरीफभी मुहम्मद साहबकी ही आज्ञायें हैं जो उन्होने आवश्यकतानुसार मनुष्यों पर प्रगटकीं भला ऐसी बातोंको, मूर्खोंके अतिरिक्त, कौन सत्य मानसक्ताहै ? इसके अतिरिक्त, इस बातकी भी यहां आवयश्कताहै कि यह बातभी जानी जावेकि ईश्वर वाक्य के लिये कौनसे गुणोंकी आवश्यकता है ? जिससे प्रत्येक मनुष्य उसकी परीक्षा करसके क्योंकि बिना लक्षण के किसी प्रकार भी यह बात नहीं ज्ञात होसकती कि यह किताब ईश्वरीहै वा किसी मनुष्यकी घड़न्तहै। इसलिये सबसे पूर्व इलहाममें ये गुण होने आवश्यकीयहैं कि उसके आशय वा अर्थों से ईश्वर की निन्दा न होतीहो। दूसरी यह कि वह किताब अपने उतरनेकी आव- श्यकताको बतासके। तीसरे यहकि सृष्टि के आर- म्भमेंहो। चौथे वह किसी देशकी भाषा में नहो। पांचवे उसमे क़िस्से कहानी और घरेलू झगड़े,

छूटे उसमें कोई बात सृष्टि नियम और बुद्धि के विरुद्ध नहो। सातवें उसके विषयोंमें, जो उसमें वर्णन कियेहों, परस्पर विरुद्ध बातें, अकारण पुनरुक्ति दोष और सत्यतासे विरोध न पाया जावे कमसे कम इनसात बातों का इलहाममें होना जरूरी है।

क्योंकि इलहामी किताबोंमें ईश्वरकी मुहब्बतो लगी होती ही नहीं जिससे विदित होजावेकि सचमुच यह इलहामीहै। हमारे बहुतसे मुसलमान मित्र कहेंगे कि ये लक्षण आपने इलहाम के कहांसे किये? तो उसका उत्तर यहहैकि इश्वरीय नियमसे इलहामके लिये ऐसेही लक्षणोंकी आवश्यकताहै, क्यों कि ईश्वर के ज्ञानसे, मनुष्य उसके गुणोंको जानकर उसकी उपासना करसकताहै। यदि ईश्वर की किताबमें ही ईश्वरकी निन्दाहोतो मनुष्य किस प्रकार ईश्वरके गुणोंको जानकर उसकी उपासना करेगा? दूसरे जब कि बिना आवश्यकता के कोई बुद्धिमानभी कोई काम नहीं करता, फिर ईश्वर जो सर्वज्ञ है, बिना आवश्यकताके कोई काम क्यों कर

आदम नमानाजावे तो इलहामकी आवश्यकता से इनकार करना पड़ेगा।

या ईश्वर पर अन्याय और अज्ञानताका दोष लगेगा, जैसेकि प्रायः मनुष्य कहतेहैं कि क्या कारण है कि ईश्वरने आदमसे लेकर मूसातक मनुष्य के कल्याणार्थ कोई पुस्तक नहीं भेजी ! यदि कहो कि कोई किताबथी तो उसको प्रस्तुत करना चाहिये अगर नथी तो दोष वैसा का वैसाही है । उस किताबमें क्या कमी थी जिसको पूरा करनेको तौरेत उतरी. और तौरैत से पूर्व संसारमें कौनसा वैज्ञानिक सिद्धान्त नहीं था, जिसको तौरैतने बतलाया ? और तौरैतके समय से पूर्व संसारमें कौन की सत्य शिक्षा नथी जिसको जबूर ने पूरा किया! और ज़बूरमें कौनसी कमी रहगईथी जिसको इञ्जीलने पूरा किया ! और तौरैत जबूर और इञ्जीलमें क्या दोषथा जो उनको मन्सूख़ कियागया । प्रायः लोग कहदेतेहैं कि इञ्जील आदि पुस्तकों में लोगों ने घटा बढ़ा दिया है, परन्तु उनका यह कथन निःतान्त अयुक्त है। मुसलमानोंको उचितहै कि इञ्जील की वह पुस्तक जिसमें यह घटना बढ़ना विद्यमान

है, उपस्थितकरें और बन. बढ़ाई हुई आयतोंको प्रगट करदें। जबतक ऐसी पुस्तकका पता नलगजावे तबतक यह दावा निर्मूल है। अगर कोई कहेकि कुरानमें भी यह दोषहै तो मुसलमान लोग इसका प्रमाण मांगेंगे परन्तु इन्जीलमें न्यूनाधिकता का प्रमाण देने के लिये आप तैयार नहीं हैं। यह किस प्रकार सम्भवहै कि ईश्वरकी किताबमें कोई मनुष्य कुछ मिलासके और उसका पता नमिलसके। आज तक इश्वरीय वस्तुओंके साथ मानुषी वस्तुएँ मिल नहीं सकतीं। इसलिये इलहाम वही है जो सृष्टिके आरम्भ में होकर मनुष्योंको सन्मार्ग दिखातारहे। चौथी युक्ति, कि वह किसी देशकी भाषा में नहो, इसलिये है कि ईश्वरपर अन्यायका दोष नलगे क्योंकि जिस देशकी भाषा में होगा, वहांके मनुष्य उस को सरलता से पढ़ सकेंगे। दूसरे देशवासियों को अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रायः मौलवी लोग यह भी कहते हैं कि यदि किसी देशकीभाषा में न हो तो लोग उसको कैसे पढ़ सकेंगे ? उसका उत्तर यह है कि प्रथम तो सृष्टि के आरम्भ में बहुत सी देश भाषाओं का विभाग हो ही नहीं

सकता, दूसरे ईश्वर जिन पर ज्ञान प्रगट करता है वही उनको इलहाम और उसका ठीक२ अभिप्राय भीबतातात है जिस से वह ऋषि उस का नियमानुसार प्रचार कर सकें। किसी देश की भाषा में न होने से उस में कोई कुछ बढ़ा भी नहीं सकता। पांचवें क़िस्से कहानी उस में न हों। जो किताब सृष्टि के आदि से होगी उस में किस्से कहानी होना असंम्भव नहीं और जिस में क़िस्से कहानी होंगे वह सृष्टि की आदि से न होगी, इस लिये ऐसी किताब ईश्वरीय ज्ञान कहाने के योग्य नहीं। इसकास्पष्ट आशय यह है कि मनुष्य बिना शिक्षा के अपने विचारों का प्रचार नही कर सकता, और बिना शिक्षा का बीज बोये विद्या की परम्परा नहीं पड़ सकती, क्योंकि संसार में बिना कारण के कोईवस्तु उत्पन्न नहीं हो सकती, इस लिये शिक्षा के बीज इलहाम का होना शिक्षा से प्रथम ही आवश्यकीय है जिससे शिक्षा की प्रणाली बनजावे। जब एक बार शिक्षा प्रणाली बन गई फिर किसी इलहामकी आवश्यकता नहींरहती, क्योंकि आजतक कोई भी मनुष्य बीज नहीं बना सका [illegible]

द्वारा बीज उत्पन्न कर सकता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य ईश्वर के ज्ञान में मिलावट नहीं कर सकता, और जिस में मिलावट हो जावे वह ईश्वर का ज्ञान नहीं। जिस प्रकार ईश्वर ने सूर्यको मनुष्य की आंख की सहायता के लिये बनाया है। अब यदि कोई मनुष्य चाहेकि सूर्य में कुछ मिला दूं तो असम्भव है। परन्तु सूर्य को मनुष्यों की आंखों की ओट में कर सकतेहैं जो केवल आंख पर हाथ रखने से हो सकता है यद्यपि, प्रायः सूर्य मनुष्यों की आंखों से ओट हो जाता है, परन्तु उस समय परमात्मा नया सूर्य नहीं बनाते और न पिछले सूर्य को रद्दी करते हैं। निःसन्देह मनुष्य के बनाए दीपक आदि की यह अवस्था अवश्य होती है कि वे सर्वदा बदलते रहते हैं। जबनए प्रकार का सुन्दर दीपक तैयार होजाता है तो पुराने और बुरे को रद्दी करदेतेहैं।

जिसपुस्तक में मनुष्योंके घरेलू झगड़े और किस्से कहानी पाये जावें वह एक प्रकारका मनुष्योंका इतिहास होसकता है। उसको किसी प्रकारभी इलहाम नहीं कहसकते। छठे उसमें कोई बात सृष्टि-

नियम और प्रत्यक्षके विरुद्ध नहीं। इसलिये कि सृष्टि नियम ईश्वरका बनाया हुआ है अर्थात् वह ईश्वरीय कर्म है; और जो किताब इलहामी होगी वह उसका ज्ञान होगी। नेक आदमियोंके कर्म और बचनमें अन्तर नहीं होता। जो मनुष्य कहे कुछ और जब करनेका समय आवेतो करे कुछ तो उस को अच्छा आदमी नहीं कहते। ईश्वरजो सारी सत्यताओं का भण्डार है, उसके लियेतो ऐसा कहना सम्भव ही नहीं कि उसके कर्म और कथनमें भेदहै। एक अज्ञानी मनुष्य प्रायः अपनी स्मृति की न्यूनताके कारण, अपनी बात को आप काटताहै या एकबात को दुबारा कहताहै जिसका कारण उसके ज्ञान और स्मृति की न्यूनता समझी जातीहै। परन्तु सर्वज्ञ ईश्वर ऐसा नहीं करसकता उसके वाक्यमें अकारण पुनरुक्ति और परस्पर विरोध नहीं होसकता इसलिये जिस किताबमें परस्पर विरोध पाये जावें वह किसी प्रकार भी ईश्वर का ज्ञान नहीं होसकती। अबहम कुरानकी भीतरीबातों से सिद्ध करतेहैं कि कुरानमें प्रत्येक प्रकार के दोष पाये जातेहैं जिससे वह खुदाका

कलाम तो क्या किसी बुद्धिमान मनुष्य का भी नहीं होसकता।

पहिला गुण यह कि वह किताब ईश्वरकी निन्दा न करती हो। हम जहां तक देखते हैं कुरानशरीफ़ के विषयों में ऐसे स्पष्ट शब्द विद्यमान हैं जिससे खुदाकी निन्दा होती है देखो कुरान-मन्ज़िल १ सिपारा २ सूरते बक़—

मञ्ज़ल्लज़ी युक्रे ज़ुल्लाह क़र्ज़न् हसनन् फ़युज़्वायफ़हू लहूअज़्आफ़न् कसीरतन् वल्लाहो यक़्बिज़ो व यब्सुतो वइलैहितुर्जऊन।

अर्थात्—कौन शख़्स है वह जो क़र्ज़ दे अल्लाहको क़र्ज़ अच्छा पस दुगना करे उसको वास्ते उसके दुगना बहुत और अल्लाह बन्द करता है और कुशादः करता है और तर्फ़ उस के फेरे जाओगे

अब देखिये कुरान ख़ुदाको भी ऋण की आवश्यकता वाला बताताहै और ऐसी आवश्यकता प्रतीत होती है कि दुगुना देनेकी प्रतिज्ञा करताहै आजकल का नियम यह है कि गवर्नमेन्ट तो चार पांच आनेकाही सूद देती है औरकोठीवाले

कर ॥) का सूद देते हैं और ग्रामणी पुरुष १॥)
से ३=) तक का सूद देते हैं । ज्वारी लोग,
जिनका विश्वास बहुत कम होता है ~) फी
रुपया सूद देते हैं न मालूम ऐसी आवश्यकता
क़ुरानी ख़ुदाको क्या पड़ी है, कि लोगों में
उसका इतना अविश्वास बढ़ा है कि वह दुगना
सूद देने की प्रतिज्ञा करता है और कर्ज़ मांगता
है, परन्तु फिर भी लोग उधार नहीं देते । इसका
कारण कदाचित् वह आयत हो जिसमें ख़ुदाको
मक्र करने का दोष लगाया है, नहीं तो ख़ुदा
का इतना अविश्वास क्यों ? देखो सूरत आल
उमरान—

"वमकरू व मकरू अल्लाहो ख़ैरुल् माकरीन"

अर्थात् मक्र किया उन्होंने (काफ़िरों ने)
और मक्र किया अल्लाह ने; अल्लाह बेहतर
मक्र करने वाला है, पाठक गण ! काफ़िरों ने
जिस ख़ुदा को त्याग रक्खा है, वह दफ़ा ४१७
ताज़ीरात हिंद के अपराध का कर्ता होवे तो
क्या आश्चर्य है ? परन्तु जिस समय क़ुरानी

ख़ुदा भी भजन करे तो उसका विश्वास कौन करे ? इसी लिये तो वह बारम्बार ऋण मांगता है, परन्तु अविश्वास के कारण मनुष्य उसको देने के लिये तैय्यार नहीं होते देखो और स्थान पर भी ख़ुदा को ऋण लेने की आवश्यकता पड़ी है। देखो क़ुरान मञ्ज़िल ७ सिपार: २८ सूरतुल तगाबुन्—

"इन्तुक़्रे ज़ुल्लाह क़र्ज़न् हसनैय ज़्याइफ़्हो लकुम् व यग़ीफ़र लकुम् वल्लाहो शकूरुन् हलीम"

अर्थात् यदि ऋण दो अल्लाह को ऋण अच्छा, दुगना करेगा उसको वास्ते तुम्हारे, और बख़शेगा वास्ते तुम्हारे, और अल्लाह क़दरदान है अमल वाला।

पाठक गण ! देखिये, क़ुरानी ख़ुदा बारम्बार ऋण मांग रहा है और अविश्वास के कारण दुगना देने की प्रतिज्ञा करता है, परन्तु फिर भी ऋण देने को लोग तैयार नहीं हैं। ज्ञात होता

है कि लोग ख़ुदा के भक्त से डर कर उसको ऋण देने को तैयार नहीं हैं वर्न इतने बड़े सूद पर ऋण क्यों नहीं मिलता ! देखिये ख़ुदा और स्थल पर भी ऋण मांगता है—देखो क़ुरान सिपारः २७ सूरतुल हदीद मन्—

'ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्लाह क़र्ज़न् हसनगन् फ़युज़्वायफ़ो हूलहू अज्व्र् आक़त् क़सीरतन्"

अर्थात् कौन पुरुष है जो ऋण दें अल्लाह को ऋण अच्छा, पस दुगना करे उसके वास्ते उसके और वास्ते उनके सवाब या करामात। यद्यपि ख़ुदा ने दुगना देने और सवाब आदि बहुत सी चीजों के लालच दिये हैं परन्तु मनुष्यों को इस पर विश्वासही नहीं होता--विश्वास हो कैसे ? जब कि ख़ुदा अपनी बातों को तत्काल ही काट देता है ! यदि उसकी कोई भी बात अटल होती तो उस पर विश्वास भी किया जाता। देखो ख़ुदा मुसल्मानों को लड़ा कर अपना राज्य स्थापित करना चाहता है इस के स्थान में अपने रसूल की सहायता स्वयं

खुदा करता, क्योंकि वह सर्व शक्तिमान् था, परन्तु बारम्बार क़र्ज़ मांगने और मुसल्मानोंको लड़ाकर लाभ उठाने और बातकी सत्यता के लिये अनेक क़सम खाने से ज्ञात होता है कि न वह क़ादिर मुतूलक़ (सर्व शक्तिमान्) है न वह सर्वज्ञ है, किन्तु उसका ज्ञान बहुतही अल्प है। देखो खुदा अपनी बात को आपही काटता है देखो क़ुरान सिपरः सूर ऐ अनफाल--

"या अइयो हन्नवीयो हर्रे ज़िवल् मोमिनीय अलल् क़िताले ईं यकुम् मिन् कुम् वेइश्रून स्वाविरून् यग़लिवू मे अतैन् वई यकुम् मिन् कुम् मे आत्विं यग़लिबू अल्फ़म् मिनल्लज़ीन कफ़रूबे अन्नहुम् कौमुल् लायफ़् क़हूना"।

अर्थात् ऐ नबी रग़बत दिला मुसलमानों को ऊपर लड़ाई के अगर हों तुम में से बीस आदमी सब्र करने वाले ग़ालिब आवें दो सौ पर, और अगर होवे तुममें से ग़ालिब आवें एक

हजार पर उन लोगों से कि काफिर हुए निस्बत इस से कि नहीं समझते । अब विचारिये कि कुरानी खुदा यहां मुसलमानों को मारकाट की शिक्षा देता है और साथही यह वरदान भी देता है यदि तुममें से, १०० मनुष्य होंगे। और १००० पर विजयी होंगे। अब देखिये खुदाका वरदान और प्रतिज्ञा कितनी शीघ्र असत्य होते हैं। देखो, कुरान--

"अल आनंखफ्फ़फ़ल्लाहो अं नकुम् व अ़लमें अन्नं फी कुम ज्व़अम्मन् फ़ इं यकुम मिन् कुम में अतुन् स्विाबरे तिवं यग़लेन् मं अतेने नइयकुम् मिन् कुम् अल् फ़ुइं यग़लब् अल्फ़ैन् बेइज़् निल्लाहे वल्लाहे मे असचा बिरानि"।

अर्थात्-अब तखफीफ की अल्लाह ने तुम से, और जाना यह कि बीच तुम्हारे नातवानी हैं, पस अगर होवें तुममें से सौ सब्र करनेवाले ग़ालिब आवेंगे, दो सौ पर, अगर होवें तुम में से

दो हज़ार गालिब आवेंगे तुम में से दो हज़ार पर साथ हुक्म खुदाके, और अल्लाह साथ सब्र करने वालों के हैं ।

लीजिये खुदा साहब की भी अज्ञानता प्रगट होगई । कि पहिले तो दसके सामने एक को तैयार किया । जब देखा कि निर्बलता है, तो दो के मुक़ाबिले में एक को तैयार किया । प्रश्न तो यह उत्पन्न होता है कि जिस समय क़ुरानी खुदाने पहिले दुआ दी थी कि "सौ होंगे तो हज़ार का मुक़ाबला करसकोगे" । उस समय उस को इस बात का ज्ञान था या नहीं। कि मुझे यह आज्ञा मनसूख़ करनी पड़ेगी ? यदि कहो कि थी, तो फिर अपने ज्ञानके विरुद्ध ऐसी झूंठी दुआ क्यों दी ? क्या उस समय उसको मुसलमानों की निर्बलता का ज्ञान नहीं था ? जहां तक ज्ञात होता है खुदाको पहिले प्रतिज्ञा करते समय इस बात का ज्ञान नहीं था। यदि ज्ञानहोता तो क्यों उस में यह शक्ति न थी कि मुसलमानों की निर्बलता को दूर करके अपनी पहिली प्रतिज्ञा को पूरा करता ? यदि कहो कि यह शक्ति

थी, तो पहिले वायदे को क्यों मनसूख कर दिया ? अगर कहो कि न थी, तो वह सर्वशक्तिमान् कैसे हो सकता है ? हमने जितने क़ुरान के विषयों को पढ़ा हमने खुदाकी निन्दा के अतिरिक्त, खुदाका पूरा लक्षण कहीं भी नहीं पाया। बहुत से लोग कहदेंगे किक़ुरानने खुदाकी निंदा कहां पर की है ? तो उनको ध्यान पूर्वक विचार करना चाहिये कि सर्व स्वामी ईश्वर को ऋणका अभिलाषी बतलाना, शुद्ध परब्रह्म को मक्कार (धूर्त्त) कहना और खुदा को अपनी प्रतिज्ञा को दस मिनट के उपरान्त मनसूख करने वाला बताना, निन्दा नहीं और क्या है ? और भी क़ुरान में बहुत आयतें और विषय ऐसे हैं कि जिन में खुदाकी निंदा विद्यमान है परन्तु दिग्दर्शनमात्र कराकर दूसरे प्रकरण को आरम्भ करते हैं, क्योंकि लोग इतनेही से समझ जावेंगे कि क़ुरान ईश्वर की निंदा करनेवाला है। दूसरी बात यह है कि जब क़ुरान का उतरना बताया जाता है; उस समय क़ुरान की आवश्यकता थी या न थी ! ज

कुरान में ऐसी कोई नई बात नहीं जो कुरान से पूर्व विद्यमान हो हमने बहुत से मौलवियों से प्रश्न किया कि बतलाइये कुरान से पहिले कौनसा विद्यासम्बन्धी विषय तथा, जिस के बतलाने के लिये कुरान आया ? बहुत से लोगों ने तो इसका उत्तर ही नहीं दिया। परन्तु एक दो मनुष्यों ने यह कहा कि वहदतकुल ज़ात वहदत फ़िल सिफात और वहदत फ़िल इबादत अर्थात् एकमेवा द्वितीयं ब्रह्म, न तत्समश्चाभ्य. धिकश्च दृश्यते। और तमेव विदित्वाऽति मृत्यु-मेति, ये कुरान से पहिले संसार में न थीं। यह इस्लाम का कथन नितान्त असत्य है क्योंकि कुरान से पूर्व वहदतकुल ज़ात की शिक्षा उप. निषदों में विद्यमान थी। दूसरे श्री स्वामी शंक-राचार्यजी महाराज, जो एक ही ब्रह्म के मानने वाले थे, मुहम्मदसाहब से पूर्व हुए हैं। उपनि-षद की यह श्रुति कि "एकमेवाद्वितीयंब्रह्म" वहदतकुलज़ात को सिद्ध करती है और उसका अनुवाद कलमे का पूर्वार्द्ध लाइला लिल्लिल्लाह है अर्थात एकही परब्रह्म है दूसरा नहीं। इस

लिये जब कि ब्रह्म होने की शिक्षा प्रचलित थी तो क़ुरान के उतरने की कोई आवश्यकता नहीं। यदि यह कहा जावे कि वहदतक़िलु सिफात के लिये क़ुरान की आवश्यकता थी तो यह भी असत्य है क्योंकि क़ुरान से बढकर यह शिक्षा उपनिषदों में विद्यमान थी जैसे "नतत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते"। यदि कहो कि वहदतक़िल इबादत के वास्ते क़ुरान आया तो भी असत्य है क्योंकि उपनिषद वेद और गीता आदि सब ही ग्रन्थ एकही ईश्वर को बतलाते हैं जो सब के सब क़ुरान से बहुत पहिले के हैं। यथा "तमेव विदि-त्वातिमृत्युमेति" आदि। इसके विरुद्ध क़ुरान, खुदाको वाहिद (एक) सिद्ध नहीं कर सकता किन्तु उस के साथ काम करने में फरिश्तों की एक सेना विद्यमान है, इसीलिये उस का नाम "रब्बिलअफवाज" अर्थात् फौजों का स्वामी भी है।

कोई काम नहीं, जो क़ुरानी खुदा अपनी शक्ति से कर सकता हो, किन्तु प्रत्येक काम के के लिये पृथक् २ फरिश्ते नियत हैं यहांतक कि

क़ुरान के उतरने तक के लिये भी हज़रत जिब्र-राईल से काम लेना पड़ा। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि हज़रत जिबरईल तो, मुसलमानों के कथनानुसार, खुदा के पास जा ही नहीं सकते थे जैसा कि लिखा है "अगर यकसरे मूए बरतरपरम्। फरोगे तजल्ली बसोज़द परम्" अर्थात् यदि कुछ भी इस से आगे बढ़ूं तो खुदा का प्रकाश मेरे पर जलादे। जब जिबर-ईल खुदातक पहुंच नहीं सकते थे तो जिबरईल तक खुदा का पैगाम कौन लाया? यदि कहो यहां तक खुदाकी कुदरत से आया तो, क्यों कर खुदाके कामों में फरिश्तों और पैगम्बरोंको शरीक करते हो सीधे आर्यसमाज की तरह मानो कि ईश्वर सर्वत्र व्यापक है। वह अपनी शक्ति से सारे काम करता है। यद्यपि मुसलमान सारे कामोंमें फरिश्ते आदि को सम्मिलित करते हैं और रसूलों के खुदा के नाम तो उनके विश्वास की नींव (कल्मा) में सम्मिलित होगये हैं जो मनुष्य रसूलको न माने वह मुसलमान नहीं हो सकता, और महत्व प्रकाश करने के लिये

खुदा ने फरिश्तों को, आदम के सिजदः करने की आज्ञा दी । जिन फरिश्तों ने आदम को सिजदः किया वे सब नेक होगये और जिन फरिश्तों के गुरु आज़ाज़ील ने आदम को सिजदः करना पाप समझा, वह जाननी (धिक्कारित) हुआ । अब सोचना चाहिये कि कुरान से वहदत क़िल इबादत की शिक्षा कैसे मिल सकती है । जो ईश्वर के अतिरिक्त दूसरे को दण्डवत् करने की आज्ञा दे वह १ सन्मार्ग से हटाने वाला होता है ।

देखो कुरान सिपारह १४ सूरतुलहर—

"व लक़द ख़लक़नल् इन्सान मिन् सल स्वालिम् मिन् हमं इम्मस् नून"

१ गुमारह

अर्थात् और, अलबत्ता, तहकीक पैदाकिया हमने आदमी को बजने वाली मट्टी से, जो बनी हुई थी कीचड़ सड़ी हुई से (यहां खुदा ने यह नहीं बताया कि सड़ी हुई कीचड़ को किस चीज़ से बनाया ? क्योंकि मट्टी और पानी से मिलकर कीचड़ बनती है) कि कीचड़ से मट्टी बनती है।

"वल् जान्नं ख़लक़् नाहो मिन् क़ब्लो मिन्ना-रिस्सुम्"

अर्थात् और जिन्नों को पैदा किया हमने-उसके पहिले इससे आग लोनकी से, इस आयत से पता चलता है कि फरिश्ते और जिन्न एकही हैं, क्यों कि जिन्नों को आग से पैदा किया है और फरिस्तों की उत्पत्ति की कहीं भी चर्चा नहीं की है कि वे किस चीज से बनाये गये ?

वइज क़ाल रब्बके लिल् मलायकते इन्नी खालेकुम् बशरम् मिन् स्वल् स्वलिम् मिनहम इम्मसनून।

अर्थात् और जब और कहा परवरदिगार तेरेने वास्ते फरिश्तों के तहक़ीक़ मैं पैदा करने वाला हूं आदमी को बजने वाली मट्टी से जो बनीथी कीचड़ सड़ी हुई से।

फ़इज़ा सब्वेतहू व नफ़ख्तो फ़ी हे मिन् फ़क़ ऊलहू साजिदीन"।

अर्थात्—पस जब दुरस्त करूं मैं उसको और

फूँकूँ बीच उसके रूह अपनी से पस गिर पड़ो वास्ते उसके सिजदः करते हुए।

"फ़ुसजदल् मलायकतो कुल्लहुम् अजम-ऊन इल्ला इबलीस ऐं यकूनमअस्साजिदीन",

अर्थात् पस सिजदः किया फरिश्तोंने सबने इकट्ठे, कहा ऐ इबलीस क्या है वास्ते तेरे यह कि न हुआ तू साथ सिजदः करने वालों के।

"काललम् अकुल्ले असजुद लेबशरिन् खलक़हू मिन् स्वल् स्वालिम मिन् हमइम मसनून"।

अर्थात् कहा कि मैं नहीं लायक इस बात के कि सिजदः करूं वास्ते बशर के कि पैदा किया बजने वाली मिट्टी से कि बनी थी कीचड़ सड़ी हुई से।

काले फ़खरुज मिनहा फ़इन्नक रजीमुव व इन्न अलैकल् लाअनत इला योमदीन्"।

अर्थात् कहा पस निकल उसमें पस तहकीक़ मुरादः हुआ है, और तहकीक़ ऊपर तेरे लानत

है दिन कयामत तक।

"काल रब्बेक अनन ज़िर्नी इलायौमे युब आसून"

अर्थात् कहा ऐ परवरदिगार मेरे पसढीलदे मुझको उस दिन तक कि जिन्दा किये जावें।

"काल फ़इन्नक मिलन मुन ज़रीन"

· अर्थात् कहा बस तहक़िक़ तू ढील दिये गयों से है।

'इलायौमिल वकातिल मअलूम'।

अर्थात् तर्फ दिन वक्त मालूम के।

काल रब्बेबमा अग़वैतनी लऊजई यन्न-मल मुम फ़िल अर्ज़ वलउग़्व यन्नहुम अज्-मईन इल्लाइबादक मिन हुमुल मुखलसीनं"।

अर्थात् कहा ऐ रब्ब मेरे व सबब इसके कि गुमराह किया तूने मुझको अलबत्ता जीवन दूंगा मैं वास्ते उनके बीच ज़मीन के, और अलबत्तः गुमराह करूंगा मैं उन सबको। उपरोक्त संवादसे, जो कुरानी खुदा और ब्रह्म वादियोंमें श्रेष्ठ अर्थात्

शैतानकेबीच स्पष्ट हुआ,स्पष्ट प्रगट है कि कुरानी खुदा वास्तवमें पाप फैलाकर सन्मार्ग भ्रष्ट करना चाहताथा; परन्तु वे डर और सच्चे पुरुष कभी भी अपने धर्मसे च्युत नहीं होते, इसलिये हजरत शैतान ब्रह्म वेत्ताओं में श्रेष्ठ (शैतान) एक मेव द्वितीय ब्रह्म का विश्वासी बनारहा, और शेष सब फिरिश्ते मनुष्य पूजक बनगये। पाठकगण। कुरान के कर्ता को इस कहानीके लिखनेसे जो तात्पर्य है वह तो आप जानगये होंगे, परन्तु कुछ मित्रों को इस प्रकरण के लिखने का अभिप्राय कदाचित् ज्ञात नहो, इसलिये हम भी संक्षेप से कहे देते हैं। यह परस्पर का संवाद केवल इस लिये लिखा गया है कि लोग पैग़म्बरोंकी आज्ञापालनसे इन्कार न करें, और यह न कहने लगें क्योंकि खुदा और मनुष्योंके मध्य में तुम कौनहो? इसका पता इस-लाम के कलमेंसे भी मिलजाताहै जहां लिखा है "मुहम्मदरसूलिल्लाह" क्याकेवल मुहम्मद साहिब ही खुदाकी ओर से भेजेहुए थे? शेष जितने पैग़म्बर आये वे खुदाके भेजे हुए न थे? मुहम्मदसाहब का कुलपैगम्बरों को छोड़ कर, यहांतक कि आदम

को, जिसको, कुरान के कथनानुसार, फ़िरिश्तों से सिजदः कराया, नितान्त छोड़कर, केवल मुहम्मद साहब को रसूल बताना स्पष्ट बतारहा है कि यह वाक्य कोई विशेष स्वार्थ रखने वाले मनुष्यों का है। इस कलाम से सिवाय मुहम्मद साहब का अपना स्वार्थ सिद्ध होने के और कोई आशय नहीं निकल सकता है। हमारे मित्र मौलवी साहबान प्रायः कह देते हैं कि यह लेख शिर्क को प्रगट नहीं करता, किन्तु खुदाने एक पुराना क़िस्सा वर्णन किया है। यदि इस किस्से का वर्णन एक स्थलपर होता, तो हम दुर्जन संतोष के न्याय से मान भी लेते, परन्तु क़ुरान में इसकी चर्चा बहुत स्थानों पर आई है इससे स्पष्ट है कि क़ुरान के बनाने वाले की यह प्रबल इच्छा थी कि लोग इस किस्से को भले प्रकार याद करलें जिससे रसूल की आज्ञाओंसे इन्कार करनेमें शैतानके समान लानती होने का भय लगारहे। प्रथम ही इसका उल्लेख सूरःबक़र में आया है यथा—

वइज क़ाल रब्बोक लिल मलायकते इन्नी जायलुन् फ़िल अर्ज़े ख़लीफा क़ाल

अत जल फ़ीहा मन् युफ़संदो फ़ीहा वयु-
सफ़े कुद्दिमाअ वन हनो सब्बेहो वेहम्देक
वनुक़द्देसो लक क़ाल इन्नी आलमो माला
तआलमून्"

अर्थात्–जब कहा परवर्दिगार तेरे ने वास्ते फरिश्तों के तहक़ीक मैं बनाने वाला हूं बीच ज़मीन के नायब, कहा उन्होंने क्या बनाता है बीच उसके उस सख्स को कि फिसाद करे बीच उसके, और डालेगा लहू, हमया कि बयान करते हैं साथ तारीफ तेरीके और बाकी बयान करने वास्ते तेरे। कहा तहक़ीक़ मैं जानता हूं।

व अल्लमा आदमल् अस्माअ कुल्लहा
सुम्मा अरदहुम् अलल् मलायक ते फ़क़ाल
अम्बे ऊनी बे अस्माये हा उलाये इनकुन्तु
स्वादेक़ीन्।

अर्थात् और सिखाये आदमको नामसारे, और सामने किया उसको ऊपर फरिश्तों के और

कहा उनको बताओ मुझको नाम उन के अगर हो तुम सच्चे।

"क़ाल सुभानक लाइल्मा लना इल्ला मा अल्लम्‌तना इन्नक अन्तुल् अलीमुल् हकीम"।

अर्थात् कहा उन्होंने पाक है तू, नहीं इल्म हमको मगर जो कुछ सिखाया तू ने हमको तहक़ीक़ तू है जानने वाला हिकमत वाला।

क़ाल या आदमो अम्बेहुम् बे अस्माये हुम् फ़लम्मा अम्बाहुम् बे अस्मायेहिम्, क़ाल अलम अक़ुल्लकुम् । इन्नी आलमो ग़ैबस्समावातेवल् अर्दे व आलमो मातुब्दूना वमा कुन्तुम् तक्तुमून। वइज कुल्ना लिल् मलायकातिस्जुदू लेआदम फ़सजदू इल्ला इबलीसा अबावस्तक्बर वकान मिन् अल काफ़िरीन"।

कहा ऐ आदम! बताओ उनको नाम उनके पस जब बताये उनको नाम उनके। कहा क्या न

कहा था मैंने तुमको तहक़ीक़ मैं जानताहूं छिपी चीजें आसमानों और ज़मीन की और जो जानताहूं जो ज़ाहिर करतेहो और थे तुम छिपाते॥ और जब कहा हमने वास्ते फरिश्तों के सिजदः करो वास्ते आदम के पस सिजदः किया मगर शैतान ने न माना और तकब्बुर, किया और था वह काफ़िरों से।

ऐ वहदत किल जात का दावा रखने वालो! सोचो कि जो आदमको सिजदः न करे वह काफिरहै। जब कि खुदा नहीं मानने वाले भी काफ़िर हैं और आदमको सिजदाः न करने वाले भी काफिरथे, तो क्या अब भी वहदत-किल जातके ढोंग मारोगे? यही विषय कुरान मंज़िल २ सिपारः ७ सूरत रोरा।

"वलक़द ख़लक़्नाकुम् सुम्म् सव्वरनकुम् सुम्म् क़ुलीना लिल्मलायकातिस्सजूदूले आदम फ़सजदू इल्ला इबलीसा लम् यकुन् मिनस्साजदीन"।

अर्थात् और अलबत्ता तहकीक़ पैदा किया

हमने तुमको, फिर सूरतें बनाईं हमने तुम्हारी फिर कहा हमने वास्ते फ़रिश्तों के सिजदा करो वास्ते आदम को सिजदः किया उन्होंने, मगर इबलीस न हुआ सिजदः करने वालों में से—

"क़ालमा मनआक अल्लाह तस्जुद ज़ेआ मर्तक क़ाल अन खैरम्मिहो खलक़तनी मिन्नारिन् वखलक़तहू मिन्तीन।

अर्थात्—कहा किस चीज़ने मना किया तुझको, न सिजदः किया तूने जब हुक्म किया मैंने तुमको कहा मैं बेहतर हूं उससे पैदा किया तूने मुझको आग से और पैदा किया उसको मट्टी से।

"क़ाल फ़ह बित् मिन्हा फ़मा यकूनो लक अन्त तकब्बुरो फ़ीहा फ़खरुज इन्नक मिन् मस्साग़िरीन"।

कहा पस उतरा उसमें से पस नहीं लायक़ वास्ते तेरे यह कि तकब्बुर करे तू बीच उसके बस निकल तहक़ीक़ तू ज़लीलों से है।

"क़ालनुज़ुर्नी इलायो मे युब् असून"

अर्थात्—कहा ढील दे मुझ को कि उस दिन तक कि क़बरों से उठाये जावें।

"क़ाल इन्नक मिनल् मुन्ज़रीन"।

कहा तहक़ीक़ तू ढील दिये गयों में से है।

"क़ाल फ़बेमा अग़वैतनी लाक़ादन्न-लहुम् सिरातकल् मुस्तक़ीम्"।

अर्थात् कहा पस क़सम है उसकी गुमराह किया तूने मुझको अलबत्तः बैठूंगा वास्ते उसके राह तेरी सीधी पर।

पाठक गण! इसी विषय को क़ुरान सिपारः २३ मंज़िल ६ सूरते स्वाद में भी कहा है—

इज़क़ाल रब्बोक लिल् मलायकतेइन्नी खालेकुन् बशरिम्मिन्तीन।

अर्थात्—जिस वक्त कहा परवरदिगार ने वास्ते फ़रिश्तों के तहक़ीक़ मैं पैदा करने वाला हूं इन्सानों को मट्टी से।

"फ़इज़ा सव्वैतहू व नफ़ख़्तो फ़ीहे मिर्रूही फ़क़ऊ लहू साजदीन"।

अर्थात्—पस जिस समय दुरुस्त करूँ उसको और फूंक दीच उसके रूह अपनी, ज़मीन में पस गिर पड़ो वास्ते उसके सिजदः करते हुऐ।

"फ़सजदल् मलायकतो कुल्लहुम् अजमऊन"।

पस सिजदः किया फरिश्तोंने सब इकट्ठे।

"इल्ला इब्लीस स्तक्बर व कान मिनल् काफ़िरीन"

मगर इबलीस ने तकब्बुर किया और था काफिरों मे।

पाठक गण! आगे वही विषय है जो पीछे तीन जगह दिखा चुके हैं। प्रथम तो इस पुनरुक्ति को, जो आदम को सिजदः के लिये है, देखकर कोई विद्वान नहीं मान सकता कि क़ुरान एक ही ईश्वर की पूजा बताता है जब कि आदमको न सिजदः करने वाले काफिर हैं, मुहम्मदको रसूल

बनाने वाले काफ़िर हैं। कहां तक कहें बहुत सी वस्तु हैं जिनको कुरान ने खुदाके साथ विश्वास में सम्मिलित कर लिया है। हमने जहां तक पता लगाया है उससे यही परिणाम निकलता है कि कुरान केवल मुहम्मद साहब की आवश्यकता पूरा करने वाला वाक्य है। जब मुहम्मद साहबने कोई ऐसा कर्म किया जिसके कारण पबलिक ने उनको बुरा कहना आरम्भ किया, झट मुहम्मद साहब ने एक आयत गढ़दी, जैसा कि प्रायः कुरान में पाया जाता है। उसका एक उदाहरण हम प्रस्तुत करते हैं--हज़रत मुहम्मद साहब ने ज़ैद नामी एक मनुष्य को गोद ले लिया था, और उसका ज़ैनब नामी एक सुन्दर स्त्री से विवाह भी कर दिया था। एक दिन हज़रत ज़ैनब के घर अचानक चले गये। और ज़ैनब को बेपरदा देख लिया। हज़रत की तबियत भी आशिक मिज़ाज थी, जैसा उनका जीवनचरित्र पढ़ने से, और सारे मुसलमानों के लिये चार स्त्रियां और अपने

उन्होंने अन्दर पहुंच कर उसकी प्रशंसा की। ज़ैनबने जब यह हज़रतका विचार ज़ैद से कहा। ज़ैद मुहम्मद साहब का सच्चा हितैषी था, उसने झट ज़ैनब को तलाक़ देदी और हज़रत ने विना निकाह उसको अपनी स्त्री बनालिया। जब लोगों में इस बातकी चर्चा उठी और हज़रतकी निन्दा होने लगी क्योंकि यह बातही इस प्रकारकी थी। एकतो लेपालक की स्त्री! दूसरे विना निकाह उस को स्त्री बना लेना!! सर्व साधारण में हलचल क्यों न मचती? जब हज़रत ने देखाकि लोग बहुत बदनामी करतेहैं तो एक आयत उतारदी— देखो क़ुरान २२ वां पारः सूरत एहज़ाब—

"वमाकानं लेमोमिनिंव् वलामोमिनं तिन् इज़क़दल्लाहो वरसूलहू अमरन् एं यकून लहूमुल् खेयरतो मिन् अम्रेहिम वमें या सिल्लाहा वरसूलहू फ़क़द्लाह दलालम् मोबीन्।

मर्द मुसलमान के और न औरत मुसलमान के जिस वक्त मुकर्रिर करे खुदा और रसूल उसका कोई काम यह कि होवे वास्ते उनके इखत्यार काम अपने से और जो कोई नाफ़रमानी करे अल्लाह की और रसूल उसके की पस तहक़ीक़ गुमराह हुआ गुमराही ज़ाहिर।

"वइज़तकूलोलिल्लज़ी अन्नमल्लाहो अलैहेव अन अमत अलैहे अमसिक अलैक ज़ौजक वऽक़िल्लाह वतुख़फ़ी फ़ीनफ़सेकमल्लाहो मुब्दीहे व तख़ शन्ना संवल्ला हो अहक्को अन्तख़ शफ़लम्मा क़द ज़ैदुन्मिनहावतरन् जव्वज ना कहा ले कैला यकून अललमोमिमीन हरजुन् की अज़्वाजे अदए या एहिम इज़ा क़दौमिन् हुन्ना वतर वकान अम्र रुल्लालाहे मकूल"।

अर्थात् और जिस वक्त कि कहता था तू वास्ते उस शख्स के कि निअमत की है तू ने ऊपर उस के ऊपर थानरख ऊपर अपनी बीबी को और

डर खुदा से । और छिपाता था बीच जी अपने के जो कुछ अल्लाह जाहिर करने वाला है। और डरता था लोगों से और अल्लाह बहुत लायक है उसका कि डरे तू उस से पस जब पूरी करी जैदने उस से हाजित ब्याह दिया हमने तुझ से उसको तू कि न होवे ऊपर ईमान वालों के तंगी बीच बीवियों के बालकों उनके के जब रफा की उन से हाजित और है हुक्म खुदा किया गया।

इस के हाशिये पर शाह अबदुल क़ादर लिखते हैं—हज़रत ज़ैनब रसूल की फूफी की बेटी और कौम में अशराफ थीं। हज़रत ने चाहा कि उनका निकाह करदें ज़ैद बिन हारिस से। ये ज़ैद असल अरब थे, पकड़ जालिम लेगयाथा। शहर मक्के में उनको हज़रतने मोल ले लिया। दस वर्ष की उम्र में इनके बाप भाई ख़बर पाकर मांगनेको आये। हज़रतके देने पर यह घरजानेको राजी नहीं हुए और हज़रतसे हुज्जतकी। इसलाम से पहिले के रिवाज के मुआफिक हज़रतने उस को बेटा बना लिया। हज़रत ज़ैनब और उनके

भाई राजी न हुए। यह आयत उतारी और(... होगये और निकाह कर दिया। (और देखो हाशिया सुफा ५२३ हज़रत जैनब ज़ैद के निकाह में आई तो वह उनकी निगाह में हकीर जचीं मिज़ाज की मुआफ़िकत न हुई तो लड़ाई हुई। ज़ैद हजरत से आकर शिकायत करते और कहते थे कि इसे छोड़ता हूं। हज़रत मना करते थे कि मेरी खातिर से तुझको क़ुबूल किया है। अब छोड़ना दूसरी जिल्लत है। जब बार २ क़ज़िया हुआ। हज़रत के दिल में आया कि अगर नाचार ज़ैद छोड़देगा तो ज़ैनबकी दिलजोई बगैर इसके नहीं कि मैं उस से निकाह करूं। लेकिन मुनाफिकों की बदगोई से अन्देशा गया कि कहेंगे कि बेटेकी जोरू घरमें रक्खी, हालांकि लेपालकको हुक्म बेटे का नहीं। किसी बात में अल्लाह तालाने हज़रत ज़ैनब की ख़ातिर रक्खी बाद तलाक़ के हज़रतके निकाह में देदिया। अल्लाह के फ़रमाने ही से निकाह बंधगया। ज़ाहिर में निकाह की हाजित नहीं हुई। जैसे अब कोई मालिक अपने

लौंडी गुलाम को बांध दे, गरज पूरी होने पर छोड़दें"।

पाठक गण ! इस घटना को नेक ध्यान से पढ़िये और शाह अबदुल क़ादिर के शब्दों को सोचिये तो क्या यह फल नहीं निकलता कि बिना निकाह मुहम्मद साहब ने अपने बेटे की जोरू को घर में रख लिया। शाह साहब का यह कहना कि हजरत ने "रिवाज के मुआफ़िक बेटा बनाया था दर असिल लेपालक को हुक्म बेटे का नहीं" किस प्रकार ठीक मान लिया जावे ? क्योंकि यदि हजरत का गुप्त निकाह बंध जाने से पहिले ये आयतें उतरीं तो लोगों को यह विचार उत्पन्न होता कि मुहम्मद साहब ने जो कुछ किया ख़ुदा की आज्ञा से किया। परन्तु यहां पर बिल्कुल ही उलटा मामला है, क्योंकि शादी पहिले हुई और आयतें बाद को उतरीं। ये सारी आयतें मुहम्मद साहब की इच्छा पूरी करने के अतिरिक्त और किसी काम की नहीं। खुदा ने कहा और मुहम्मद साहब का निकाह बंधगया, इसका कोई प्रमाण

शाह साहबने नहीं दिया । यदि कोई मनुष्य निष्पक्ष होकर जिज्ञासु भाव से इन आयतों को पढ़ेगा, तो उसको अवश्य ही मानना पड़ेगा कि कुरान खुदाका वाक्य नहीं किन्तु मुहम्मद साहब को और कुछ उनकी प्रशंसा करने वालों की रचना है यहां पर इतने आक्षेप होते हैं—

१–खुदाने मुहम्मद साहब का, लोगोंके डर से दिल में अपनी इच्छा अर्थात् ज़ैनब की शादी को छिपाना, प्रगट किया है । अब प्रश्न यह है कि जो मनुष्य पैग़म्बर का दावा करे और लोगों के भय से डरे, उसकी बात के सत्य होने का क्या प्रमाण है ?

२–दूसरा प्रश्न यह है कि जब मुहम्मदसाहब की इच्छानुसार खुदाने ऐसा वाक्य भेजा था कि जिसके द्वारा ज़ैनब और उसका भाई, जो विवाह से असन्तुष्ट थे, सन्तुष्ट होगये,उस समय कुरानी खुदाको यह ज्ञात था या नहीं की ज़ैनबका

ख़ुदा जानता था कि उस से ज़ैनब को तसल्ली नहीं होगी, और वह ज़ैदको, पैग़म्बर और ख़ुदा के समझाने पर तुच्छ समझी गई, तो उसने क्यों हज़रत ज़ैनब से ज़ैदकी शादी कराकर अपनी दया की भी निन्दा कराई? यदि ये आयतें पहिले आतीं और बादको मुहम्मद साहब ज़ैनब को घर में रखते तबतो कहाजासकता था कि मुहम्मद साहब ने ख़ुदाका हुक्म पूरा करने के लिये यह कर्म किया, लेकिन मुहम्मद साहब ने ज़ैनब को पहिले घर में डाला, जैसा कि मुहम्मद साहबके जीवन चरित्र और इन आयतों से विदित होता है, इस जगह पर स्पष्ट कहना पड़ता है कि ये सब आयतें, मुहम्मद साहब ने, उस बदनामी को जो उस घटना से सर्व साधारण कर रहेथे दूरकरने के लिये; स्वयं बनाईं, यदि ख़ुदाकी यह इच्छा होती कि लेपालकों की स्त्रियों से विवाह न होतो कर लियाजाये तो वह तौरैत में जिसको मुसलमानों के कथनानुसार ख़ुदाने पाहिले उतारा था,

स्त्री से विवाह करना बुरा नहीं"। इसके अतिरिक्त यदि मुहम्मद साहब उससे निकाह करते जो सारी बिरादरी में होता तो यह भी कहना कुछ उचित होता कि लेपालकों की स्त्रियों से विवाह करलेने के लिये ये आयतें उतरीं, परन्तु मुहम्मद साहब ने तो बिना निकाह ही घर में डाललिया, इससे निकाह किसी प्रकार भी धर्मानुकूल नहीं होसकता, क्योंकि शरियत के अनुसार जो विवाह होता है, प्रथम तो बहुतसे मनुष्यों के सामने परस्परकी स्वीकारी होतीहै और फिर काज़ी निकाह पढ़ाता है । अब यहां न तो परस्पर की स्वीकारी का कोई प्रमाण मिलता है और न निकाह ही पढ़ागया। यदि कहो कि निकाह खुदाने पढ़दिया, तो इसमें प्रमाण क्या? जिस समय हज़रत आयशा पर व्यभिचार का दोष लगा उस समय दोचार गवाह मांग लिये। वास्तव में व्यभिचार चोरी आदि ऐसे कर्म हैं जो छुपकरही किये जाते हैं, जिन के लिये चार साक्षियों की प्राप्ति बहुत ही दुस्तर है। परन्तु विवाह एक धार्मिक कर्म है जो

सदैव जनसमूह के सामने होता है, परन्तु दोनों समयोंपर नितान्त नियम विरुद्ध कार्यवाही का होना अर्थात् व्यभिचारके लिये चार गवाहों को मांगना और निकाह को बिना गवाहों के ठीक समझना, पक्षपातियों के अतिरिक्त और लोग कैसे उचित समझ सकते हैं ?

यह कुरान मुहम्मद साहबका कानून है, और उसकी सारीही बातोंसे वह स्वयं पृथक् है। यदि खुदा का नियम होता तो कोई भी मनुष्य पृथक् नहीं समझा जा सकता। यह तो मुसलमान लोग भी मानेंगे कि मुहम्मद साहब के पास इलहाम लाते हुए फरिश्तोंको किसी ने नहीं देखा किन्तु इलहाम प्रायः रात्रि को आया करते थे और स्वप्न की अवस्था में आते थे। जब कि सारी ही कुरान की आज्ञाओं से मुहम्मद साहब पृथक् हैं तो कौन बुद्धिमान् मान सकता है, कि मुहम्मद साहब क्यों कुरान की आज्ञाओं से पृथक् समझे गये ! प्रमाण यह है कि प्रथम तो सारे ही मुसलमानों के लिये चार स्त्रियें विदित हुईं, परन्तु

हज़रत इस आज्ञासे पृथक माने गये। दूसरे-सारे ही लोगों के बिना निकाहके किसी स्त्री को घर में डाललेना विदित नहीं, परन्तु मुहम्मद साहबने शरई निकाह के विनाहीज़ैनब को घरमें डाल लिया तीसरे-और लोगों की स्त्रियों को तलाक उपरान्त विवाह करलेना अधिकार है, परन्तु मुहम्मद साहब की स्त्रियों को यह अधिकार नहीं था, किन्तु मुहम्मदसाहब की स्त्रियों से निकाह करना कुरान में विदित नहीं बतलाया। हमारे बहुत से मुसलमान भाई कहदेंगे कि हज़रतकी स्त्रियों से औरोंको निकाह करना इसलिये उचित नहीं कि वे सारे मुसलमानों की मा हैं, कारण यह कि मुहम्मद साहब रसूल हैं। और माके साथ किसी प्रकार भी निकाह उचित नहीं। परन्तु उनका यह उत्तर ठीक नहीं, क्योंकि यदि हम मुहम्मदसाहब को पैग़म्बर होने के कारण सारे मुसलमानों और मुसलमानियों का पिता समझलें तो उन की स्त्रियों को मा मानना पड़ेगा।

ऐसी अवस्था में कुल मुसलमानियें कन्या का सम्बन्ध रक्खेंगी, क्योंकि पैग़म्बर होनेके कारण

हज़रत उनके बापहैं। ऐसी अवस्थामें वे किसी से भी विवाह नहीं कर सकते। परन्तु कैसा अन्यायहै कि वे अपनी स्त्रियोंको दूसरेकीस्त्री बनानेकी लज्जा से बचने के लिये अपने को मुसलमानों का बाप समझें, परन्तु मुसलमानियें बाप न समझें, क्या मुसलमानियें हज़रतके संप्रदायमें नहींहैं! यदि हैं-तो जिसप्रकार मुसलमान हज़रतके बेटे हैं तो मुसलमानियें हज़रतकी बेटियांहैं। यदि माके साथ निकाह नाजायज़है तो बेटी केसाथ कहां जायज़-है! परन्तु हज़रत तो कुरानकी प्रत्येक आज्ञा से पृथक् है, उनके लिये कोई नियमही नहीं ? वह जो कुछ करलें उसके वास्ते आयतें तैयार मिलेंगी। शोक इस बातका है कि इतनी मोटीबात को भी मुसलमान लोग नहीं समझ पाते कि जबसारे मुसलमान हज़रतके बेटे हैं तो मुसलमानियां बेटियां क्यों नहीं हुईं ? फिर हज़रतका किस से निकाह कराना किसप्रकार उचितहै। इसके अति-रिक्त और भी प्रमाण मिलते हैं कि कुरान में जो कुछ लिखा गया है। वह सब हज़रत की इच्छा के अनुकूल लिखा गया है। एक दिन हज़रतकी

स्त्रियों ने कहा कि खुदा जो कुछ आज्ञा देता है वह मनुष्योंको देता है स्त्रियोंके लिये कोई आज्ञा नहीं। इसीसबब हज़रत ने ये आयतें उतारीं अर्थात् रचीं देखो कुरान सिपारः २२ सूरतुल एहज़ाब।

'या निसा अन्नबीये मैंयाते मिन् कुन्ना बे फ़ाहिशेतिम् मुबैनेतिं युज अफ़ल्हल् अज़ाबो देफ़ैन वकान ज़ालेक अल्लाहे यसीर'।

अर्थात्—हे बीबियो नबी की। जोकोई आवे तुममें से साथ बेहयाई ज़ाहिरके दोचन्द किया जावेगा वास्ते उसके अज़ाब दो बराबर और है ये ऊपर अल्ला के आसान।

"वमैं यक़नुत मिन् कुन्ना लिल्लाहे व रसूलेही वत अमल सालेहन् नोतेहा अज्रहा मर्रतैने व आतद्नलाहा रिज़्क़न् करीम"॥

अर्थात् और जो कोई फ़रमाबरदारी करे तुम में से वास्ते अल्लाः के और रसूल उसके के और अमल करे अच्छे, देवेंगे हम उसको सवाब उसका दोबार और तैयार किया वास्ते उसके हमने रिज़्क़

अच्छा। पाठक गण! इसी प्रकार बहुतसी आयतें इस प्रकार की आगे लिखी हैं जिन में स्त्रियों को और विशेषकर नबी की स्त्रियों को उपदेश किया है। इन सारी आयतों के देखने से पता मिलता है कि जिस समय मुहम्मद साहब को कोई आवश्यकता हुई झट उन्होंने खुदा के नाम से आयत उतारली। बहुत से मुसल्मान भाई हम से इसका प्रमाण मांगेंगे कि मुहम्मद साहब से स्त्रियों ने कब प्रश्न किया और मुहम्मद साहब ने ये आयतें उतार लीं। इस के उत्तर में हम कहेंगे कि देखो क़ुरान पृष्ठ ५२२ हाशिया छापाखाना नवल किशोरी। "हज़रत की एक स्त्रीने कहाथा कि क़ुरान में सब ज़िक्र है मर्दों का, औरतों का कहीं नहीं। उस पर यह आयत उतरी-नेक औरतों की खातिर को नहीं तो जो हुक्म मरदों को कहा सो औरतों पर ले आये हरबार, जुदा कहने की हाजत नहीं। इस के अतिरिक्त प्रायः लोग मुहम्मद साहब के घर आते और देर तक बात करते रहते जिससे हज़रत को बहुत कष्ट होता। और वह उनको घरसे बाहर निकालना चाहते, परन्तु

संकोच से और असन्तुष्ट हो जाने के भय से कुछ नहीं कहते थे कि ऐसा न हो कि संप्रदाय में मत भेद हो जावे लोगों को अधिक देर तक बैठने से रोकने के लिये, मुहम्मद साहब ने ये आयतें उतारीं अर्थात् गढ़ीं—देखो .क़ुरान सिपारह २२ सूरतुल एहज़ाब—

या अइ योहल्लज़ीन आमनू लातदखुलू बयूतन्नबीये इल्ला एँ योज़न लकुम इलाता अमिन् वलाकिन् इज़ादो ईतुम फ़दखलू फ़इज़ये इम तुम फ़न्तशेरू वलामुस्ता निसीना ले सदीस इन् ज़ाले कुम कान लकुम् अन्तो ज़ूरसुल्लाहे वला अन्तन् केहू अज़वा जेहू भिम्बादेही अबद इन्न जाले कुम कान इन्दल्लाहे अज़ीम क़ान योज़िन् नबीयाफ़यस्त सहा मिन्कुम् वल्लाहो ला यस्तहयी मिनल् हक्क़ वइज़ा स अल् तो मुहुन्न मताअन् फ़स अलूहू

नन बराअ हिजाब जालेकुम अतहरो ले कुम् वकुलूबे हिन्ना वका ।

अर्थात्—अय लोगों जो ईमान लाये हो मत दाखिल हो घरोंमें पैग़म्बरों के मगर यह अज़न दिया जावे वास्ते तुम्हारे तर्फ़ खाने के बइन्तज़ार करने वास्ते पकाने उसके वे लेकिन जब बुलाये जाओ तुम, पस दाखिल हो, पस जब खाचुकाहो बस मुतफ़र्रिक़ होजाव और मत बैठे-रहो जी लगा रहने वास्ते २ बातोंके। तहक़ीक़ यह काम है ईज़ा देना नबीको। बस शरमाता है तुमसे और अल्लाह नहीं शरमाता हक़बातसे । और जिस वक़्त मांगा चाहो उनसे कुछ असबाब, पस मांगलो उनसे पीछे परदेके से। यह बहुत पाक करने वाला है वास्ते दिलों तुम्हारेके और दिलों उनकेके और नहीं लायक़ वास्ते तुम्हारे कि ईज़ादो रसूल खुदा को और न यह कि निकाह करो बीबियों उसकी को पीछे उसके। कहदे तहक़ीक ये हैं नज़दीक अल्ला बड़ा गुनाह। प्रिय पाठक गण! उपरोक्त आयतों और मुहम्मदसाहब के घरेलू झगड़ों के प्रकरण

को देखने से आपको भले प्रकार विदित हो जावेगा कि कुरानशरीफ़ सारे का साराही मुहम्मदसाहब की उपयोगी बातों का संग्रह है। उसमें जहां कहीं खुदा की उपासना का थोड़ा बहुत प्रसंग आया है, वह इस बात के लिये कि लोग ये न कहें कि मुहम्मदसाहब ने सब कुछ अपने वास्ते गढ़ा है। जहां खुदा का हुक्म मानना कहा है, वहीं उसके रसूल मुहम्मद साहब का हुक्म मानना कहा है यह तो प्रत्येक मनुष्य जानता है कि कुरानशरीफ़ के अतिरिक्त मुसलमानलोग किसी दूसरी किताब को सत्य नहीं मानते, इसलिये खुदा के गौरव के स्थान में उसकी अत्यन्त निर्बलता प्रतीत होती है। मानो वह एक पुतला है जो मुहम्मद साहब के इशारों पर नाच रहा है। हम स्वयं आश्चर्य में हैं कि हमारे मुसलमान भाई नित्यप्रति पढ़ने पर भी इस बातपर कभी विचार नहीं करते कि जहां हज़रतकी बीबीने कहा खुदाने झट आयत नाज़िल करदी। जहां मुहम्मदसाहब लोगोंके घर बैठे रहनेसे अप्रसन्न हुए, झट आयतें उतरने लगीं। हमको इस बात पर अधिक वाद विवाद करने की

आवश्यकता नहीं है कि क़ुरानशरीफ़ मुहम्मद साहब की उपयोगी आज्ञाओं का संग्रह है जिसमें अरबके पोलिटिकल क़ानूनका संग्रह भी सम्मिलित है अथवा पुरानी घटनाएँ इसमें लिखी हैं। इसमें ईश्वरीय ज्ञान होने का कोई गुण नहीं है किन्तु एक इतिहास तो इसको कह सकते हैं। हमारे इस लेख से कोई यह न समझे कि .क़ुरानशरीफ़ में कोई बातभी अच्छी नहीं है किन्तु इसमें जितनी बातें अच्छी हैं वे नई नहीं हैं केवल पुरानी किताबों से ली हुई हैं। .क़ुरान में क़िस्से कहानियों का भण्डार तो बहुत ही है। इस के अतिरिक्त .क़ुरान में ऐसी बातें भी अधिकतासे पाई जाती हैं कि जो सारीकी सारी ही विद्या और बुद्धि के विरुद्ध हैं। सत्यासत्य के निर्णय के लिये विद्या और बुद्धिके अतिरिक्त और क्या होसकता है, अतः जो वाक्य विद्या और बुद्धि के विरुद्ध हो उस के असत्य होने में कोई सन्देह नहीं। और जिस वाक्य में झूंठ हो वह ईश्वरीय वाक्य कभी भी नहीं हो सकता। हमारे मुसलमान मित्र हम से प्रश्न करेंगे कि .क़ुरान में कौनसी बात विद्या

और बुद्धि के विरुद्ध है प्रथम तो यह कि .क़ुरान में आसमान के विषय में जो कुछ लिखा है वह विद्या और बुद्धि के कितना विरुद्ध है? एक स्थल पर तो .क़ुरान में आकाश को बुर्जों वाला लिखा है! देखो .क़ुरान सिपारह ३० सूरतअल बुरूज—

"वस्समाए्ज़ातिल् बुरूजे"

अर्थात्—क़सम है आसमान बुर्जों वाले की। दूसरी जगह आकाश को छत के समान कहा है। यथा—देखो .क़ुरान सिपारह १ सूरतुल बक़र

"अल्लज़ी जाअ़ल लकुमुल् अर्द फ़िरा शऊँ वस्समाअ बाअन् वअंजल मिनस्समाए् फ़खरुज़्वेही मिनस्समराते रिज़क़ल्ल कुम फ़लाते तज अलू लिल्लाहे अन्दादन् व अन्तुम तालमून"

अर्थात्—जिनके किया वास्ते तुम्हारे ज़मीन को बिछौना और आसमान को छत और उतारा आसमान से पानी, पस निकाला साथ उस के फ़लों से रिज़क़ वास्ते तुम्हारे, बस, मुक़र्रिर करो अल्लाह के बराबर तुम जानते हो।

तीसरी जगह आसमानको जालीदार बन-लायाहै, और कहीं आसमान को खाल उतारना लिखा है। देखो कुरान सिपारः ३० सूरत।

"वइअस्समउन् शक्कत"

अर्थात् और जिस वक्त आसमानकी खाल उतारी जावेगी। और कहीं पर आसमान का फटजाना लिखा है। देखो कुरान सिपारह ३० सूरतुल।

"वइज़स्समउन् फ़ितरत्"

अर्थात् जिस वक्त आसमान फटजावें। और कहीं पर आसमान का खोलना है। देखो कुरान सिपारह २९ सूरतुल।

"फ़इज़न्नजूमो तशातत्"

बस जिस वक्त कि तारे मिटाये जावेंगे। और "वइज़स्समारा फुरेजत" और जिस वक्त आसमान खोलाजावे। पाठक गण! कुरान में आकाशके विषय में भिन्न २ प्रकारसे बातें लिखी हैं, परन्तु आकाश क्या वस्तु है यह कहीं पर भी नहीं लिखा। जितने फ़िलासफ़र आजतक हुवे

हैं वे आकाशके होने से इन्कार करते हैं क्योंकि उसके अर्थ शून्य के हैं। अब यह प्रश्न उत्पन्न होताहै कि क्या आकाश कोई सजीव शरीर धारी वस्तु है? जिसकी खाल उतारी जावेगी, खालतो सजीवों के शरीर के ऊपर हुआ करती है। यदि कहो आकाश कोई सजीव चेतन वस्तुहै तो वह जालीदार और बहुत बुर्जों वाला कैसे हो सकताहै? क्योंकि ये तो सब निर्जीव वस्तुओं में होसकता है। यदि जीव रहित हैं तो उसकी खाल उतारने से क्या आशय? हमारे मुसलमान भाई कहेंगे कि तुम मनुष्यों की विद्याका परमेश्वर की विद्यासे मिलान करते हो इसका उत्तर यह है कि अभी तो यह बात साध्य कोटि में है कि कुरान ईश्वरीय पुस्तक है या नहीं! जब तक मुसलमान लोग कुरान को विद्या और बुद्धि पूर्वक, ईश्वरीय वाक्य सिद्ध न करदें तब तक उनके केवल कथनमात्रसे, कुरान ईश्वरीय वाक्य सिद्ध नहीं होगा अवतक जितने भी नियम ईश्वरीय ज्ञानके लिये नियत किये गये हैं, उनमें से कुरान में एक भी विद्यमान नहीं। हां कुरानमें प्रतिज्ञायें तो

बहुत की गई हैं परन्तु उनको सिद्ध करने के लिये कोई भी विद्या और बुद्धि पूर्वक हेतु वा युक्ति नहीं दी गई। हां सौगन्धें (क़समें) तो बहुत खाई हैं जो इसके मनुष्य कृत होने का दूसरा प्रमाण है। यदि क़ुरानी ख़ुदा सर्व शक्तिमान होता, तो प्रत्येक मनुष्य के चित्त में क़ुरान की विद्या का प्रवेश कर देता, परन्तु क़ुरानी ख़ुदा तो मुसलमानों को लड़ा कर अपना शासन जमाना चाहता है, या इधर उधर से ऋण लेकर दिन काट रहा है! उसमें अपने वाक्य को विद्या और बुद्धि के अनुसार सच्चा सिद्ध करने की शक्ति नहीं। यही कारण है कि अपनी बात को सच्ची सिद्ध करने के लिये सौगन्धें खाता है या मुसलमानों को भड़काकर, तलवार के द्वारा उसको सच्चा ठहरवाता है, भला ऐसे मनुष्य को जो अपने कथन को विद्या और बुद्धि से सिद्ध न करके, और न लोगों को कोई बुद्धि की बात बतावे, हां केवल कसमों से और तलवार से सच्चा सिद्ध करना चाहे, कोई बुद्धिमान् मनुष्य उसको ईश्वर कहने को तैयार नहीं होगा। ईश्वर में वह शक्ति है कि बिना खाये वा कठोरता किये ही अपने वाक्य की

सत्यता प्रत्येकमें स्थिर कर सकता है। जैसे कि वेदोंके प्रकाशक परमात्माने अपना ज्ञान संसारी मनुष्यों की आत्माओं में प्रकाशित किया। अब भी जो लोग उसकी खोज करते हैं वे उस की विद्या के विषय की गम्भीरता को जान लेते हैं उसको ईश्वरीय ज्ञान मानने केलिये तैयार होजाते हैं। कारण इसका यह है कि वेदों की शिक्षा को प्रकाशित हुए एक अरब सत्तानवें करोड़ वर्ष बीत जाने परभी, आज तक उसमें घटाने बढ़ाने की आवश्यकता नहीं हुई। परन्तु मनुष्य कृत पुस्तकें तौरैत, जबूर, इञ्जील और कुरान ३४सौ सालमें, इस्लाम के कथनानुसार, तीन तो कलाम मंसूख होगये और कुरान की भी बहुत सी आयतें जैसे पूर्व तो १० काफिरों से एक मुसलमान का मुकाबला कराया, फिर उसको मंसूख करके दोके मुकाबले में एकको ला जमाया मंसूख होगई। मानो पहिली आज्ञा तोड़ दी गई। अब इस अपूर्ण कथन को, जिसमें न तो ठीक २ जीवात्माके गुण का पता मिलता है और न ईश्वरके गुण कर्म स्वभावही भले प्रकार बताये गये हैं, और नहीं यह

बताया कि मनुष्य किस प्रकार मुक्ति प्राप्त कर सकताहै, और सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करने का कोई उपाय बताया गया है। ऐसी पुस्तक बिनासोचे समझे कैसे ईश्वरीय पुस्तक मानली जावे? कुरान की आज्ञाओंमें एक दूसरेका खण्डन पाया जाता है पहिलेतो यह कहा कि जिधर चाहो उधरही मुंह करके नमाज पढ़ो, फिर उसका खण्डन कर के यह कि काबे की ओर को पढ़ो अन्त में यह कहना पड़ताहै कि जिस गुण का होना ईश्वरीय ज्ञान में आवश्यक है, वह कुरानके भीतर नहीं पाया जाता। हम आश्चर्य में हैं कि हमारे मुसलमान मित्र बिनासोचे विचारे क्यों इसको इलहामी किताब मान बैठे?

परन्तु जब उस समय को याद किया जाता है जब इस कुरान का प्रचार अरब देशमें हुआ तो चित्त को कुछ शान्ति होती है कि ऐसे लोगों में किसी किताब को इलहामी सिद्ध करदेना कौनसी बड़ी बातहै। क्योंकि आज कल के चलते पुरजे भी मूर्खों में अपनी प्रतिष्ठा जमाही लेते हैं। जिनको निश्चय नहीं वे मिरज़ा गुलाम

अहमद कादयानी को देखलें कि इस प्रकाश के समयभी, बहुतसी बातें झूटी होने परभी, मुसलमानोंके पैगम्बर बनही बैठे थे। जिस प्रकार मुहम्मद साहब की पैगम्बरी के कारण उनके साहायक ऊमर और अली आदिहुए, उसी प्रकार मिरजा जी के भी सहायक मौलवी नूरुद्दीन आदि होगये जो मिरजाजी के मरण के उपरान्त गद्दीके अधिकारी बनें। जब कि ऐसे प्रकाश के समय में भी मिरज़ा साहब इस्लामी पैग़म्बर बनगये तो उस अन्धेरे समय में और अरब जैसे मूर्ख देश में जहां उस समय विद्या के सूर्य्य के प्रकाश का चिन्ह तक नथा, मुहम्मदसाहब जैसे समयानुभवी और उच्च कुलोत्पन्न मनुष्यका जो अपने समय के सब से उत्तम ललित भाषीथे, पैग़म्बर होजाना कौनसी बड़ी बात है? जब मुसलमानोंका एक बड़ा समूह लूटमार के कारण मुसलमान होगया, तो अन्य देश बलात (जबरन) मुसलमान बनायेगये इसलाम तलवार का मज़हब है, उस में विद्या और बुद्धि का कुछ भी काम नहीं

विद्याएं पायी जाती हैं, फिर अरब वालों को मूर्ख समझाना कौनसी बुद्धिमानी है। परन्तु हमारे उन मित्रोंको ध्यान रखना चाहिये कि इससमय जो अरब में पुस्तकें पाई जाती हैं वे मुहम्मद साहब के उपरान्त दूसरी भाषाओं से अनुवाद होकर अरबीमें सम्मिलित हुई हैं। मुहम्मदसाहब से पूर्व अरब देश की बहुत ही बुरी अवस्था थी। लगभग सारे के सारे ही निवासी मूर्त्ति पूजक थे। और भी बहुत से मिथ्या विश्वास रखते थे, यहां तक कि मुहम्मद साहब के पिता ही स्वयं मूर्त्ति पूजक थे और मक्केके मन्दिरके पुजारीथे, और मक्का उस समय सारे देश की मूर्त्ति पूजा का अड्डा था। अन्ध विश्वास तो इतना फैला हुवा था कि जिनका प्रमाण कुरानके प्रत्येक पृष्ठ से मिलता है। जिन्न, भूत और फरिश्तोंके विषय में जो कुरानमें लिखा है, उस से समझा जासकता है कि उस समय अरब देश की क्या अवस्था थी।

देखो कुरान सिपारह २२ सूरते फातिर—

वाते वल अर्ज़ जाइलिल मलायकतेही रुसुलन उली अजनि ह तिम् मसना व सुलास व रुबाअ" ।

अर्थात् सब तारीफ हैं वास्ते अल्लाहके मैं पैदा करने वाला आसमान और जमीनों का करने वाला फरिस्तों को पैगाम लाने वाला, बाजू वाले दो दो तीन तीन और चार चार । इस के हाशिये पर अबदुल क़ादर साहब फ़रमाते हैं कि जिबराईल के छ सौ पर हैं । मानों क़ुरानी फ़रिश्ते परन्द हैं, मनुष्य नहीं । परन्तु आश्चर्य इस बात का है कि छः सौ पर वाला जिबराईल फ़रिश्ता मुसलमानों के सामने मुहम्मदसाहब के पास बही लाता रहा, परन्तु किसी मुसलमानने उसको न देखा, मानो सारेके सारेही मुसलमान ऐसीमोटी वस्तुको नहीं देख सके, तो आत्माणमन और जीव प्रकृति के अनादित्य जैसे सूक्ष्म विषयको कैसेजान सकते हैं, फरिश्तों के पक्षी होनेका खण्डन इस बातसे होता कि जंग उहुदमें जो क़ुरानी ख़ुदा ने मुहम्मद साहब को फ़रिश्तों कीफ़ौज सहायताके लिये भेजी थी, उसमें फरिश्ते घोड़ो पर सवार थे।

परिन्दों को सवारी की कोई आवश्यकता नहीं होती, इस लिये या तो फ़रिश्तों के पर होना असत्य ठहरते हैं, या उनका घोड़ों की सवारी पर आना सिद्ध नहीं होता। सब से अधिक शोक की बात यह है कि क़ुरानी ख़ुदा ने क़ुरान के इलहामी होने में कोई ऐसी युक्ति नहीं दी कि जिससे क़ुरान का इलहामी होना सिद्ध हो। प्रायः यह कहा है कि यदि तुम सच्चे हो तो ऐसी सूरत बना लाओ। अब विचार करने से यह विदित नहीं होता कि क़ुरानी ख़ुदा का किस सूरत से आशय है? कौन सी सूरत के अनुसार फ़साहत चाहता है? या उसके विद्या सम्बन्धी विषय की तुलना चाहता है। क्योंकि क़ुरान में केवल ऐसा लिखा है—देखो क़ुरान पारः २ सूरत बक़र—

"वइन् कुन्तुम् फ़ी रैबिम्मिम न ज़्ज़ल्ना अला अब्दिना फ़तू बिसूरतिम्मिमिस्लेही वद्उ शुहदअकुम् मिन्दू निल्लाहे इन् कुन्तुम् स्वादिक़ीन्"

अर्थात् और अगर हो तुम बीच शकके उस चीज़

से कि उतारा हमने ऊपर बन्दे के अपने, पस ले आओ एक सूरत मानिन्द उसकी के और पुकारो शाहिदों अपनों को वास्ते अल्लाह के अगर हो तुम सच्चे। इस आयत से इस बात का कुछ पता नहीं मिलता कि क़ुरानी ख़ुदा किस सूरत की तुलना की आयत वा सूरत बनवाना चाहता है। और किस गुण की तुलना कराना चाहता है। यदि इस बात को खोल दिया होता तो आज तक सैकड़ों किताबें क़ुरान से अच्छा दिखलाई जातीं परन्तु यह वाक्य इस प्रकार का है। जिस से कोई परिणाम नहीं निकलता कि यदि मुसल्मान कहें कि क़ुरान के समान फ़साहत (लालित्य) किसी किताब में नहीं है तो कालिदास और शेक्सपियर के नाटक और नावल, और वारिस शाह का हीर रांझा पढ़ना चाहिये। तुलसीदास जी की रामायण जितनी फ़सीह है उसके समान तो क़ुरान में फसाहत नहीं दीखती। परन्तु कठिनता तो यह है कि हमारे मुसलमान मित्र संस्कृत विद्या से अनभिज्ञ हैं, नहीं तो क़ुरान से अधिक फ़सीह पुस्तकें संस्कृत में उनको दीख पड़ती। यदि

कहें कि अरबी भाषामें नहीं तो फ़ैज़ी का बेनुक़त क़ुरानदेखें, परन्तु केवल अरबी भाषाकी फ़साहत इलहामी होने का हेतु नहीं । विदित होता है कि अरबी भाषा के क़ुरान की फसाहत का दावा केवल अरब वालों के लिये ही किया गया है नहीं तो संसारमें इससे अधिक फसीह पुस्तकें विद्यमान हैं। अगर क़ुरान खुदा का बनाया हुआ होता तो अरब वालों के ही लिये नहीं कहता कि ऐसी सूरत बना लाओ, किन्तु दूसरे देश वालियों से भी तुलना करने के लिये कहता। यदि यह कहा जावे कि "मज़मून की खूबी"के विषय में परीक्षा करनेके लिये "दावा", किया गया है तो बहुत से लोग यह कहतेहैं कि यह दावा केवल मूरते फ़ालिहा के लिये है, क्योंकि ऐसा मजमून दुनियाँकी किसी किताब में नही है ।

परन्तु उनका यह कहना ठीक नहीं क्योंकि प्रथम तो जो कुछ कथन है क़ुरानके कर्ता का नहीं किन्तु यह सारा का सारा प्रकरण यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के मन्त्रों का आशय रूप है जो ईशोपनिषद् के नाम से प्रसिद्ध है, जिसका उर्दू

अनुवाद भी छप चुका है यदि आप लोग पढ़ें तो पता लग जायगा कि कुरान ईश्वर के विषय में कुछ भी नहीं जानता, यदि वेदोंमें यह विषय न होता तो कुरान इतने से भी कोरा रहता ।

वेद,कुरान,इञ्जील, ज़बूर और तौरेत से सिद्ध हो चुका है, इस लिये वह मजमून जो पहिले से ही वेद में विद्यमान हो, कुरानके कर्त्ता का नहीं हो सकता, अतः वह इलहामी भी नहीं हो सकता ।

कुरान में कोई ऐसा विषय नहीं जो कुरानसे पूर्व विद्यमान नहीं इसको छोड़ कर कि "मुहम्मद साहब खुदाके रसूल हैं और इनकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिये"। और स्त्रियोंकी कलह और झंझट को छोड़कर सब कुछ किस्से कहानी तौरेत, जुबूर और इंजीलमें विद्यमानहैं वहीं से सबके सब लिये गये हैं, परन्तु तौरेत जुबूर और कुरान के किस्सोंमें परस्पर बहुत विरोध हैं। हम बड़े आश्चर्य में हैं कि खुदा ने जो कुछ तौरेत में कहा है वह सत्य है वा कुरान का कहा सत्यहै

किताबें कुरान के आनेसे मंसूख होगई तो उनकी तुलना कुरान से किस प्रकार हो सकती है ?

कुरान प्रचलित नियम है, और तौरेत आदि मन्सूख हुए नियम हैं।

परन्तु प्रश्न तो यह है कि कानून मंसूख हो सकते हैं वा ऐतिहासिक घटनायें भी मंसूख होजाया करती हैं। इस बात को सब मानते हैं कि प्रत्येक मनुष्य अपनी आज्ञा को बदल सकता है परन्तु किसी घटना के विषयमें जिसमें उसने साक्षी दी हो, इन्कार नहीं कर सकता जब तक वह यह सिद्ध न करदे कि साक्षी देते समय पागल था। इससे यह सिद्ध होता है कि या तो वह झूठा है उसने पहले सत्य लिखवाया था, परन्तु अब उसने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये दूसरा झूठा बयान लिखवाया है।

परन्तु नये बयान से पिछला बयान झूठा सिद्ध नहीं हो सकता। यदि हमारे मुसलमान मित्र नेक भी न्याय पर कटिबद्ध हो जावें तो दुनियांसे वह अन्धकार, जो असत्य विचारोंसे फैल रहा है सारे

व्यस्त और अस्थायी जातियों को इसलाम से कुछ लाभ पहुंचा हो, परन्तु और देशोंके लिये तो अत्यन्त ही हानिकारक हुआ है। और कुछ नहीं तो झगड़ा तो होता ही रहेगा। परन्तु मुसलमानों को यह तो विचारना चाहिये कि कुरान खुदाको एकदेशी बताता है, और एक देशी ईश्वर हो नहीं सकता। कुरान छः दिन में सृष्टि की उत्पत्ति बतलाता है और सातवें दिन खुदा को अर्शपर बिठाता है। कहीं पर 'कुन' कहनेसे दुनियां की उत्पत्ति बताता है। चाहे सर्व साधारण इसको एक तुच्छ बात समझें विद्वान लोग इसको विद्या के विरुद्ध समझते हैं, और खुदाको भी सातवें दिन विश्रामकी आवश्यकता होने से विकारी सिद्ध करादिया।

इसके अतिरिक्त कुरान ने यह नहीं दिखलाया कि उन छः दिनोंमें प्रथम दिन क्या बनाया! यदि कहो ये बातें तौरेत में आचुकी हैं। यह हिस्सा वहींसे लेलेना चाहिये। तो तौरेतमें अर्श पर चढ़ने की चर्चा नहीं है, और कुरान में है। ये बात कोई खुदाकी आज्ञा नहीं जो कि मन्सूख होगई हो किन्तु यह तो एक घटना का

वर्णन है इसमें विरोध होना दोनों में से एक को झूठा सिद्ध करता है । दूसरे इञ्जील वालों का सब्त (विश्राम का दिन) रविवार है, परन्तु .कुरान के मानने वाले विश्राम का दिन शुक्र (जुमा) ठहराते हैं। अब प्रश्न यह है कि दोनों में से ठीक २ विश्राम का दिन कौनसा है ? अन्ततः प्रत्येक घटनायें, जो .कुरान ने पुरानी किताबों से ली हैं, कुछ न कुछ अन्तर अवश्य है, जिस से सिद्ध होता है कि .कुरान के कर्त्ता ने जो पुराने क़िस्से सुने थे वे सब लिख दिये. और अपनी योग्यता जतलाने को कुछ बातों में भेद भी कर दिया परन्तु यह न सोचा कि दो विरुद्ध बातें सत्य नहीं हो सकतीं, प्रत्युत दोस्सनेव सत्य होसकती हैं कि जब उसके साथी एकसाही वर्णन करें ।

जहांतक खोज कीगई वहांतक यही सिद्ध हुआ कि न तो कुरानकी आवश्यकता ही प्रतीत हुई, और न उस में इलहामी होने के गुण ही पाये जाते हैं । केवल मुसलमान भाइयोंने पहिले तो तलवार और लालच से स्वीकार किया था, क्योंकि मुहम्मद साहब के जीवन से, और उस

लूट मारकी बांट के झगड़ों के देखने से, जो मुह-म्मद साहब के समयमें हुए, इस बातका पूरा पता मिलता है कि उस समय जितने लोग लूट मार के वास्ते मुसलमान हुए, उसका दशवां भाग भी तो धर्म के तत्त्व को जानकर नहीं हुए।

अब बहुत काल तक मुसलमानी मतमें रहने से, हमारे मुसलमान भाइयों को ऐसा पक्षपातने जकड़ लिया है कि .कुरान और पैग़म्बरों की सिद्धि के लिये .खुदा तक पर दोषारोपण करने को तैयार हैं। यहां तक कि .कुरान में जो .कुरान के कर्त्ता ने हज़ारों क़समें खाई हैं और .कुरान की सच्चाई को सिद्ध करनेका यत्न किया है। उन क़समोंके खाने काभी दोष परमेश्वरके पवित्र नाम पर लगा दिया। और यह नहीं सोचा कि जिस .खुदाने सूर्यकी उत्पत्ति और उसके प्रकाश का ज्ञान बिना किसी क़सम खाये करदिया, जिस ने मृत्यु का भय प्रत्येक प्राणी के चित्त में उत्पन्न करके उनके अभिमानको तोड़ दिया, जिस की शक्ति के आधीन रहकर प्रत्येक परमाणु अपना २ कार्य कर रहा है, ऐसे सर्व शक्तिमान् को अपने

कथन की सत्यता के लिये क़सम खाने की आव-श्यकता होती, अपने कथन की सत्यता को संसारी मनुष्यों में न जमा सकता। उसको मुसलमानों को लड़ाकर अपना काम चलाना पड़ा।। सर्व स्वामी को ऋण लेने की आवश्यकता बतलाने वाला क्या बुद्धिमान् हो सकता है? .खुदा पर "मक्र" का दोष लगाना। यहां तक कि वह कौन से दोष हैं जो .कुरान ने .खुदा पर न लगाये। इसलिये मुसलमान मित्रों यदि सचमुच एक .खुदा की उपासना का विचार रखते हो, यह मुख्य उद्देश्य है कि वे मनुष्य पूरा और मनुष्यघात के भण्डार से हाथ उठाकर, विद्या और बुद्धि से जो मनुष्य के सुधार के लिये दी हैं सत्यधर्म को ग्रहण करें।

सद्धर्म का सम्बन्ध, केवल मनुष्यों की आत्मा-हृदय और ईश्वर से है उस में किसी दूसरे मनुष्य की सहायता की आवश्यकता नहीं। न उस में किसी सांसारिक वस्तु की आवश्यकता है हज्ज आदि की जितनी बात हैं वे सब मनुष्यों के बनाये ढकोसले हैं ईश्वर सब जगह और सब ओर विद्यमान है। जहां सच्चे जी से उसकी उपासना

होगी वहीं कृत कृत्यता होगी। झूंटे दिलसे पैग-म्बरों को मानकर काबेकीओर बैठकर नमाज पढ़ने से कोई लाभ न होगा यदि ईश्वर की सृष्टि के साथ सद्‌व्यवहार किया जावे और उस के दिल को हाथमें लिया जावे तोउससे जितना पुण्यहोता है वह जहाद के करनेसे, जिससे संसार नष्ट होता है, लाख जगह अच्छा है। जब कि खुदानेही उन के दिल पर मुहर करदी हो तो आपके कह देनेसे और जहाद के करने से वे किस प्रकार धर्मात्मा बनसकते हैं। क़ुरान के अनुसार मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र नहीं है और जो कर्म करने में स्वतन्त्र नहीं। वह किस प्रकार पुण्य और पाप का भागी हो सकता है। देखो क़ुरान सिपारह १ सूरतुल बक़र।

"इन्नल्लजीन कफ़रूसवाऊन् अलैहिम अअन्ज़र तहुम् अम् लम् तुम ज़िर हुम् ल योमिनून"

अर्थात्—तहक़ीक़ जो लोग कि काफ़िर हुए बराबर है ऊपर उनके क्या डराया तूने उनको

"ख़त मल्लाहो क़ुलूबे हिम् वअला समेआहिम व अला अब्स्वारेहिम् गिशावः व लहुम् अज़ाबुन् अज़ीम।"

अर्थात् मुहर की अल्लाह ने ऊपर दिलों उनके के और ऊपर कानों उनके और ऊपर आंखों उन के के परदह है, और वास्ते उनके अज़ाब है बड़ा हे मुसलमानो! नेक विचारो कि जिनको ख़ुदाने काफ़िर बनाया और उनके दिलपर ख़ुदाने मुहर करदी, अब वो किस प्रकार कुफ़्र को छोड़ सकता है? क्योंकि उनका तो अपने दिलपर कोई अधिकार ही नहीं जैसा ख़ुदा ने बना दिया है वैसे बन गये। यदि वे स्वतन्त्र होकर कुफ़्र करते तो किसी प्रकार दोषी भी हो सकते थे, परन्तु ख़ुदा ने उन को काफ़िर बनाया, स्वयं ही मुहर भी लगा दी, स्वयं ही उनके मारने की आज्ञा मुसलमानों को दे दी! क्या कोई न्याय प्रिय इसको ख़ुदा का कलाम मान सकता है? कभी नहीं। ईश्वर ऐसा अन्यायी नहीं कि स्वयं ही मनुष्य को कुकर्म करने के लिये मनुष्य के हृदय को बुरा बनादे और स्वयं ही दण्ड दे। आज कल

के अनुसार तो उन्हें .खुदा ने बनाया है। देखो कुरानी खुदा लोगों से ठट्ठा भी करता है। देखो .कुरान सिपारः १ सूरतुल बकर—

अल्लाः ईसमान् लअसम व मद्दाहम मन अलनिसारहम यई समून

अर्थात्—अल्लाः ठट्ठा करता है उनको और खैंचता है उनको बीच सरकशी उनकी के। प्रिय मित्र गण ! .कुरान के उपरोक्त लेख से आपको विदित होगया होगा कि .कुरान ऐसे मनुष्य का कथन है कि जो ठट्ठा करताहै, मक्र करता है, ऋण मांगताहै, कसमें खाताहै, प्रतिज्ञा करता है, मुसलमानों को लड़ाकर लाभ उठाता है और पशु पक्षी आदि और मनुष्योंको मार डालने की आज्ञा देता है। ऐसे को हमारे मुसलमान भाई खुदा समझें तो उनकी इच्छाहै मृत्यु सर पर सवारहै, संसार की सारी वस्तु अनित्य हैं केवल धर्म ही काम आने वाला है यदि हम अपनी अज्ञानतासे इस धर्म पथसे भटक गये तो हमसे अधिक अभागा कौन होगा ? उठो प्यारे मुसलमान भाइयो ! सोचो, विचारो, विद्या और बुद्धि से सत्यताकी खोज करो। परमात्मा

के नित्य नियम की जांच करो, उनके अनुकूल चलने के लिये संसारी रुकावटों का भय मत करो। सत्यता परमात्माको प्यारी है। दयालु उसका नाम है। धर्म और सत्यता मनुष्यकी उन्नति का कारण है। धर्म से मनुष्यों को यदि हानि पहुंचे तो वह धर्म मनुष्यका बनाया हुआ है।

ईश्वर की आज्ञा वही है जिसमें सारे प्राणियों पर दया हो। दूसरोंको दुःख देकर स्वयं अपना पालन करना मनुष्यता से गिराने वाला कर्म है। ईश्वर सर्व व्यापक और सर्वान्तर्यामी है, उस को सभा में न साक्षियों की आवश्यकता है न वही खाते की, किन्तु सारा भेद स्वयं ही जानता है। इसलिये उसके कामों में किसी मनुष्य को या फरिश्ते को सम्मिलित करना उचित नहीं है वह अपनी शक्ति और स्वभाव से न्यायकर्ता और दयालु है। उसके कार्य में हस्तक्षेप करना पाप है। न वह क्रूर है। न वह क्रोधी है किन्तु न्यायमूर्त्ति है। उसके आश्रय से मनुष्य अपने अभीष्ट को सिद्ध कर सकता है। किसी संसारी मनुष्य को उद्धारक बनना ईश्वर के न्याय का नाश करना है जो असम्भव है।

तर्क इस्लाम =)॥ यवनमतादर्श १) ईसाई विद्वानों से प्रश्न)। भौंदूजाट और पादरी साहिबका मुवाहसा ≡) ईसाई मत परीक्षा)। स्वर्ग में सबजेक्ट कुमेटी -)॥ स्वर्ग मे महा सभा।) भारतीय शिष्य ईसा =)॥ जीवन शिक्षा ॥) नीति-शतक।) मुक्ती और पुनरावृत्ति -)। विचित्रब्रह्मचारी)॥। सांख्यदर्शन ॥।) स्वामी वृजानन्दजी का जीवन-चरित्र -)॥ वैदिक विवाहादर्श १) ध्यानयोग प्रकाश १।) न्यायदर्शन भाषानुवाद १।) वैशेषिक दर्शन भाषानुवाद वैदिक फिलासफी का (पुस्तक) यह महर्षि कणाद रचित ग्रन्थ है। संस्कृत से अनभिज्ञ पुरुष भी इसको पढ़कर मालूम कर सकते हैं कि वैदिक और पश्चिमीय फिलासफी में कितना अधिक अन्तर है और कौनसी उत्तम है मूल्य १। रु०।

योगीराज कृष्णका जीवनचरित्र ॥।) श्रीशिवाजी महाराज का जीवन चरित्र ॥) इन दोनों पुस्तकोंके लेखक देशभक्त श्री ला० लाजपतरायजी हैं अवश्य पढ़िये। दृष्टान्त समुच्चय मूल्य १=) इस पुस्तक में प्रत्येक तरह के दृष्टान्त हैं जोकि व्याख्यान तथा कथाओंमें कहेजाते हैं। हकीकतरायधर्मी =)

शुद्धबालमनुस्मृति।)॥ आर्य्यबालकों के योग्य है

बाल सत्यार्थप्रकाश =) यहपुस्तक बच्चों के लिये अमृत है प्रत्येक ग्रहस्थीके लिये खरीदकर अपने घरमें रखना चाहिये

हिन्दुओं की छाती पे ज़हरीली छुरी -) चंचलकुमारी मूल्य -)॥

अनुरागरत्न श्री पं० नाथूराम शंकरशर्मा कृत १) स्त्री ज्ञानगजरा तीनों भाग =)॥ तेजसिंह शतक

वां ।।) भजन पचासा प्र० भाग -) द्वितीयभाग =) स्त्री ज्ञान प्रकाश =)।। द्वितीय भाग ≡) तृतीय ।)।। नगर कीर्तन पाठक रामस्वरूप कृत —)।। धर्म-बलिदान आल्हा में =] सजीवन बूटी ।] कर्णा मृत =] विधवाविलाप बारह मासा] । दुरवा-वस्था]।।। चमत्कार =) स्त्री भजन भण्डार ≡]।। स्त्री भजन माला -]।। शंकर सरोज ।] वासुदेव रत्नमाला ।]।। होली ब्रह्मज्ञान की =] बारह-खड़ी]।। आर्य गायन ।।] आर्यगायन दूसरा ।।=] वनिता विनोद =] स्त्री गीत सागर प्र०]।। द्वि०]।। मद्यदर्पण -] भजन चालीसा -] ज्ञान भजनावली प्र० =] द्वि =) तृ० =] च० =) आर्यगायन भजन पचीसी]।। भजन हृदय प्रकाश]।। भजन प्रकाश =) तृतीय =।। नूतन भजन प्रकाश ≡] जगत हितैषिणी ।] धीपप्रदीप =) मन आनन्द भजनावली =) प्रेमदुलारी विनय -) वेश्यालीला)।। नागरी भजन माला -) गजल-संग्रह)।। दादरा भजन वत्तीसी)।।। राम-गीताञ्जली हनुमान् चालीसा ≡) नूतन संगीत दर्पण =) वैदिक पताका —] आनन्दलहरी -)।। गो भक्ति प्रकाश)।। आनन्द मंगल =)

पं. शंकरदत्त शर्मा वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद.

महापुरुषों के जीवन चरित्र।

छत्रपति शिवाजी—इसके लेखक हैं स्वनामधन्य पञ्जाब केसरी लाला लाजपतराय जी मूल्य केवल ॥=)

योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र—इसके लेखक भी लालाजी ही हैं मूल्य ॥।=) मात्र है।

बैंजामिन फ्रैन्कलिन—अमेरिका के स्वतन्त्र कराने वाले व्यक्ति का जीवन भला किसे पढ़ने की इच्छा न होगी यह उन्हीं का जीवन है मू० ॥=)

भीष्म पितामह-राज्य ऋषि भीष्म पितामह का जीवन तथा सरशैय्या समय का उपदेश प्रत्येक पुरुष को अवश्य पढ़ना चाहिये मू० ।=)

तथा भील—भारत के प्रसिद्ध डाकू का जीवन मनोरंजक होगा स्वयं ही ... मू० १।)

हकीकतराय धर्मी—हिन्दू धर्म पर प्राणों को नौछावर करने वाले बालक हकीकतराय को कौन नहीं जानता उसी की करुणापूर्ण कहानी है ≈)

हनूमानजी—दोनों भाग पुस्तक स्त्री पुरुषों के पढ़ने योग्य है इसमें २ बड़े प्रमाणों से यह सिद्ध किया है कि हनुमान बन्दर नहीं थे मू० १॥)

महर्षि स्वामी दयानन्द—कई तसवीरों सहित मू० १॥)

हिम्मतसिंह—यह बीर राजपूत जवान जिसका यह जीवन है नवयुवकों का आदर्श है राष्ट्रीयता से भरा हुआ है। मू० ≈)

श्रीस्वामी विरजानन्दजी—श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के गुरु का जीवन-धर्मवीर पंडित लेखराम जी कृत अवश्य ही एक बार पढ़ियेगा॥ मू० ≈ रक्खा है।

मुहम्मदसाहब का जीवन मूल्य ॥=)